बचती !—अब रोना भी फजूल है।—है है, मुझे अब इस दुनियामें कुछ नहीं भाता। जरूर बाहरही कहीं निकल जाना चाहिये। आजही जाऊंगा, बस अभी जाऊंगा।—अगर किसीसे कहूंगा तो वह लोग जाने न देंगे। (उठकर कपड़ोंका पहिनना।) मगर गुलशनसे वादा किया है—

(एक नौकरका प्रवेश।)

नौकर—मीयां, को तो एक आदमी आया है, कहे है कि आपसे कुछ कहेको है।

सज्जाद—अः जा, जा, अब्बासके पास ले जा।

(नौकर गया, और तुरत लौट आया।)

नौकर—नहीं मीयां, ऊ कहे है कि बड़ो जरूरी बात है, आप को छोड़के और किसीसे नहीं कहेगा।

सज्जाद—अः क्या बला है, जा, बुला ला।

[नौकर गया।

(एक आदमीका प्रवेश।)

सज्जाद—क्या काम है, जल्दी बताइये।

आदमी—जनाब, मैं बड़ी दूरसे थका चला आता हूं। इतनी जल्दी कीजियेगा तो न कह सकूँगा।

स०—खैर कहिये, मगर जहांतक मुख्तसरमें मुमकिन हो, कहियेगा।

आ०—फिर वही जल्दी।

स०—खैर, क्या कहना है जल्दी कहिये।

आ०—फिर जल्दी।

स०—अच्छा, कहिये।

आ०—(एक अखबार निकालके) इस अखबारमें आपने कोई इश्तिहार छपवाया था ?

स०—हां, तो क्या उसका ?

आ०—किसी औरतके बारेमें ?

॥ श्री ॥

सज्जाद सुम्बुल ।
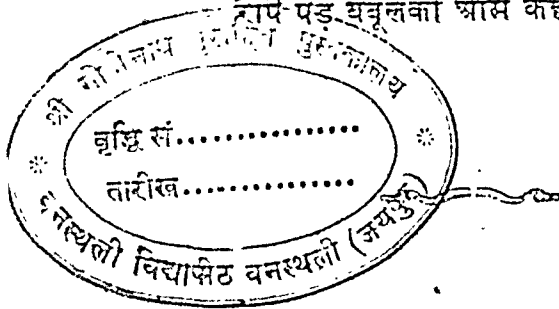
नाटक ।

"करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय ?
रोपै पेड़ बबूलको आम कहांसे होय ?"--
कबीर ।

पण्डित केशवराम भट्ट सम्पादित ।

कलकत्ता ।
८७ मुक्तारामबाबूस्ट्रीट, "भारतमित्र" यन्त्रालयमें
पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा मुद्रित और
प्रकाशित ।

सन् १९०४ ।

भूमिका।

शशत और सरोजिनीको हिन्दुस्थानी लिबास पहनाकर अपने देशवालोंकी सेवामें भेजता हूँ। देखा चाहिये इस देशमें इसका कितना आदर होता है।

केशवराम भट्ट।

यह नाटक ऐसे समयमें बना था कि जब हिन्दीके पाठक बहुत कम थे। तथापि दोबार छपा बिका। अब २१ सालसे फिर नहीं छपा था। इस समयके हिन्दी पाठक इसे जानते भी न थे। इससे रचयिता महाशयकी आज्ञासे फिर छापा जाता है। अबके आशा है कि बहुत लोग इसे पढ़ेंगे और इसकी उत्तमताको जानेंगे।

भारतमित्र सम्पादक।

अगष्ट १९०४।

नाटकके पात्र ।

पुरुष ।

अम्बाग … … …	एक जवान लड़का जो लड़कपनसे शमशेरबहादुरके यहां पला है ।
सज्जादहुसैन … … …	जमीन्दार ।
शमशेरबहादुर … … …	जमीन्दार ।
कालीप्रसाद … … …	सज्जादका दीवान ।
हेमनलाल … … …	शमशेरबहादुरका मुख्तार ।
नरसिंह … … …	सज्जादका मित्र ।
हैदर … … …	सज्जादका मित्र ।
हेमचन्द्र चक्रवर्त्ती … …	सज्जादका मित्र (वैज्ञानिक)
हुसैनी … … …	सज्जादका नौकर (लड़का)
घसीटा … … …	एक बदमाश ।
फेकू … … …	घसीटाका साथी (चोर)

नौकर, कनिष्टबल, गोरे, वगैरह ।

स्त्रियां ।

बुलबुल … … …	एक जवान लड़की जो सज्जादके यहां लड़कपनसे पली है ।
गुलशन … … …	सज्जादकी बहन ।
महम्मूदा … … …	सज्जादकी सौतेली मा ।
नसीबन … … …	शमशेरबहादुरकी बीबी ।
हलीमा … … …	शमशेरबहादुरकी रांड़ भावज ।
कामिनी … … …	शमशेरबहादुरकी कुटनी ।

दाई आदि ।

पहला अंक।

पहली झांकी।
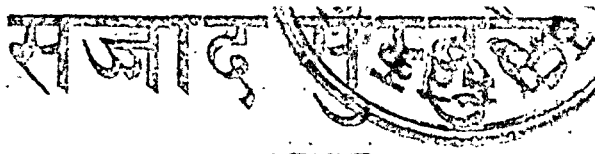
पटना, बाकरगञ्ज, सज्जादका डेरा।

सज्जाद मेज पर चिट्ठी लिख रहा है।

सज्जाद—(चिट्ठी लिखकर) बड़ी उजगतसे खत लिखा है। ज़रा पढ़ तो जाऊं।

(चिट्ठीका पढ़ना।)

बांकीपुर,
४थी मार्च १८७४।

हमारी प्यारी सुम्बुल,

तुम लोगोंकी खैरो आफियत सुनके बहुत खुश हुआ। मैं भी यहां खुश हूँ। आइन्दा सनीचरको अञ्जुमन "सायण्टिफिक एसोसीएशन" मुनअकिद होगी। उसदिन बाबू हेमचन्द्र चक्रवर्ती, जो पटनेके आलिमोंमेंसे हैं, इस मजमूनका एक लेक्चर पढ़ेंगे कि "आदमी बन्दरकी औलाद हैं।" मुमकिन है कि उस दिन बड़ी बहस हो। क्योंकि मीर-मजलिस इस रायके बिलकुल बरखिलाफ हैं। अभी तक मैंने अपनी राय कोई कायम नहीं की है। आखिर अञ्जुमनमें जो बात तय होगी वह भी तुम्हें मैं लिख भेजूँगा। इसके

आदवाली अञ्जुमनमें मुझीको कहीं जवाब-मजमून न लिखना पड़े।

गुलशन खुसूतीका क्या हाल है? अब लिखने पढ़नेमें जी लगाती है या नहीं?

वाहत जैसा कि हम लोग खयाल करते थे वैसा नहीं है। फिर सरकारकी तरफसे भी इसके दूर करनेके सामान होरहे हैं। लेकिन जितना खर्च होरहा है, उतना बन्दोबस्त नहीं होता। कारपरदाज लोग बीचहीमें खाजाते हैं। अपने गाओंमें अगर कोई भूखों मरता हो तो उसकी खबर लेना, खासकर औरतों और बच्चोंकी।

तुम्हारा खैरख्वाह

सज्जाद हुसैन।

नूकरेर इंकि,

मैं यहां हमीशा किसी न किसी काममें उलझा रहता हूँ। सब बातें हमीशा याद नहीं रहतीं। तुम लोगोंको जिन चीजोंकी जरूरत हुआ करे मुझे लिख भेजा करो। मैं उसी वक्त खरीदवाके भेज दिया करूंगा।

सज्जाद।

चिट्ठीका मोड़ना और बन्द करना।

यहां आओ।

(एक आदमीका प्रवेश।)

इस खतको डाकखानेमें लगा आओ।

आदमी—बहुत अच्छा।

[आदमी चिट्ठी लेकर गया।

सज्जाद—सुम्बुल फिलहकीकत बड़ी होशियार लड़की है कहां क्या होरहा है, और क्या नहीं बगैर मालूम किये उसे चैनही नहीं। छः सात बरसोंसे जो बराबर साथ है इस वजहसे सचमुच सगे भाई बहनोंकी मुहब्बत होगई है। हरचन्द वह हमारी कोई नहीं और गुलशन तो भला बहनही है; लेकिन न मालूम क्यों मैं दोनोंको

एकसा प्यार करता हूँ। हैं भी बेचारी दोनों बड़ी सीधी, लेकिन गुलशनमें अभी लड़कपनको सबबसे अल्‌हड़पन है; और सुम्बुल तो माशाअल्लाह होश गोश वाली और नेक लड़की है।

[हुसैनीका प्रवेश।]

हुसैनी मीयाँ, को तो दो ठो आदमी आपसे मुलाकात करको ड्योढ़ी पर खड़े हैं।

सज्जाद—जा, बुला ला।

[हुसैनीका प्रस्थान।]

[नरसिंह और हैदरका प्रवेश।]

सज्जाद—बन्दगी भई बन्दगी, आओ बैठो।

(सलाम बन्दगी करके सबका बैठना।)

सज्जाद—आज किधर?

नरसिंह—योंही तुम्हारी मुलाकातको आया हूँ।

हैदर—भ'ई नाच देखने चलोगे? हम और नरसिंह तो जाते हैं। चलना हो तो चलो।

सज्जाद—नहीं, भ'ई, मैं तो नहीं जाऊंगा। खैर तुम लोग कहां नाच देखने जाते हो। कहीं महफिल है क्या?

नरसिंह—अजी महफिल कैसी? योंही कुछ वाहियात खुराफात सी होगी: भ'ई सच कहता हूँ मेरा भी जानेका मन न था, मगर देखो न येही हैदर कसमें दे दे कर जबरदस्ती खेंचे लिये जाते हैं।

हैदर—नहीं भ'ई नहीं, वाहियात नहीं है। बाबू राजप्रकाशसिंहके बेटेकी शादीकी महफिल है। ऐ वल्लाह बनारस और लखनऊकी जितनी मशहूर मशहूर रण्डियां हैं, सबको सब बुलाई गई हैं। भ'ई सज्जाद, वल्लाह तुम भी चलो। देखो, ऐसा मौका फिर नहीं कभी आनेका।

सज्जाद—नहीं यार, मुझे नाच देखनेका चन्दां शौक नहीं।

हैदर—क्यों तुम नाच देखना या गाना सुनना बुरा समझते हो?

सज्जाद—नहीं, एकबारगी बुरा तो नहीं कह सकता, लेकिन फिलहाल तो बुराही है। हमारे मुल्कके क्या शाइर और क्या गाने वाले, दोनों एक इश्क़के पीछे दीवाने होरहे हैं। उन्हें जो मजमून सूझता है, वह इश्क़ पर।

हैदर—क्यों जी, इश्क़ हक़ीक़ीकी चीजें गानेवाले भी क्या तुम्हारे नजदीक बुरे हैं?

सज्जाद—अजी, गानेवालेको कौन पूछता है हमारी दानिस्तमें तो इश्क़ही बुरा है, ख़ाह हक़ीक़ी हो या मजाज़ी।

नर० और है०—(हंस कर) ऐ सुबहान अल्लाह, भ'ई तुमने तो कमाल किया। भ'ई सच तो कहो, व्याह भी करोगे या नहीं?

सज्जाद—अस्तग़फ़िरुल्लाह, लाहौलवलाक़ूवत मैं और व्याह करूंगा? हरगिज नहीं। कभी नहीं। ख़ैर यह जाने दो, यह बताओ कि जिस तौरसे कि आजकलके गवैये या रण्डियां गाती बजाती हैं, उससे सिवा बुराईके किसी भलाईका होना भी मुमकिन है? वही बुलबुल वही गुल, वही बाग वही बहार, वही माशूक वही शराब, वही यूसुफ़, वही जलेखा, वही मजनूं वही लैला,— भ'ई पैदाइशसे बराबर एकही बात सुनता आता हूं। अब जो उन्हें ख़याल भी करता हूं तो उनके नामसे जी घबराता है। भला तुमही कहो, इनके सुननेसे क्या फ़ाइदा?

नरसिंह—शाइर क्यों अक्सर मजमून इश्क़ पर बांधते हैं, इस की एक वजह है यानी इन्सानकी तबई ख़ाहिश इश्क़की तरफ़ झुकती है।

सज्जाद—हैवानकी झुकती हो तो झुकती हो, पर इन्सानकी क्यों झुकने लगी? ख़ैर इसकी बहस क्या, अगर झुकती हो तो यह बुरी बात है। झुकने न दो। क्योंकि जरा अपने मुल्क और अपनी हालत पर गौर करो। अब वह वक़्त नहीं है, कि इश्क़से दीवाने बने बन बनकी ख़ाक छानते फिरें जङ्गल और सहरामें भटकते फिरें। देखो तुम्हारे मुल्ककी क्या हालत थी और क्या होगई! तुम्हारा मुल्क

किसके हाथमें है? वह कैसे हैं और तुम कैसे हो? इङ्गलैण्ड और फ्रान्सकी क्या हालत है, और तुम्हारे हिन्दुस्तानकी कौन गत है?

नरसिंह—(हंस कर) तब देखो, बैठे क्या हो एक काम करो बन्दूक चलाना सीखो।

सज्जाद—क्यों, इसकी क्या जरूरत है? हम बुजदिलों पर जो कमबख्ती सवार है, उससे ऐसी उम्मीद नहीं की जासकती कि दो सौ बरस—बल्कि तीन सौ बरसके अन्दर हमलोगोंकी हालत पलटे। लेकिन इस बातको खूब याद रखना चाहिये, कि जबतक हमलोग इस बुरी हालतमें हैं तब तक जो इश्क और ऐशको रवा समझेगा, वह नमकहराम—दगाबाज—खुदगर्ज—नफ्सपरस्त और अपनी मा हिन्दुस्तानका कपूत बेटा है।

हैदर—इश्क भी न करे और बन्दूक भी न चलाये फिर लोग करें क्या? क्या बैठे बैठे घास छीलें?

सज्जाद—क्यों घासही छीलना सिर्फ काममें काम है। सब कोई मिलकर मुल्कसे जिहालतकी तारीकी दूर करनेमें कोशिश करें। मुल्कमें जिराअत, कारीगरी, और सौदागरीकी तरक्की करें। सबके दिलोंमें हिन्दुस्तानकी भलाई करनेकी ख्वाहिश पैदा करायें। लेकिन आशिकों और अय्याशोंसे अलबत्ते ये बातें होनी मुहाल हैं।

नरसिंह—देखो यह तुम्हारी कितनी बड़ी भूल है। जिसे जोरू जांता और लड़के वाले हैं, जितनी उसे देशकी प्रीति हो सकती है, सम्भव नहीं कि उतनी किसी कुँआरे वालेको हो। अगर राजाने किसी तरहका अत्याचार किया या कोई अनुचित टैक्स लगाया तो उसकी तकलीफ जितनी कि लड़के वाले वालेको होगी उतनी कुँआरेको कभी नहीं हो सकती उसे क्या, वह तो "निहङ्ग लाड़ला सदा सुखी।"

सज्जाद—ठीक है मगर—

हैदर—(जेबसे घड़ी निकाल कर) भ'ई नरसिंह ७ बज चुके। अब चलो। आज लेक्चर रहने दो। हमलोगोंको मिसेसरके

यहां भी तो जाना है। इन्शाअल्लाहताला और किसी रोज़ मियां सज्जादसे इस बात पर बहस की जायेगी।

सज्जाद—अञ्जुमनमें इसबार यही मज़मून क्यों न दिया जाये?

नर० और हैदर—हां यह तो खूब कहा।—ख़ैर तो हमलोग रुख़सत होते हैं।

सज्जाद—अच्छा, भई, बन्दगी।

[सबका प्रस्थान।

दूसरी झांकी।

पटना,—बाग़।

[एक गवैयेका प्रवेश।]

गवैया—

(ग़ज़ल रागिनी पीलू।)

अजब इस बाग़-रंगीका तरक़्क़ी पर ज़माना है,
शिगुफ़्त: गुल हैं बुलबुल जोशमें सहवे तराना है।
सरोदो बरबतो चंगो रबाबो ऊदो अरग़नसे,
कहीं नौबत सलामीकी, कहीं पर शादियाना है।
चमनमें आके कुछ ऐसा खिला है गुनचये खातिर,
कि सारा किस्सये रञ्जो अलम अपना फ़िसाना है।
कहीं अंगरेज हैं बाहम, कहीं अंगरेजिनें बाहम,
दियारे हिन्दमें अब औज पर जिनका ज़माना है।
खुशीमें साथ अपने गुलरुखोंके सैर करते हैं,
जो इनका तर्ज़-माशूक़ी, तो उनका आशिक़ाना है।
अजब नाज़ो अदासे महवि नग़मा अन्दलीबें हैं,
मुक़र्रर उनको गुल पर आज रंग उनका ज़माना है।

हवाये सर्द है, साकी है, सुतरिब है, सुगन्नी है,
जमीं फर्शे जमुर्रद अब्रे रहमत शामियाना है।
दिले रंजूरको क्योंकर हो फरहत सैर-गुलशनमें ?
गुलोंको देखकर रोना भी हंसनेका बहाना है।
न पूछो, हम-सफीरो ! क्या हुई वह अपनी आजादी,
गिरफ्तारे बला जबसे हैं बरगश्ता जमाना है।
न उम्मीदे रिहाई है, न है परवाजकी ताकत,
हमारे मुश्तेपरका अब कफसमें आशियाना है !

सज्जादका प्रवेश।

सज्जाद—अहा क्या ठण्डी ठण्डी हवा बह रही है। जरा यहां फिरूं।—नरसिंह और हैदरकी बहससे सरमें दर्द होगया। (टहलना) वाह क्या खूब, ये क्यारियां क्या खूबसूरत बनी हैं। सुबहानअल्लाह, इन मेहदीकी टट्टियोंको क्या सफाईसे तराशा है। मगर ये सब इन्हीं अङ्गरेजोंकी मिहरबानी है। चाहें ये अभी यह कायदा बना सकते हैं कि ५ बजेसे ७ बजे तक, सिवा गोरे चमड़े-वालोंके कोई 'काला आदमी' इस बागमें न फिरने पाये। (आह भरकर) जिहालत हठधर्मी और तअस्सुबकी वजहसे हमलोग इस बुरी हालतको पहुंच गये हैं। अगर हमलोग महज खुदगरज और नफ्सपरस्त न होते तो यह हाल न होता। लेकिन अफसोस है कि मुल्ककी बिगड़ी हालतपर हफ्तेमें भी एक बार गौर करनेवाले इतने कम हैं कि उनका शुमार उंगलियोंपर कर ले सकते हैं। मुल्ककी तरफसे बेपरवाईका मरज या खुदा कब दफा होगा ? इसका कौन इलाज हो।—(आह भरकर) हिन्दुस्थानकी किस्मत कुछ अच्छी थी कि अङ्गरेजोंका यहां कदम आया। खुदावन्दा ! अङ्गरेजोंकी सल्तनत कुछ दिन और कायम रख। अगर इस मुल्क की तरक्की होगी तो इन्हींकी बदौलत होगी। इस हालतमें जो ब्रटिश सल्तनतके बरखिलाफ सलाह दे वह नादान है बेवकूफ है बल्कि मुल्कका दुश्मन है।

[हेमचन्द्रका प्रवेश]

सज्जाद—अच्छा, आइये तशरीफ लाइये। आप भी फिरनेको आये हैं।

हेमचन्द्र—हां फिरनेको भी आया है, और आपशे मोलाकात कोरने भी आया है।

सज्जाद—(हंसके) भला यह आपको किस तरह मालूम हुआ कि मैं यहां आया हूँ?

हेम०—हाम तो आबी आपका बाघामें गोया था, वहां एक चाकोर बोल दिया जो आप होयां आया है।

सज्जाद—खैर, आप लेक्चर अपना लिख-चुके?

हेम०—हां आबी खातम होने होने पर है।

सज्जाद—क्यों बाबू, तो क्या हमलोग सचमुच बन्दरकी औलाद हैं?

हेम०—(मुस्कुराकर) तो ईशमें क्या आपको आबीतक सन्देहो हाय? हामलोग आलबत्त बांदोरका लेड़का बाला हाय। एश बात का शोबाशे हाम हाजार हाजार प्रमाण देने पारता है। हाम आबी आपको बुझाय देने पारेगा। देखिये आदमी जो बांदोर—

सज्जाद—(आपही आप) अल्लाह, यह तो गाड़ी चली। (प्रकाश) हज़रत, मुआफ कीजिये। आज, न मालूम क्यों हमारे सरमें बड़ा दर्द है। कल मैं जी लगाके सुन लूँगा।

हेम०—ऊ कूच हाय नाई। आपका माथामें एकटू गैस ऊठा है. एकटू फिरनेसे आबी शब भाग जायेगा। अच्चा तो देखिये आदमी जो—

स०—अच्छा, आप अगर यह सबूत करदें कि अङ्गरेज बन्दर हैं तो मैं आपका बड़ा ममनून इहसान हूँगा।

हेम०—यह तो कूच बड़ा मुश्कील बात नेई है। यह तो ऐवे करे

आदमी बांदोरका औलाद है,
इङ्गराजलोग आदमी है,
ईश लिये इङ्गराज लोग बांदोरका औलाद है।

ई बात तो युक्ति शास्त्रका प्रथम सूत्रे से ही साबूत हुआ। आवी सूनो—

सज्जा०—फिर लफ्ज "औलाद" को क्यों रहने दिया? आप क्या यह नहीं साबित कर सकते कि "अङ्गरेज बन्दर हैं?"

हेस०—आपको इङ्गराज लोगसे ईश कादर विद्वेश क्यों है? ऊ लोग तो बहुत अच्छा आदमी होता है। ऊ लोग देखिये विद्याका कैशा उन्नति किया, कीत्ता ईश्कूल पाटशाला बनाया। ऊ लोग तो वेश सिविलाइज्ड आदमी हाय।

स०—जी हां ठीक है। आजकल आप अख्बार देखते हैं या नहीं? घनश्यापुरके मजिष्ट्रेटका हाल कुछ सुना है?

हेस०—हाम ईस बातको जावाब नाई देने शोकता, किन्तु एक किम्बा दो आदमीके खाराप होने से समस्ता इङ्गराज जातिका किम्बा इङ्गराज गवर्नमेण्टको खाराप बोल्हा बड़ा दोष है, अन्याय है। युक्ति शास्त्रोका विरुद्ध होता है।

सज्जाद—खैर और सुनिये—

हेस०—आप देखिये विज्ञानका तारक्की होनेसे ऊ लोग आर अच्छा होजायेगा। आवी सूनिये आदमीका आर बांदोरका कीतना किसिम—

स०—हज़रत, रात होगई, चलिये रात अन्धेरी है, जल्दी चलें।

हेस०—अच्छा चोलिये, जाते जातेही रास्तामें आपको आवार प्रकारसे बूझाय देगा। आदमी जो बांदोरका अवतार है, ई प्रश्न जो है, सो—

स०—अगर जनाब आदमीके तो दुम नहीं होती, क्या बङ्गाले में क्या ह हा हा हा—

हेस०—छे छे छे, आप ईश दिव्याका बातमें हांसी ठाट्टा कोरता है?

[रूठके प्रस्थान]

सज्जाद—(शर्मीके) जी नहीं, कुसूर हुआ, कुसूर हुआ, मुआफ कीजिये, आपको मेरी कसम—

[पीछे पीछे सज्जादका भी प्रस्थान]

तीसरी झांकी।

विहार, खानकाह, शमशेरबहादुरका मकान।

शमशेरबहादुर चारपाई पर लेटे लिहाफ ताने
सटक सड़सड़ा रहे हैं, और एक नौकर पांव
दाब रहा है—हाथ जोड़े सर नीचा किये
अब्बास सामने खड़ा है।

शम०—अबे इस पांवको दाब, इस पांवको। बहरा है क्या? जोरसे रे जोरसे। आज भरपेट खाया है कि नहीं? अह हा हा हरामजादेने हमारी जानली, लो हमारी जान। (उठके और नौकरको एक तमाचा जड़के) सूअर हरामजादा दो बरससे हमारे यहां काम कर रहा है, अभीतक हरामीके पिल्लेने पांव दाबना नहीं सीखा है। (नौकर आंसू पोंछता है)—हां हां वहीं वहीं। जरा और जोरसे। (बीच बीचमें सटक सड़सड़ाता जाता है।) आंख बन्द करके) हां देख तो ऐसेही, अब तेरा महीना बढ़ा दूँगा। आः (कुछ देरके बाद) क्यों रे, कासिमकी बुढ़िया अंधेर गई?

नौकर—ओको जाये बड़ा देड़ हुआ, सड़काड़।

अब्बास—मुझको क्या हुक्म होता है? मुझे क्या कलही चला जाना पड़ेगा।

शमशेर—हां, कल सुबही नूरके लड़के तुम यहांसे चले जाओ। तुम्हें आजतक मैंने अपने पाससे खिला पिला पोस पालके इतना

बड़ा किया, अब तुम जवान हुए, जैसे चाहो, वैसे अपना खाना खाओ। मैं कहांतक खिलाता रहूँ। देखो सिर्फ तुम्हारी वजहसे हमारे बहुत रुपये खर्च हुए हैं। तुम्हारे बाप कुछ हमारे पास छोड़ भी तो नहीं गये कि तुम्हें उससे और खिलाऊं पिलाऊं—सो अब रोनेसे क्या होता है?—रोनेसे क्या आपही आप रुपयोंकी थैली थोड़ीही तुम्हारे पाओं पर आ पड़ेगी?

अब्बास—जी, रुपयेके लिये नहीं रोता हूँ। (आंसू पोंछकर) आपके जेरसाये आजतक पला हूँ। अब आपलोगोंकी खिदमत छोड़नी पड़ती है, इसीसे दिल उमड़ा आता है।

शमशेर—खैर तो अब रुखसत होओ। सुबहको भी शायदही मुलाकात हो। क्योंकि, भाई जानतेही हो, आंख हमारी जरा देरसे खुलती है। हमेशा कागजपत्तरका देखना सुनना, इसके अलावे और बहुतेरे कामोंमें दिन रात मशगूल रहता हूँ। इसीसे जीभर रातको सो नहीं सकता। बस वही सुबहके वक्त जरा झपकी सी लग जाती है।

नोकर—(आपही आप) आः झूठ बोलना भी तो थोड़ा क्या? डात दिन बेचाड़े कामे काजमें तो फंसे ड़हे हैं। काम काज तो बस यही है कि दिनभड़ बैठे बैठे गड़गड़ गड़गड़ सटका सड़सड़ाना ओड़ सांझ भई कि खटिये पर आके पड़े और पैड़ टिपवाने लगे, ओड़ भड़ डात—। जो थप्पड़ साहिब है कि अभीतक गाल लहड़ ड़हा है।

अब्बास—(सुसुक कर) तब अब रुखसत होता हूँ। आपके सामने जो जो बेअदबियां और गुस्ताखियां हुई हों, मुआफ कीजियेगा।

[गया।]

शमशेर—(उठ कर) देख तो आ गोश्त तय्यार हुआ। जा जल्दी जा, जा जल्दी। जाता है कि नहीं।

नौकर—(जाता जाता आपही आप) उड़के जायें क्या? बड़े-आदमियोंको अल्लाह मीयां एक दफे गरीब बनादें, ओड़ हम सबके

ऐसा मेहनत कड़की कसाय पड़े तब मजा मालूम होय।

[गया।]

[दूसरी तरफसे घसीटाका प्रवेश।]

शमशेर—क्यों जी घसीटा, अच्छी तरहसे देख सुन लिया न? पहचान लोगे न?

घसीटा—मियां ई का कहते हो? आपके अकबालसे जिसको हम एक बार देख लिया उसको हम हजमही कर लिया।

शम०—नजर पर रखना। कहां जाता है, क्या करता है, सब खयाल रखना, समझ गये न।

घसीटा—हूँ ऊं ऊं हूँ।

शम०—दो दो चार चार रोजके बाद हमें खबर देते रहना। समझे न? बगैर हमारे हुक्मके एक बात भी जियादे न करना। देखो, जैसे जैसे बतला दिया है, सब याद है न? (घसीटाको रुपया देके) लो, बिलफेल इतना लो, आगे जैसा काम दिखलाओगे वैसा पाओगे।

घसीटा—इसकी कौन बात है? हमारा यह भयफोड़ा (लाठी को दिखलाके) अच्छी तरह रहे, तो आपके अकबालसे बहुत कुछ कमा लेंगे।

शम०—अच्छा, अच्छा, अब जाओ। शायद कोई नौकर चाकर इधर आजाये।

[घसीटा गया।]

(खुश होकर) खैर जो हो सो हो, लौंडेका रुपया सब तो अपने हाथ रही गया। अरे, वह कर क्या सकता है हमारा। हूँ। अब चलें ज़रा कुछ नाश्ता करलें। दो दिनसे जैसा कुछ खा रहा हूँ, कह सकता हूँ कि गोया फाकाही खीच रहा हूँ।—आज एक बार जरा नाजिनोंके महलमें भी चलना चाहिये। हलीमामें अब वह कैफियत नहीं रही। हमेशा एकहीको क्या कोई प्यार कर सकता है? खुदाने आदमीके दिलको ऐसाही बनाया है, कि इसे हर वक्त

नई नई चीज चाहिये। (सोचता हुआ टहल रहा है।) मगर यह आंच बुझती क्यों नहीं ? या अल्लाह यह क्या बात है, ऐश की इस-रतका सारा सरंजाम हमारे हाथमें रहते भी मुझे खुशी क्यों नहीं होती ? यानें जब कोर्ट आफ वार्ड्स‌से छुट्टी भी न हुई थी तबहीसे तो हर फनमें ताक हूँ। तबहीसे तो बराबर गोया बहरे अय्याशी में गर्क हूँ, मगर तब भी यह बलाकी प्यास क्यों नहीं बुझती ! खैर यह तो यह, और कभी कभी तबीयत इस तरह बेतौर घबराती क्यों है !—बहुत सोचना भी बुरा है। खाओ पीओ चैन करो। अफ-यूनियोंकी तरह बैठे बैठे सोचा करना बहुत मनहूस है। (शराब पीता है, और ऊपरसे गोश्त खाता है।) इसकी यही दवा है। साकी और माशूका तकलीफ तो देते हैं, पर आराम भी वैसाही देते हैं।—दुनिया भी एक जञ्जालही है, आंख बन्द करलो तो फिर कुछ नहीं, सिर्फ वही एक अल्लाहताला परवरदिगार है। अब नये नये कई एक लौण्डे अङ्गरेजी पढ़ पढ़के कहते क्या हैं, कि मुल्क की भलाई करो। अजी, हमारे मुल्ककी भलाई वाले, मरोगे तो क्या मुल्क साथ लेते जाओगे ? भाई हमारे, ज़िन्दगीका कुछ भी ठिकाना नहीं, यह तो पानीका बुलबुला है, अभी है अभी नहीं। जब तक बचे हो मौज करो, खूब खाओ पियो, मजे उड़ाओ, लो, दो, उड़ाओ पुड़ाओ, कौन जानता है कल क्या होगा ? हम कुछ नहीं मानता है। "आरामसे गुजरती है आकबतकी खुदा जाने।" मगर फिलहकीकत क्या हमें चैन है ? उंहूँ।—यह फिर वही बात सोचनेहीके पीछे एक दिन न एक दिन हमारी जान भी जायेगी। गिलास हाथमें लो देखो अभी चैन आता है। भ'ई चाहे इसे हराम कहो चाहे हलाल मगर इससे बढ़ कर असरदार दूसरी दवा नहीं।

[दो पतुरियों का प्रवेश ।]

अहा ये क्षेत्रप्रका मेह कहांसे आया ?

दोनों पतुरियां—आप भूल गये तो हमलोग भी आपको भूल जायेंगी ?

(नाचना और गाना।)

गीत।

सलोनी तेरी सुरत मेरे जिय भाई।

तनमें मनमें नैननमें छबि तेरी रही समाई।

इन आंखनको और रुचत नहीं, करी अनेक उपाई,

हरीचन्द तूही एक सर्वस, जीवन धन सुखदाई।

शमशेर। क्यों न हो, वाह वा, क्या बात है? चलो कमरे में चलें, यहां यह गाना जमता नहीं।

[सब गये]

चौथी झांकी।

बिहार खानगाह, शमशेर बहादुरका महल।

[अब्बास और नसीमनका प्रवेश।]

अब्बास—अम्मा, मैं तुमसे रुखसत होने आया हूँ।

नसीमन—(धीमी आवाजसे) बेटा, तो क्या तुम सचमुच जाते हो? कब जाओगे बेटा?

अब्बा०—अम्मा, अभी, तुरत।

नसी०—अभी तुरत, जाओगे बेटा?

अब्बा०—हां अम्मा।

नसी०—(आंखसे आंसू पोछ कर) बेटा, तू कैसे मुझे छोड़ जायेगा। तुझ सिवा मुझे अम्मा कहके पुकारने वाला और कोई नहीं है, बेटा।

अब्बा—(आंखमें आंसू भर कर) अम्मा दो एक बरसके बाद फिर तुमसे आके मिलूँगा।

नसी०—(रोवासी आवाजसे) तबतक मैं बचूँ तब न? हमारे

"अम्मा" कहके पुकारनेवाला शायद यही आखरी दिन है। मुझे (रोकर) अपना लड़का कोई नहीं हुआ, बेटा अब्बास तू मुझे अम्मा कहके पुकारता था इससे मैं अपना वह दुःख भूली हुई थी। तुझको मैं ठीक अपने फर्जन्दके बराबर जानती थी। बेटा, वह हमारी बुझी हुई आग आज फिर भड़क उठी। बेटा अब अम्मा कहके पुकारता पुकारता कौन हमारे नजदीक आवेगा? हाय, इस दुनियामें मुझे अम्मा कहके पुकारने वाला कोई न रहा। बेटा अब्बास, तुझे क्या इसी लिये पोसा पाला है कि जब तू जवान हो तो मुझे छोड़के चला जाय? नहीं इसमें तेरा कूसूर क्या है, मेरी किस्मतही ऐसी है!

अब्बा०—अम्मा, तुम क्यों इतना अफसोस करती हो? मैं कसम खाता हूँ, फिर तुमसे आके मिलूँगा, जरूर मिलूँगा। अब दुआ दो, मैं रुखसत होता हूँ।

जमी०—जरा ठैर जाओ, मैं आती हूँ।

[गई।

(हलीमाका प्रवेश।)

हलीमा—(डरती हुई) अब्बास जाते वक्त जरा मुझसे भी मुलाकात करते जाना। देखो, तुम्हें कसम खुदा की जरूर जरूर आना।

अब्बा०—(शरमाके) आपके नजदीक जाते—

हली०—शर्म मालूम होती है। (आंख पोछके) मुझ नापाकसे सबही नफरत करते हैं। बेटा एक बार जरूर जरूर हमारे पास आना। मैं तुम्हारीही भलाईके वास्ते कहती हूँ।

अब्बा०—(ताज्जुबसे) हमारी भलाईके वास्ते।

हली०—हां बेटा तुम्हारीही भलाईके वास्ते। एक शख्स तुम्हारी जानके पीछे पड़ा है।

अब्बा०—(डरसे) ऐं, क्या?

हली०—बेटा इसका बड़ा किस्सा है। (डर डरके) यहां मैं

नहीं कह सकती। उसे अगर मालूम होगा तो तुम्हारी जान तो लेहीगा मुझे भी जीता न छोड़ेगा।

अब्बा—कौन वह ?

हल०—जरा और आहिस्ते बोलो। क्या जाने कोई दुश्मन लगा हो तो हकनाहक हमारी तुम्हारी जान जायेगी। जरा वहीं आजाना, सारा किस्सा सुन लेना। शराबके नशेमें मुझसे सब हाल कह डाला है।

अब्बा०—अ—च्छा, आ—ऊं—गा।

[हलीमा गई।

अब्बा०—अल्लाह, सबके सामने अपना मुंह क्यों कर दिखा सकती है ? मियां शमशेरबहादुर इनके देवर हैं, लाहौलवलाकूवत उन्हींसे—। जाऊं या नहीं ? जब वादा कर चुका हूं, तो जाना जरूर है।—डर भी मालूम होता है। मगर हमारा तो कोई दुश्मन नहीं है। हमारी बुराई कौन करेगा ? और मुझ गरीबके बुराई करनेसे उसे नफा क्या ? "बगुला मारे पखना हाथ।"

(नसीमनका प्रवेश।)

नसी०—बेटा, इन रुपयोंको राह खर्चके वास्ते अपने साथ लेते जाओ। (लम्बी सांस लेकर, आपही आप) बेटा, ये तुम्हारे ही रुपये हैं।

अब्बा०—अम्मा, राह खर्चके लिये तो हमारे पास रुपये हैं। देख न, ये क्या हैं। अब तो रुपयोंकी कुछ जरूर नहीं। तुम अपने पास इन्हें रहने दो।

नसी०—बेटा, और किसी काममें ये आयेंगे। रख लो, जिद न करो, मेरी बात सुन लो, बेटा।

अब्बा०—अम्मा, तुम इस तरह क्यों बोलती हो ? जबसे मैंने होश सम्भाला है तुमहीको अपनी मा समझता हूं। तुम्हारा कहना न कभी उठाया है, और न उठाऊंगा। देखो, इन रुपयोंको ले लेता हूं।

नसी०—बेटा, तेरे लिये हमारी मुहब्बत और भी बढ़ी जाती है। अब कौन मुझसे इस तरह बातचीत करेगा। (रोना)

अब्बा०—अम्मा, अब सब्र करके बैठो। देखो, देर हुई जाती है, मुझे दुआ दो, कि मैं रुखसत होऊं।

नसी०—तुम्हें और क्या दुआ दूँ, बेटा, यही दुआ देती हूं, कि या परवरदिगार! या मुश्किलकुशा, इस बच्चेपर कोई बला न आने पावे, आवे तो फौरन टल जावे!

अब्बा०—अम्मा, मुझे न मालूम क्यों खौफ मालूम होरहा था कि इस मकानसे निकलतेही मुझपर कोई आफत आयेगी। लेकिन अब कुछ पर्वा नहीं, आपकी दुआ बेअसर नहीं होने की। खैर, अब रुखसत होता हूँ। अम्मा! अहा, यह लफ्ज "अम्मा" भी कैसा प्यारा है? क्या देसमें क्या विदेसमें, क्या तकलीफमें क्या आराममें, क्या महले-शाहीमें और क्या कैदखानेमें, इस लफ्जके मुंहसे निकलतेही दिलका दर्द आधा होजाता है। (आंसू पोंछके) खैर तो अब रुखसत होता हूँ।

नसी०—(रोती रोती) चलो बेटा, तुम्हें दरवाजे तक पहुंचा आऊं। बगैर तेरे कैसे जीऊंगी, बेटा? (जोरसे रोती है।)

[दोनों गये।

दूसरा अंक ।

पहली झांकी ।

एक बड़ीसी बही और एक तोड़ा रुपये लिये
कालीप्रसादका प्रवेश ।

काली०—(जम्हाई लेकर) अब जीनेमें तनिको मजा नहीं। रातदिन हिसाबकिताब, रातदिन हिसाब किताब । (बैठके) घड़ियोभर जे है से जी बहलावेके फुर्सत मिलै सेउ नहीं। मियां सज्जादके तो जे है से सिर्फ पटना है । न घर बारके फिक्र, न गांव गिरांवके फिक्र । "फलानी जगह काहत हैं, १०० रुपया वहां भेज देना," "फलने पर बड़ी मुसीबत हैं, ५० रुपया उसको देना," "फलना लड़का बड़ा गरीब है, उसे इसकूलका महीना दिया करना," "फलनेके घरमें आग लग गया है, उसका मकान बनवा देना।"—बस हुक्म पर हुक्म जे है से चलल आवय करै हई। न जानूं दिन भरमें दस गो चिट्ठी आवै हई कि बारहगो कि "काहतके सबबसे गांवमें कोई भूख न मरने पावे।" से जइसन मियां सब काम-काज हमरे ऊपर छोड़ देलन हैं आउर कोई दीवान जे हई से होत तो भगवान जाने चारे दिनमें सौ से घर चौपट कर नीप पोतके रख देलहोत। हम तो जे हई से बूढ़े मीयांके वक्तासे नौकरी करै हियो, जौन दरबारमें अति परवस्ती भेलई और जेकर का नामको बारह बरस तक नमकवा खैलूं हुआं ऐसन अधरम जे हईसे हमराखे न होतो। मगर हां, कसम तो न खा सका हियो रुपके न खाव तो खइबई कैकर ? बस यही सात रुपइयाके महीनवा है और पन्द्रह सोलह गो जे हईसे ऊपरसे मिल जाय है। इतनो न लूं तो ई गिर्हस्ती कैसे निबहत ? जोरूआ बेटवो के भी तो पेट हई ?

उनखनी देहांसे खइतन ? ओहपर ई जे हई से दू दू बेटियन का धूस से बियाह कहां से कौलियो ? सरकार से तो दूए सौ रुपइया मिलल रहल, एकरे पीछे तबाह भैलूं की भैलूं ? से रमायनजीमें लिखवे करे हई कि आका के धन चोरावे में जे हई से जरीको पाप न। कैसे जो दोहवा हई—मर सतुर, यादो न आवे हई। आउर पाप अगर होवो करत तो जे हई से जेठ वैसाखमें पन-सलवा बिठलावे हियो, जन्माष्टमी रामनवमी, छठ सालमें तीनों तीन गो बरत करे हियो, एही सबसे पाप कट जात होत। सियाराम सियाराम सियाराम। राम तोहरे भरोसा भारी।

एक वृद्धका प्रवेश।

वृद्ध—दीवानजी, मेरा हिसाब देख रक्खा है ?

काली—आदाब अर्ज है, आइये तशरीफ लाइये। जनाब अभी जे है से फौरन देख दे हैं। अरे रमटुइयां—आं—आं।

नेपथ्यमें—जी—ई—ई।

काली—अरे, खां साहब तशरीफ़ लेले हथिन, तनिक हुकवा भरके ले ले आव।

हुक्का लेकर रामटुइयाका प्रवेश।

काली—अरे, तनिक हमरो नरियरवा ओकेसे उठौले आव।

[रामटुहइयां नारियल देके गया।

काली। तब सुद्दा के रुपइया आपका बाकी निकालता है, खां साहब ?

वृ०—देखो न, यही १ सौ २४ रुपये और ८ आने।

का०—चिठवा साथ लिये आये हैं जे है से ?

वृ०—हां यही तो है। (जेबसे निकालके चिट्ठा देता है।)

का०—(वहीसे चिट्ठा मिलाके) हां हिसबवा तो ठीक है। मगर खां साहब जे है से पूरा १२०) लेना मञ्जूर हो तो अभी निकाल दें, नहीं तो अभी कुछ रोज दम लीजिये जे है से।

वृ०—नहीं दीवानजी, मुझे बड़ी जरूरत है, मुझे आज ही चाहिये। खैर आप १२० ही रुपये दीजिये।

का०—(१२०) देकर) रसिदवा पर जे है से जरा दसखत कर न दीजिये।

हु०—(दसखत करके रुपया परख परखके गिनते गिनते।) अच्छा दीवानजी, मियां सज्जाद व्याह करेंगे या नहीं। बरस २५, २६ एकके तो हुए होंगे। खुदाके दियेसे किसी बातकी कमी नहीं। जवान वैसा खूबसूरत, वैसाही अमीर। बहन भी १५, १६ एककी हुई होगी। भला खुद व्याह न करें न करें, बहनको क्यों नाहक कुँआरी रखे हुए हैं? भाई बिरादरीकी शर्म नहीं है? सिन जियादे होजाने पर फिर बेचारीसे व्याह कौन करेगा? आप लोग नहीं कुछ कहते?

का०—व्याहका होना भी कुछ मुशकिल है? एक तो घरके अमीर, दूसरे लड़की भी क्राईहोसी सुनते हैं देखनेमें मुँह कानको बहुतही अच्छी है जे है से।

हु०—फर्ज कर्दम कि सब कुछ है, मगर शादी तो जल्दीही न कर देनी चाहिये? आप नहीं अपनी सलाह देते?

का०—हम सब क्या कहनेको चूकते हैं, जनाब? मगर उन्हें तो जे है से शादीके नामसे बुखार आता है—क्या अपनी, क्या बहन की। एक लड़की जो और है उसका भी जे है से व्याह नहीं कर देते, वह भी १७, १८ बरसकी होगी।

हु०—क्यों साहब, तो क्या इन लड़कियोंका भी व्याह करने पर जी नहीं चलता?

का०—साहब, चलता भी होगा, तो जे है से क्या वह कहेंगी कि साहब हमारा व्याह करदो? व्याहका जिक्र न मियां सज्जाद करते हैं, और न वह जे है से। जनाब, कह तो दिया कि यह किस्मत वह चीज है कि जे है से क्या अमीर और क्या गरीब सबके साथ है। अब इसी बातको देखिये कि इन लोगोंको नारायणकी दयासे जे है से किस बातकी कमी है? अभी चाहें तो सैकड़ों व्याह करलें, एकसे एक खूबसूरत और अकलमन्द जोरू जे है से

मिल सकती हैं, मगर कारममें तो दोनों भाई बहनके वदा है कुंआरे रहना, फिर जे है से व्याह हो तो कैसे हो ?

ह०—(इशारा करके) कुछ वह सब बातें तो नहीं हैं ?

का०—जी नहीं, मुत्लक नहीं। उससे तो जे है से कुछ वास्ता भी नहीं। मुझको इस दरबारमें रहते आज एक लख्त १२ बरस होगया, मगर उस बातको न कभी देखा, और सुना। उस बातकी तरफसे तो जे है से दोनों लड़कियोंको बड़ाही परहेज है। मगर है क्या कि किसी सरपरस्तके नहीं रहनेसे—

ह०—हां, हां, क्या क्या ?

का०—और कुछ नहीं सिर्फ इतनाही कि लाज शर्म जे हैं से बहुत कम है। जिससे तिससे बातचीत करना, सिर खुला रखना, —समझा कि नहीं जे है से सब औरतोंके लिखने पढ़नेका नतीजा है उसपर भी जे है से कोई घरमें बड़ा बूढ़ा डांट डपट करनेवाला नहीं, जैसा जीमें आता है वैसा करती हैं। मगर खां साहब मिजाजकी दोनों ऐसी लायक और खलीक हैं कि मैं आपसे जे है से क्या बयान करूं ? याने जब हमारा छोटका बेटा जे है से बीमार पड़ा था तो दोनों रोज बेनागे उसे देखनेको मुझ गरीबके यहां जातीं, अपने हाथसे जे हैं से दवा पिलातीं, और अपनी गोदमें ले कर जे है से पहरों टहलतीं, जब लड़केको नींद आजाती तब घर लौट आतीं। खां साहब, मैं तो लड़केकी जिन्दगीसे जे है से हाथ धो चुका था। पर वह, सच पूछिये तो, इनही दोनोंकी मददसे जिया ! खैर, यह परसोंका जिक्र है कि जोंही दोनों खानेको बैठा चाहती हैं कि मामाने जाके जे है से खबरकी कि "२५, ३० कंगले सब औरत और लड़केवाले ५, ४ रोजके भूखे दरवाजेपर जे है से आ खड़े हुए हैं, उन्हें कुछ दिलवाओगी ? जो हुक्म हो सो दीवान जी से दिलवा दें।" दोनोंने खिड़कीसे जो झांकके देखा तो जे है से हकीकतमें उन्हें भूखसे करीबुल्मर्ग पाया। और मामासे झिड़कके बोलीं कि "अरी, कमबख्त दीवानजीसे क्या दिलवाने

चली है, रुपये लेकर जे है से क्या चबावेंगे ? चल चल चूल्हे पर हण्डियां चढ़ा दे, देखती क्या है। गरज खाना पकवाके सब कङ्गलोंको भर पेट खिलवा लिया तब जे हैं से आप खाने बैठीं। यह सब माजरा जे है से मुझसे सामने आके कहा।

ख़ु०—यह तो अलबत्ते बहुतही अच्छी बात है। इस जमाने में दिलकी ऐसी सखी लड़के वाले मखसूस अमीरोंके यहां शाज नादिर पैदा होते हैं। दीवानजी, दोनों, पढ़ी लिखी भी हैं ?

का०—जनाब कुछ ऐसा वैसा ? फ़ारसी अङ्गरेजी—दोनों अजी साहब दोनों किताबें जे हैं से तसनीफ़ करती हैं।

ख़ु०—अच्छा दोनोंका रङ्ग ढङ्ग्या कैसा है ?

का०—सुनता तो हूँ कि अजब किस्मका है। जेवरसे तो बड़ी ही नफ़रत। जे है से बहुत किसीने कुछ कहा सुना तो दो एक जेवर पहन लेती हैं। नथ, चूड़ी, कड़ा और पाजेबको तो देखती तक नहीं। सिंहदी मिस्सीको छूतीं तक नहीं।

ख़ु०—ओ, समझा क्रिस्तानी वजा।

का०—नहीं साहब भला क्रिस्तानी वजा भी क्योंकर कह सकते हैं ? पांचोंवक्त जे है से निमाजका पढ़ना, रोजा रखना, रोज दो एक पारा कुरान पढ़ना, यह तो उनका मामूली काम है जे है से।

ख़ु०—ऐं, यह बात है ?

का०—जी हां, और क्या ?

ख़ु०—मगर दीवानजी, यह बात तो अच्छी नहीं कि भलेआदमीके घरकी लड़कियां, और जेवर न पहनें, सिहंदी मिस्सी न लगायें।

का०—खां साहब, मैं एकबात और आपसे कहता हूँ, कि जिसे सुनकर जे है से आपको और भी तअज्जुब होगा। मगर किसीसे कहियेगा मत।

ख़ु०—लाहौलवलाकूवत। दीवानजी खुदाके फजलसे यह बुरी

आदत मुझमें नहीं कि जो आपसे सुना उनसे कह आये, और जो उनसे सुना आपसे कहा।

का०—(धीरेसे) जनाब, क्या कहूँ कभी कभी दोनों, मेमकी तरह घंघरा कुर्ता पहनती हैं—(और धीरेसे) और पांओंमें मुण्डा जूता जे है से।

ह०—(आंख फैलाकर) ऐं—एं—एं, क्या आप कहते हैं, दीवानजी? घांघरा, कुर्ता और मुण्डा जूता?

का०—खैर इस जिक्रहीको जाने दीजिये। हमलोगोंको इससे कौन काम? बड़े घरकी बड़ी बात जे है से।

ह०—दीवानजी, मैं तो इस बातको सुनकर हैरान होगया। हमारी इतनी बड़ी उम्र हुई, मगर मैंने ऐसी बात कभी नहीं सुनी थी। घंघरा—कुर्ता—मुण्डा जूता—साजअल्लाहम्मिनहा। ऐ साहब मियां सज्जाद खुद कैसे हैं?

का०—"राम मिलाई जोड़ी,
　　कोऊ अन्धा कोऊ कोड़ी।"

खुद भी वैसे ही हैं।—पतलून—कोट—बूट। मगर और सब बातोंमें तो बहुतही अच्छे हैं। लेना देना, रफ्तार, गुफ्तार, निशिस्त बरखास्त—सब कुछ जे है से जैसा चाहिये वैसा है। एक ऐब है तो यही कि गुस्सा हदसे जियादे है। गुस्सा चढ़ा तो फिर जे है से होश ठिकाने नहीं रहता। और गुस्सा उतरा तो मुलायम भी वैसेही मगर कुछ कुछ अभी तक लड़कपन भी है। मगर देखिये किसीसे कहिये उहियेगा मत।

ह०—लाहौलवलाकूवत, कह तो दिया कि यह आदत मुझमें नहीं है। (उठकर) कहो दीवानजी, मीर साहबके यहां आज मुजरा है, चलोगे?

का०—जनाब, हमारे जानको जे है से छुट्टी कहां जो मुजरा देखूँ? खैर घण्टा आध एकके लिये छुट्टी मिल गई तो जे है से आजाऊंगा। हमारे मियां सज्जादको नाच मुजरेसे बड़ी चिढ़ है।

हु०—ऐं, क्या कहते हो ? यह नई जवानी और नाच मुजरे से चिढ़ ? जब हम सब जवान थे तब घड़ी भर तो वगैर नाच मुजरे के चैनही न था। और अब भी क्या हुआ है, दिल बूढ़ा थोड़ा ही हुआ है ? हा, (गाकर) "तेरे नयनोंने जादू—।"

का०—(तुरत उठके उनके मुँह पर हाथ रखके) खां साहब, यह क्या करते हैं, दोनों लड़कियां ऊपरही हैं, सुनेंगी तो जुल्म हो जायेगा जे है से।

हु०—(गुस्सेसे) घंघरा, कुर्ता, और मुख्डे जूतेके पहिननेमें कुछ गुनाह नहीं, मगर एक गीतके गानेमें जुल्म होजायेगा ? तेरहवीं सदीमें ऐसी ऐसी बातें तो होहींगी।—खैर तो मैं अब रुखसत होता हूं।

का०—चलिये न जे है से हम भी साथही चले हैं। हुक्का एकाद चिलिम और नहीं पी लीजियेगा ?

हु०—जी, अब नहीं।

[दोनों गये।

दूसरी झांकी।

विहार, अम्बेर, सज्जादका जनाना मकान।

सुम्बुल और गुलशन बैठी हैं।

गुलशन—आपा, "बम्बईके पार्सियोंकी इन्सियत और अखलाक" नाम एक किताब जो हालमें छपी है, तुमने देखी है ?

सुम्बुल—नहीं। कैसी है ?

गुल०—अच्छी किताब बनी है।—पार्सियोंमें गरीब दुखियोंकी परवरिशका अच्छा कायदा है। हां आपा, देखो, लफ्ज गरीब दुखियापर तुम्हारी बात याद आगई।—तुम्हें शहरके हिन्दू मुसल-

आज दोनों दुआ देते हैं। हिन्दुओंने तुम्हारा क्या नाम रक्खा है, जानती हो?—अन्नपूर्णा।

बुलबुल—(मुस्कुराके) सुबहानअल्लाह, अच्छी बातसे अच्छी बात याद आगई। भला मैं तो अन्नपूर्णा हूँ और तुम क्या हो?

गुल०—(बुल्बुलके बदनसे लपटके) मैं और क्या हूँगी? जो हूं सो हूं। सिर्फ गुलशन, तुम्हारी छोटी बहन।

बुल्बुल—गुलशन, अब तुम्हारी लड़की कैसी है?

गुल०—हमारी लड़की!

बुल्बुल—वही, चम्पाकी छोकरी, जो तुम्हें अम्मा अम्मा कहके पुकारती है, और सिवा तुम्हारे और किसीके हाथसे दवा नहीं पीती।

गुल०—आज कुछ अच्छी है। कलसे बुखार नहीं आया है।

बुल्बुल—गुलशन इधर बहुत दिनोंसे तुम्हारे भइयाकी कोई चिट्ठी नहीं आई है, इससे जी बहुत घबराता है।

गुल०—आपा, भइया क्या सिर्फ हमारेही हैं, तुम्हारे क्या वह कोई नहीं?

बुल्बुल—(लम्बी सांस लेके) हमारे वह कौन गुलशन? मुझ पर जरा मिहरबानीकी नजर रखते हैं, बस इसी वादर न?

गुल०—जरा क्यों; भइया तो मुझसे भी जियादे तुम्हें चाहते हैं।

बुल०—(आंखमें आंसू भरके) गुलशन, तुम तो उनकी सगी बहन हो, और मैं कौन? तीनमें कि तेरहमें? मुझ यतीम पर रहम खाके अपने मकानमें पनाह दी है, इतना क्या कम है?

गुल०—आपा, तुम्हारा किसी बात पर मुंह नहीं उठता। ठहरो, भइयाको आने दो, मैं उनसे सब हाल कह दूँगी।

बुल्बुल—नहीं, बहन, वल्लाह तुम हमें खाओ जो उनसे कुछ कहो तो। वह सुनेंगे तो बड़े रंज होंगे।

(एक चिट्ठी लिये दाईका प्रवेश।)

दाई—ए बीबी, ए बीबी, दिवानजी ई खत भेज दिहिन हैं।

काहिल हैं कि पटनेसे आया है।

[गुलशनके हाथमें चिट्ठी देके दाई गई।

गुल०—(सुम्बुलके हाथसे चिट्ठी देके) लो, चिट्ठी चिट्ठी कर उस वक्तसे घबरा रही थीं, अब लो चिट्ठी अपनी।

(दोनों मिलके उस चिट्ठीको धीरे धीरे पढ़ती हैं।)

गुल०—(हंसके) हम लोग बन्दरकी औलाद हैं या नहीं, माशाअल्लाह ऐसी बातोंकी नक़ल भी अनजुमनमें हुआ करती है—

सुम्बुल—(मुस्कुराके) पीछे हंसना, पहिले चिट्ठी तो सारी पढ़ लो।

(फिर दोनों मिलके चिट्ठी पढ़ती हैं।)

गुल०—(गाल फुलाके) हूँ, भइयाने मुझे खब्ती लिखा है। अच्छा भइया आवेंगे, तब मैं कभी जो उनसे बोलूँ? मैं खब्ती हूँ क्यों?

सुम्बुल—(हंसके और गुलशनके गालको दाबके) गुलशन, तुम हकीकतमें खब्ती हो, अजी यह प्यारसे लिखा है या हकीकतमें?

गुल०—वाह, तुमको भी तो वह प्यार करते हैं, फिर तुम्हें क्यों न खब्ती लिखा? हुं-उ-उ-उ।

(दाईका पुनः प्रवेश।)

दाई—हिः हिः हिः बीबी—हिः हिः हिः।

सुम्बुल—क्या मामा, क्या? इतनी हंसती क्यों हो?

गुल०—अरी कमबख़्त जल्दी बता भी सही, माजरा क्या है?

दाई—हिः हिः हिः छोटी बीबीकी ब्याहकी बात आई है? हिः हिः हिः।

गुल०—जरा शकल तो देखो।

सुम्बुल—(हंसके) कहांसे और किनसे?

दाई—खनकाहके मियां समसेर बहादुरसे। उनका एक व्याह तो होचुका है। हिः हिः हिः।

सुम्बुल—कौन निस्बत लाया है?

दाई—हिः हिः बीबी हंसते हंसते तो पेट फुला हुआ जाता है। एक बुढ़िया लाइम है। हम उनको इधरे लिये आवें हैं।

(करिमनी बुढ़ियाको लिये दाईका पुनः प्रवेश।)

सुम्बुल—निसुबत किससे लाई हो, बुढ़िया ?

करिमनी—खनकाहके नामी जमींदार मियां समसेरबहादुरसे। बड़े अमीर आदमी हैं।

सुम्बुल—उनकी पहली बीबी तो अभी हैं न ?

करिमनी—हैं तो हरज का है ? (गुलशनकी तरफ उंगली दिखाके) मियां इनहीके अख्तियारमें रहेंगे। ऐसी खूबसूरत नौजवान बीबीको छोड़के उस अधवैसूको प्यार करेंगे ?

(सुम्बुल और गुलशनने शरमाके मुंह नीचा कर लिया।)

दाई—हिः हिः हिः। क्यों जी तुम्हारे मियांकी उमिर का होगी ? और देखनेमें बड़े खूबसूरत हैं काहीं हिः हिः हिः।

करिमनी—मरीं, छियांकी सामा वैसी ? दूर हो निगोरी इतनी हंसी ? अरे उमिर जरा बेसी है और जरा सांवले हैं तो उस से का ? जो कारूके बराबर खजाना है, एक दफे हूँ दारें तो सौ सौ गरडा लड़की आपही आके खड़ी होजायं।

सुम्बुल—(गुलशनको दहने हाथसे पकड़के) बुढ़िया, तू अपने मियांसे जाके कहदे कि उनके ऐसे ऐसे सैकड़ों शमसेरबहादुरके सैकड़ों कारूके खजाने हमारी गुलशनके पाओंके एक नाखूनके बराबर भी नहीं होंगे।

करिमनी—तुम उनकी को होती हो, बेटी ?

सुम्बु०—(जोरसे) हमारी यह छोटी बहन हैं।

करि०—खाली बहन, इसीमें इतनी लाली, भाई होता तो न मालूम का कर डालतीं।

दाई—जा होते तो तेरे गलेमें हाथ देके बाहर निकलवा देते।

करि०—(उठके गुस्सेसे) मेरी ऐसी बेइज्जती, अच्छा हम तो अभी जा हैं चले। बाकी इस घरका अच्छा नहीं होगा। सीयां

समसेरबहादुर कुछ ऐसे वैसे नहीं हैं। दस बारह दिनमें सब तमासा न दिखादें, तो हमको भी एक मा बापकी जनी मत कहियो।

[पांओं पटकती गई।

दाई—कायेंरी बुढ़िया, हरामजादिन कहींकी? काहे रे जंगरा चिलौनी, तेरा इतना बड़ा सबादूर हुआ कि तैं हमारे सामने हमरी बीबी सबको अकोसे? खड़ी तो रह पियरवा दिबौनी, तोको झाड़ू झांटों।

[दाई गई।

बुल्बुल—(मुस्कुराके) क्यों गुलशन, शमशेरबहादुरसे शादी करोगी?

गु०—क्यों तुमही क्यों नहीं कर लेती।

बु०—खैर, वह पसन्द नहीं हैं, तो चलो दूसरा मियां ढूंढ़ ला दूं। चलो, इस बातके लिये इतना अफसोस क्या?

गुल०—आपा, मैं तुम्हारी बलायें लूं जो तुम्हें मैं खूब चाहती न होती तो तुमसे इस घड़ी खूब लड़ती। मगर आपा, मुझे बड़ा डर मालूम होरहा है, वह बुढ़िया तो बेतरह धमका गई है।

बु०—गुलशन, इस तरह डरा करोगी तो जगह चाहिये। उस वक्त वह चुड़ैल और कर क्या सकती थी? बेचारी धमकानेसे भी गई?

[दोनों गईं।

तीसरी झांकी।

पटना, एक सदर सड़क।

एक दरख्तके नीचे एक बङ्गाली सर्वे पर हुक्का पी रहा है, और एक पटनियां उसके पास बैठा है।

बङ्गाली—अरे बाबा, शौब सार्गे र कोथा।

"जार कौपाले नाई वो धी, ठीक ठीकालि तार होबे की।"

(अब्बासका प्रवेश।)

अब्बास—खैर अब कुछ पर्वा नहीं। इनही बाबूसे राह पूछलूं। क्यों बाबू, पटने जानेकी राह यही है न ?

बङ्गाली—(अब्बासकी तरफ देखके) काहे जी ?

अब्बास—मैं बिहारसे आता हूँ।—पटने, नौकरीकी तलाशमें।

बङ्गा०—(जरा सोचके) हूं। आपका पाश कुछ रुपइया हाय ?

अब्बास—क्यों ?

बङ्गा०—(पटनियेकी तरफ इशारा करके) अब पाटना जानेका हुकूम नाई है। लेकेन जो जो मानुष दोठो करके रुपइया दे शेकता है, उशीको जानेका एकतियार हाय। कोम्पानी बहादुर का होकोम, हम क्या करें ?

अब्बा०—सरकार इन रुपयोंको लेके क्या करेगी ?

बङ्गा०—अरे भाई, ओही तो बड़ा मोजाका बात हाय। कोम्पानी बाहादुर ओही रुपइयामें बांदोरका नाच देगा।

अब्बा०—(तअज्जुबसे) सरकार बन्दरका नाच करावेगी।

बङ्गा०—हांजी, हाम क्या आर मिथ्या कौथा बोलता है ?

अब्बा०—खैर, किस तरह बन्दरका नाच होगा ?

बङ्गा०—शूनो जी, शूनो। लैनका मायदानमें बोड़े बोड़े बांश गाड़ते हैं।

अब्बा०—उस पर क्या होगा ?

बङ्गा०—ओशका ऊपर बांदोरका नाच होगा।

अ०—बांसके ऊपर बन्दरका नाच ? ये बन्दर कहांके हैं और नचायेगा कौन ?—माशअल्लाह, बांसके ऊपर बन्दरका नाच !

बङ्गा०—हाः हाः हाः। बड़ा मोजाका बात है। मौर्या शाहेब जी, बड़ा मोजाका बात ! ऊ जो शाहरका बोड़ा बोड़ा आदमी है, ओही लोगको बांशका ऊपर नाचना होगा। आर ओही लोग को शबको एकठो एकठो करके दुम बनाये देगा। आर हाब एक

दूसरे एक एकाठो रोस्सी बांध देगा। आर जब सब रईस लोग बांसका ऊपर ऊठके नाचेगा, तब नीचूसे रोस्सी खींचेगा, आर इधिर उधिर घुमावेगा।

अ०—रईसोंको बांसके ऊपर चढ़के नाचना पड़ेगा? खैर नचावेगा कौन?

बङ्गा०—बड़ा बड़ा साहब लोग डुग्गी बजावेगा, और जेगा कोरने होगा नीचूसे जिलायके कोरेंगा। आर ऊ जो लाट साहेब है, एक हातमें रोस्सी पकड़ेगा आर दोसरा हाथमें चाबुक लेगा।

अ०—(चौंकके) रईसोंको क्या चाबुक मारेंगे?

बङ्गा०—नहीं जी नहीं, सूनो। ऊ मारेगा नहीं, चाबुकमें आवाज, कोरके खाली डरावेगा। जेसा बांदोरका नाचमें कोरता है। आवाज सूननेसे रईस लोग भाला तारहसे नाचेगा।

अ०—क्या सब रईसोंको नाचना पड़ेगा?

बङ्गा—ना ना, सबको नेई। जो साहेबका बातमें हाय, आर जो आइयासी कोरता है आर उसका खूसामद कोरता रहता है, ओही लोग साहेबलोगका एकतियारमें हाय, जो चाहे सो इनसे करावे।

अ०—आपको यह किसने कहा?

बङ्गा०—हाम खुद माफिक बात अखबारमें देखा है।

पटनिया—(एक तरफ) सचमुच बाबू?

बङ्गा०—(एक तरफ) हां, सब सत्य हाय, खाली रुपइयाका बात झूठा है। दो रुपइयासे तोलको एकाठो देगा।

पटनिया—ए बाबू, मियां साहब देहातसे आये हैं, उनको पटनेका हाल कुछ मालूम नहीं है। नाच कैसा होगा, जरा देखला तो दीजिये।

बङ्गा०—आच्छा देखलाता है। (खड़े होके दुपट्टेको कमरमें दुमको तरह बांधके) आप एईठो हमारा दुमका साफिक पाकड़िये। (अब्बास मुस्कराता है।) आपको डर क्या है, आप पाकड़िये।

(अब्बासका वैसा करना) होया तो बांध जाय भाई, हाम राष्ताका ऊपर नाचेगा, लेकिन बांध होनेसे अच्छा होता (पटनियेकी तरफ) आरे तोम एकठो चाबुक आर एकठो बाजा आनने पारेगा?

पटनियां—हां उस अस्तबलमें देखें, कोई आदमी होगा तो देगा।

गया, और एक चाबुक और खंजड़ी लेके आया।

पटनिया—अड़े, मिला बाबू।

बंग०—आप हमारा दुम ठीक ठीक राखिये। हाल तो आधी रहोश हुआ। लेकिन दुममें चोट लागलेसे रहोश लोग बड़ा खापा होता है। (पटनियेंसे) तोम भाई, इधर ओधर आंख राखो, एञ्जिनियर साहेब ओहेब कोई आवे तो हामको जल्दी बोलो।

पटनिया—बाबू कुछ पड़वाह नहीं, लेड़ा नगड़ चाड़ा तड़फ है।

बंग०—(धूँआंकी गाड़ी आदि" गाता है, और नाचता है।) आरे बड़ा भाला नाच होता जाय—रहोश लोगका नाच बड़ा मजेदार नाच—चबाशीश दीजिये अब मीयाशाब।—बड़ा भाला नाच—

पटनिया—(डरके) बाबू एञ्जिनियड़ साहेब चले आते हैं।

[सब गये।

चौथी झांकी।

पटना—सदरसड़क।

घसीटाका प्रवेश।

घसीटा—लौण्डा गया किधर? देखता हूं, शिकार हाथसे निकला चाहता है। आं? (नेपथ्यकी तरफ देखकर और प्रसन्न होके) यही तो।

नेपथ्यसे। और कितना फिरूं?—इस मकानमें भी जरा

पुकारके देख लूँ ।—मकान पर कोई हो जी ?

घसीटा—कौन है, तुम ? क्या है, चिल्ला क्यों रहे हो ?

नेपथ्यसे । किसी अशराफकी शक्ल देखता हूं । आः अब जाके जानमें जान आई ।

अब्बासका प्रवेश ।

अब्बास—जनाब, मैं एक परदेसी मुसाफिर हूं । इधर कहीं मकान किरायेमें मिल सके तो जरा मिहरबानी करके बतादीजिये ।

घसी०—अ'ई; तुम तो बड़े बनबकूल मालूम होते हो । यह बारह कोसका पटना शहर, जहां खर्च करनेसे, मसल मशहूर है कि शाविजका दूध भी मिल सकता है, तोबाह तुम्हें एकाठो मकान न मिला ?

अब्बा०—(गिड़गिड़ाके) जनाब, मैं शुरू शुरू यहां आया हूं, मुझे यहांका हाल मुतलक नहीं मालूम ।

घसी०—खैर, हमारे साथ आओ मैं तुम्हें अपने मकानमें जगह दूंगा । वही सामनेवाला हमारा मकान है । अब कुछ फिक्र नहीं जे रोज तक चाहो, हमारे मकानमें रहना ।

अब्बा०—जनाब, आपकी इस मिहरबानीमें आपका कितना मम्नून इहसान हुआ, मैं अर्ज नहीं कर सकता ।

घसी०—खैर, तो अब आओ । (आपही आप) तुम्हें मम्नून इहसान ही करनेको तो लिये जाता हूं । (जरा आगे बढ़के) ए माम्नू, किधर गये ? ए माम्नू—ऊ—ऊ ।

पीरूका प्रवेश ।

पीरू—कहो चचा, सब खैरियत है न ? आओ जरा मिल तो लो । (दोनोंका मिलना) साथ कौन है ?

घसी०—(पीरूके कानमें कहना ।)

पीरू—तब तो फिर पौ बारह । (खुशीमें उछलना ।)

अब्बा०—(तअज्जुब होके) यह क्या ?

घसी०—उसको कमरमें गठियेकी बीमारी है । इसी वजहसे

हकीमने वतलाया है कि "तुम घंटे दो घंटेके वाद उछला करो, तो तुम्हारी वीमारी वहुत जल्द छूट जायेगी।" इसी सववसे वह अभी उछला था।

अव्वा०—(जरा मुसकुराके गौर करता है।)

पीरू—तुम सोच क्या रहे हो जी ?

अव्वा०—जी—कुछ—तो—नहीं।—सिर्फ यही सोच रहाहूँ—कि आप लोगोंमें यह मामू—चचाका रिश्ता कैसे हुआ ?

घसी०—(हंसके) अजी, हमलोगोंमें कोई रिश्ता उश्ता नहीं है। यह प्यारकी वोली है।

अव्व०—एक आदमी मामू कहके पुकारता है, और मामू उसी को चचा कहके पुकारता है, ये प्यारकी वोलियां हैं।

घसी०—हां पटनेमें ऐसी रिवाज है। यहां तो जो नाम लेके पुकारो तो लोग खफा होजायें। यह तो तुम्हारा देहात नहीं है. यहां तो औरोंको कौन पूछता है, वहुतेरे तो वापको भी लाडका नाम रखके पुकारते हैं।

पीरू—तो उस वातको भी कही ढालें। अजी, इस शहरकी वात न पूछो। वीयां तो जोरू खसमका नाम लेके पुकारे है। मसलन मेरा नाम है नवीवकस, तो जोरू पुकारेगी (वोली वदलके) "नव्वू, अरे मेरा नव्वू, जरा हियां तो आ रे।" हमको उसी वखत जाके हाजिर होना चाहिये। और जो कहीं जरा देरी हुई तो जुलुम हुआ !

अव्वा०—पटनेमें क्या सवही औरतें अपने अपने खसमका नाम लेके पुकारती हैं ?

पीरू—सव औरतको क्या खसम है कि प्यारके नामसे अपने अपने खसमको पुकारेंगी। सोलह आनेमें चार आनेको खसमही नदारद हैं, वाकी वारह आनेमें आठ आनेको खसम रहते भी नहीं हैं। खसम अपना अलग चैन करते हैं, और उनकी जोरू अलग—

अव्वा०—बाकी चार आनेमें क्या सबकी खसमोंका नाम लेके पुकारती हैं ?

पीरू—हां, और क्या।

घसीटा—मास्तू, ज़रा वह गीत तो इनको सुनाओ।

पीरू—अरे जाओ बचा, गला आपे सूख रहा है, इनको गीत की सूझी है।

घसी०—छी छी, इतना जल्दी जल्दी, मास्तू एत्ता रुपया कहांसे आवेगा ? खैर तो चलो मकान चलते जायें। आओ जी आओ।

[सबका प्रस्थान।

तीसरा अंक।

पहली झांकी।

पटना, सदर सड़कपर कुतुबफरोशकी दूकान।

कुतुबफरोश बैठा है, सज्जादका प्रवेश।

सज्जाद—(आपही आप) न मालूम इसकी क्या वजह कि इस मुल्कमें लड़के जबतक कि पढ़ते रहते हैं, तब तक तो सब कुछ है, मगर ज्योंही कौलेज या स्कूलसे निकले कि फिर न वह तेजी रहती है, न वह हिम्मत और कोशिश रहती है, और न वह हुब्बे वतनही रहती है। एक इश्क़हीने हमारे मुल्कको सत्यानास कर डाला। देखूं तो सही, इस हैकड़ दुश्मनको दूर करनेमें मैं कबतक फतहयाब होता हूं। किलफिल अनजुमनमें इस मासका एक लेक्चर कि "सब बुराइयोंकी जड़ इश्क है" पढ़ना है। इसके बयानमें जितनी किताबें बन चुकी हैं, सबको देख लेना चाहिये। देखूं तो इस दूकानमें कोई किताब अपने गौंकी मिलती है या नहीं। (कुतुब-फरोशको पुकारके) आपकी दूकानमें इश्क़के मजमूनकी कोई किताब है?

कु॰ फ॰—जी नहीं, हमारी दूकानमें स्कूलहीकी प्रायः सब किताबें हैं। "इतिहास तिमिरनाशक" है, "भूगोल हस्तामलक" है, "विद्याकी नेव" है, "गणिताङ्क" है, "ज्यामिती" है, "प्राकृतिक भूगोल" है, "विद्यांकुर" है, "भाषाभास्कर" है—

सज्जाद—(हंसके) जी नहीं, मुझे इन किताबोंकी जरूरत नहीं। इश्क़के मजमूनकी कोई किताब नहीं है? जरा अच्छी तरह ढूंढ़िये तो सही। मुझे बड़ी जरूरत है।

कु० फ०—(जरा सोचके और ढूंढ़के) देखिये तो यह किताब आपको पसन्द है ? इसका नाम "प्रणय परीक्षा" है ।

स०—जबान संस्कृतमें है ?

कु० फ०—जी नहीं हिन्दीमें ।

स०—हिन्दीमें ? लाइये लाइये । कीमत क्या है ?

कु० फ०—जी वाजिब बतलावें या भाव करें ?

स०—वाजिब बतलाइये ।

कु० फ०—दो रुपयेसे कौडी कम न लूंगा । जी चाहे लीजिये जी चाहे न लीजिये ।

स०—क्यों साहब, किताबमें तो एक रुपया लिखा है, आप दो रुपये क्योंकर कहते हैं ?

कु० फ०—जी, यह किताब अब जल्दी मयस्सर होती है ? सारे पटनेमें बस यही एक किताब है । हमारे पास दो किताबें थीं, एक काल पौने दो रुपयेमें बिक गई, और एक यह है । इसे दो रुपयेसे कममें न बेचूंगा । खरीदारोंकी किल्लत कुछ थोड़ीही है ?

स०—खैर, मैं दो एक दूकानोंमें और देख आऊं । (जाना चाहता है ।)

कु० फ०—अजी साहिब कुछ आप भी तो कहिये । न भाव किया न बट्टा, कया आये कया चले ? पौने दो दीजियेगा ? पौने दो । डेढ़ रुपया दीजियेगा ? लाइये एकही रुपया लाइये । आज भोरको न मालूम किसका मुंह देखके उठा था कि जितनेकी किताब उतनेहीमें बेचनी पड़ी, एक पैसा भी नफा न मिला । लाइये दाम लाइये ।

स०—अच्छा देता हूं । (किताब देखना ।)

कु० फ०—हां साहिब, बेअदबी मुआफ हो तो एक बात पूछूं । आपका व्याह हुआ है या नहीं ?

स०—(तअज्जुबसे) क्यों ?

कु० फ०—जी नहीं, योंही पूछता था । मैं दस बरससे बराबर

इस धंधेको कर रहा हूं बराबर देखता आया हूं कि इन सितारों-को वही ढूँढ़ते हैं जिनका व्याह नहीं हुआ है।

स०—इसकी आप कोई वजह बता सकते हैं?

कु० फ०—इसकी वजह क्या? इसकी यही वजह है कि जबतक कोई चीज नहीं मिलती तब तक बड़ी मीठी और सुहावनी मालूम होती है, और जब मिल गई तो फिर आंख उठाके देखनेको भी जी नहीं चाहता।

स०—(हंसके) ठीक कहा। इश्कके बारेमें हमारी भी वही राय हैं। देखिये जिन लोगोंने—

[लोहू से लतपत कपड़े पहने अब्बासका प्रवेश]

अब्बास—(सज्जादके पांवपर गिर कर) साहिबो, मुझे बचाइयो मुझे बचाइयो।

स०—(घबराके खड़े होजाना) क्यों क्यों, क्या हुआ? आप कौन हैं?

नेपथ्यसे—चोर रे, चोर रे। पकड़ो पकड़ो। वही चोर है रे, वही रे।

अब्बास—(खड़े होके) साहिब, मैं चोर नहीं मैं चोर नहीं। जिस मकानमें मैं था, वहां दो शख्सोंने चोरी की थी। चौकीदारोंने आके उनको गिरिफ्तार किया। इस माजरेको देखके मैं वहांसे चला। पर न मालूम क्या उनके जीमें आया कि उन्होंने मुझे भी पकड़के मारना शुरू किया। जनाब, देखिये मारा है कि तमाम फूट फूट गया है। बड़ी बड़ी मुशकिलोंसे मैं उनसे हाथ छुड़ाके भागा हूं, कमबख्त मुझे मारनेको फिर दौड़े आते हैं, देखिये वह आये। अब मैं आपकी पनाहमें आया हूं, बचाइये, बचाइये, अब दौड़ नहीं सकता। (फिर सज्जादके पांव पर गिरना।)

स०—(अब्बासको उठाके उसपर शक करता हुआ।) आप चोरोंके मकानमें जाके रहे थे क्यों? कबसे थे?

अ०—जी, थोड़े ही दिन हुए। मुझे यह नहीं मालूम था कि वह चोर है।

नेपथ्यसे—लो, यही तो है। यही तो है। पकड़े रहना, वह चोर है।

अ०—(डरसे) जनाब, मुझे बचाइये। (आंसू पोंछना) साहिब, मुझे और कोई नहीं। खुदा आपका भला करेगा। अगर मेरा कसूर करना सुबूत हो जाय तो मुझे जो सजा मिले सब मञ्जूर है। मगर मेरी यही अर्ज है कि जुर्मके सुबूत होनेके पेशतर मैं नाहक मार न खाऊं। देखिये मेरे बदनसे खून बह रहा है।

स०—आप अशराफ तो मालूम होते हैं। मगर अशराफ हो या नहीं, तजवीजके पेशतर यह किसीकी मजाल नहीं कि आपके बदनपर कोई हाथ रखे।

दो कान्सटबल, एक अङ्गरेज सब इन्सपेक्टर और
बहुतसे आदमियोंका प्रवेश।

सबके सब—पकड़ो बचाओ, पकड़ो बचाओ।

(सब इन्सपेक्टरका अब्बासको पकड़के मारनेकी तय्यारी करना।
सज्जादका अब्बासको बचाना। कुतुबफरोशका
डरसे दूकान बन्द कर लेना, और आड़से
देखना। और और आदमियोंका
इधर उधर दौड़ना।)

स०—खबरदार, मारो मत। मारनेका तुम्हें कोई इख्तियार नहीं। थाने पर ले चलना हो ले चलो।

सब-इन्सपेक्टर—चोप रौ, यू कुत्ताका बच्चा। (सज्जादके मुँह पर डण्डा चलाना, और फिर अब्बासको मारनेकी तय्यारी।)

स०—(गुस्सा होके) हैं, यह मुझपर ? (बड़ी फुर्तीके साथ डण्डा छीनकर उसे खूब मारना। चौकीदारोंका उसकी मददको आना और मार खा खाके गिरना और भागना।)

सब-इन्सपेक्टर—(कान्सटबलोंसे) कावर्ड, नमकहराम, सूअर, किधर भागा तुम लोग ? (सब्बादको सामनेकी तय्यारी ।)

स०—(लात मारकर सब-इन्सपेक्टरको दूर फेंकके) दगाबाज, हरामजादा, सुफेद चमड़ेको देखकर हिन्दुस्थानी अब नहीं डरते । (अब्बाससे) आप हमारे पास आवें, कुछ परवा नहीं । (अब्बास का हाथ पकड़के प्रस्थान ।)

[सब गये ।

दूसरी झांकी ।

बिहार, खानकाह, शमशेर बहादुरका मकान ।

शमशेर बहादुर और नसीमनका प्रवेश ।

शम०—तू जरूर इस बातको जानती होगी ? तूने नहीं कहा है, तो लौंडेको मालूम हुआ क्योंकर ? तेरे और मेरे सिवा सारे जहानमें इस बातको कोई नहीं जानता है । जरूर जरूर तूने उसे कहा होगा । तूने नहीं कहा तो और कहेगा कौन ?

नसी०—खुदा जानता है मैं कुछ नहीं जानती ।

शम०—(मुँह चिढ़ाके) "खुदा जानता है मैं कुछ नहीं जानती ।" तूने मुझे बिलकुल उल्लू समझ लिया, क्यों ? अब्बाससे तूनेही सब कहा है । सच सच सारा हाल कह दे, इसीमें खैर है, नहीं तो, वल्लाह, सर उतार लूंगा ।

नसी०—(रोती रोती) है है ! मेरी बातें तुम्हें यकीन नहीं होतीं ? भला यह मुमकिन है कि जिस कामके करनेको तुमने मना कर दिया है, उसे मैं करूं ? अजी, हम औरतोंको शौहरसे बढ़कर दूसरी कौनसी चीज प्यारी होसकती है ? सो मैं तुम्हारी बात किसी औरसे कहूंगी ? और बात भी निगोड़ी कैसी कि

जिससे तुमपर आफत आये। जबही तुमसे व्याही गई तबहीसे मैं तुम्हारी लौंडी हुई, भला यह मुम्किन है कि तुम्हारी लौंडी ऐसा काम करे ?

शम०—अरे, तू किसे चराती है ? तूने नहीं कहा तो फिर बात खुली क्योंकर ?

नसी०—(आंख पोछके) वल्लाह आलम, मुझे नहीं मालूम। खैर, तुमसे मैं एक बात कहती हूं, अगर खफा न हो तो कहूं।

शम०—कह।

नसी०—शुरूहीमें अच्छा न हुआ। बुरी बात कबतक छिपी रह सकती है ? एक रोज न एक रोज आपही आप खुल जाती है। बुरी बात क्या किसीके कहनेसे खुलती है ?

शम०—(गुस्सेसे) चुप रह, हरामजादी। जबान सम्भालके बोल, कुत्ती। (लात मारके नसीमनको गिराना।)

नसी०—(उठके रोते रोते) कुसूर हुआ, मुआफ करो। बेवकूफ औरतकी जात, क्या कहनेको क्या कह बैठी। (आंख मून्दके, और पास जाके) तुम्हारे पांवमें चोट तो नहीं आई ?

शम०—नहीं, नहीं, जा, दूर हो सामनेसे।

[नसीमन रोती रोती गई।

शम०—(चिन्ता करता हुआ टहलता है) क्या करूं, क्या नहीं करूं ? ८००० रुपये—कुछ थोड़े भी तो नहीं हैं। मगर लौंडा कोई सुबूत नहीं दे सकेगा। फिर इतना खौफ क्या ?—तोभी थोड़ा जहर भी जहरही है। "दुश्मन नतवां हकीरो बेचारा शुमुर्द।" नः। जड़ही साफ कर डालनी चाहिये। "न रहेगा बांस, न बजेगी बांसरी।" घसीटाने भी आकर कुछ हाल नहीं कहा।

घसीटाका प्रवेश।

शम०—(तअज्जुबसे) लो, यह तो नामही लेते पहुंचे। पुलिस से अबकी क्योंकर बचे ?

घसीटा—कुछ सबूत हो तो तो पकड़े ? लेकिन जमादार दारोगाको कुछ पूजा ऊजा चढ़ाना पड़ा था।

शम०—खैर, कुछ पर्वा नहीं, मैं सब दूंगा। मगर यह तो बताओ कि लौंडेका क्या हुआ ?

घसीटा—साहब, लौंडेने तो बड़ी दगा की। सज्जाद सज्जाद नामका एक सकस उस लौंडेको बचाइस। ऊ तो बड़के तेज आदमी मालूम होता है। निस्पिट्टरको भी मारके गिराइस।

शम०—सज्जाद! कौन सज्जाद ?

घसीटा—सुना है, उसका भी मकान विहारहीमें है। वहां तो वाकरगञ्जमें उसका डेरा है।

शम०—ओ, अब्बेरवाला सज्जाद। उसीने उस दिन हमारी मशाताको यों बेइज्जत करके निकलवा दिया था। (दांत मसमसाके) खैर, हम उसकी बहनको निकालके न लाये तो हमारा नाम शमशेरबहादुर नहीं। देखो, अब्बसवे लौंडेपर नजर रखना। और सुनो सज्जादकी बहनको निकाल लानेकी कोई तदबीर करो तो, वल्लाह, तुम्हें अमीर बनादूं।

घसीटा—(खुश होके) जो हुकुम। कहिये तो आजही लाकर हाजिर करदें। (जीमें) इसी तरहके जबतक दो एक जमींदार न हों तो हमलोगोंका चले कैसे ?

शम०—नहीं, नहीं। अङ्गरेजकी बादशाहत है। काम समझ बूझके करना चाहिये। फिर वह भी बड़ा आदमी है। खैर तुम अब जाओ। रातको जरा फिर आजाना। जैसा जैसा करना होगा, मैं सब बता दूंगा।

[घसीटाका प्रस्थान।

शम०—(टहलता है) लौंडेको वह बात मालूम कैसे हुई, मेरी अक्ल नहीं काम करती। खैर जो हो, जितना खर्च हो, डरकी बातको दूरही करना मस्लहत है।

[गया।

तीसरी झांकी।

पटना, एक सदर सड़क।

अब्बास और सज्जादका प्रवेश।

सज्जाद—भाई क्या कहूं, जबकि गुलशन छः ही महीनेकी थी, और मैं बरस दस एकका हूंगा, कि अम्मा जाती रहीं। उसके थोड़े ही दिनोंके बाद चार आदमीके कहने सुननेसे बावाने फिर, व्याह किया। हमारी सौतेली मा नेकमिजाज तो थीं। अपने वेटेकी तरह मानती थीं। कह सकता हूं गुलशन उन्हींकी वजहसे इतनी बड़ी हुई। हमलोगोंको भी ठीक सगी मा कीसी मालूम होती थीं। यह सब कुछ था मगर आदमीके जीकी बात कोई नहीं कह सकता। बाबाके मरनेके थोड़े ही दिनोंके बाद बदकारने अपने तईं जाहिर किया। उस वक्त उसकी उमर कोई २४, २५ बरसकी होगी।

अब्बास—आपको यह बात क्योंकर मालूम हुई?

सज्जाद—खानबाहके शमशेरबहादुरकी भावज हलीमा—

अब्बास—कौन, कौन?

सज्जाद—हलीमा। क्यों, तुम उसे जानते हो?

अब्बास—जी हां, जानता हूं। मगर आप अभी सब हाल कह जाइये पीछे मैं भी सब हाल सुनाऊंगा।

सज्जाद—गरज वह उसी हलीमासे फँसा हुआ है। वह बदकार भी उसके यहां जाने आने लगी। आहिस्ते आहिस्ते यह बात और और जगह भी फैलती चली। जब हमने एक दिन पूछा कि "तुम उस फाहिशाके यहां रोज क्यों जाती आती हो? तो उसने कुछ जवाब न दिया मगर बहुत देरतक हमारे मुँहकी तरफ टकटकी बांधे देखती रही। मुझसे गुस्सा न सम्भल सका। मैंने साफ उसके मुंही पर कह दिया कि "तुम भी वैसीही हो। सबही लोग

तो ऐसा कहते हैं।' यह सुनके वह कुछ देरतक रोई, और फिर दूसरे दिन किसीसे वे कहे सुने घरसे चली गई। पांच रोजके बाद मुझे खबर मिली कि दर्यामें डूबके मर गई। इस खबरको सुनके मुझे भी बड़ा अफसोस हुआ। क्योंकि कैसीही क्यों न हो लेकिन हमलोगोंको बेचारी जीसे प्यार करती थी।

अब्बास—उसकी बदकारीका एक आध सबूत और भी आपने मालूम कर लिया होता। क्योंकि वह हलीमा जिसका आपने अभी नाम लिया है, जितनी बदनाम है, दरहकीकत उतनी बुरी नहीं है। हमारे बारेमें शमशेरबहादुरकी दगाबाजीका हाल उन्होंने मुझसे कहा था। इसके अलावे तौर तरीकेसे तो मुतलक बुरी नहीं मालूम होती। पस मुझे तो यह यकीन नहीं होता कि उन्होंने अपनी खुशीसे यह फाहिशापन इख्तियार किया हो। खैर इस बातको जाने दीजिये, यह तो बतलाइये कि आपके वालिदने क्या अपनी सब मईशत आपकी सौतेली माके नामसे लिखदी थी?

सज्जाद—अफवाहन तो योंही सुनता हूं मगर मुझे यकीन नहीं होता।

अब्बास—मैंने सुना है कि उसी वसीलेसे शमशेरबहादुर आप पर नालिश करनेवाला है। यह हाल हलीमा मुझसे—

नरसिंह और हैदरका प्रवेश।

नरसिंह—देखनाही तो है कि मियां सज्जाद आज कहांतक बहस करते हैं। भला इतना लड़कपन!

हैदर—भाई, इसे लड़कपन कहते हैं? अजी यह दीवानेपनमें दाखिल है।

हेमचन्द्रका प्रवेश।

नरसिंह—कहां चले?

हेमचन्द्र—शोभामें। आपलोग?

हैदर—चलिये, हमसबभी वहीं जाते हैं।

नर०—आज आप किस तरफ हैं?

हेम०—हाम किशी तारफ नाई है, हम शाच बातकी तारफ है।

नर०—तब भी इस बारेमें आपकी राय क्या है?

हेम०—हाम राय टाय कूच नाई बूझता है। विज्ञानका बढ़न्ती कोरा एही मानुषका आशल काम है। ई बात हो जानेशे आदमी जैशा चाहे वैशा करे। हामको ईशमें कूच उजूर नाई है। ईशक आर नाईशक हामारा नजदीक दोनों बराबर हाय। वैज्ञानिक शभामें एशा एशा बातका होना देनाही खाराप हुआ। शेरेफ शमय नष्ट कोरा हाय आर लाभ क्या?

[सज्जादका प्रवेश।]

हैदर—अरे आओ, आओ, सज्जाद। तुम्हाराही जिक्र तो होरहा था। चलो चलो हम सब भी अंजुमनही जाते हैं। खैर तुमने जो उस रोज सब-इन्सपेक्टरको मारा था उसका क्या हुआ?

सज्जाद—होगा क्या? अङ्गरेज मुद्दई और हिन्दुस्तानी मुद्दाअलेह होनेसे जो होता आया है वह हुआ। मुझपर २००) रुपया जुरमाना किया गया। तमाशा यह कि पहले उसीने मारा था। मैंने अपीलकी दरख्वास्त की है, देखिये क्या होता है?

नर०—"अङ्गरेजोंकी सल्तनत" नाम एक आर्टिकल जो "चश्मये फैज" में छपा है, वह क्या तुम्हाराही लिखा हुआ है?

सज्जाद—क्यों?

नर०—सुनता हूँ, उसके लिये गवर्नमेण्ट तुम्हारे नामसे नालिश करनेवाली है।

सज्जाद—जुर्म?

नर०—बगावत और झूठ तुहमत।

सज्जाद—(मुस्कुराके) अच्छा, समझ लूँगा।

हैदर—नहीं, नहीं, फिलहकीकत जरा होशियार रहना।

हेम०—आर देखिये आपका ए कोशिश एक रकमशे बेफायदा हाय। विज्ञानका तारक्की होनेईशे देशका तारक्की होगा।

सज्जाद—ऐ लो, फिर आपने वही पुराना झगड़ा निकाला।

नर०—हमारे यहां जोरूको "अर्द्धाङ्गी" याने "अपना आधा बदन" कहते है, और सच पूछो तो बात भी यों ही है। सो देखो हरचन्द तुम्हारा सवुसद नेक है, और तुम्हारी अक्ल भी तेज है, मगर (हंसके) चूँकि तुम्हारा "आधा बदन" ही गायब है, इसीसे तुम सब बातोंको अच्छी तरह समझ नहीं सकते।

सज्जाद—आज बहसमें अगर तुमलोग मुझे हरा सके, तो तुम ही लोगोंपर हमारे लिये एक "अर्द्धाङ्गी" चुननेका भार दिया जायगा।

हैदर—इनशाअल्लाहताला।

न०—बहुत खूब, मंजूर है।

सज्जाद—विलायत फर्माइश भेजोगे क्या ?

हैदर—भला पूछो तो, झाड़, फानूस, घड़ी, कलकी तरह फरमाइशी बीबियां विलायतसे बकसोंमें बन्द हो होके आतीं तो फिर झखना किस बातका था ?

नर०—क्यों, हेमबाबू आप अपने विज्ञानके जोरसे कोई तरकीब इसकी नहीं निकाल सकते ? एक आध बन्दरोंको पकड़कर सुन्दरी नहीं बना सकते ?

हेम०—हामलोग दांदोरका लेड़का वाला है, ई बात ठो आप लोग बूझता नेई है, इशी वास्ते इश रकम ठाट्टा कोरता है। आप लोग जोटी मन देकर शुनिये तो आबी हाम आपको अच्छी तारह शे वूझाय देने पारेगा।

सज्जाद—चलिये, चलिये, वक्त होचुका।

[सबका प्रस्थान।

शमशेरबहादुर और घसीटाका प्रवेश।

शमशेर—मैंने छिपे छिपे इस बातका पता लगाया है कि वह पटनेहीमें हमेशा रहता है। कभी कभी बरस छः महीनेमें एक आध बार मकान जाता है। खुदाके फज्लसे यह भी हमलोगोंके एक गौं होकी बात है।

घसीटा—बड़ी बड़ी मुश्किलोंसे छः आदमी जुटे हैं। मगर कोई भड़वा अगुआ होना नहीं चाहता। कहते हैं कि आदमीका चुराना ठहरा, कुछ ठट्ठा है?

शमशेर—डर किसका है? अजी, मैं पानीकी तरह रुपये बरसाऊंगा। रुपयेसे क्या नहीं होता?

घसीटा—हां और क्या, यह तो ठीकही है। और असल बात भी यही है कि वहलोग कुछ और वेशी मांगते हैं।

शम०—कितना?

घसीटा—आदमी पीछे पचास पचास रुपया। और दस आदमी जुट जायें तो बहुत हैं।

शम०—कुछ—जियादे—होता—है। खैर वही सही। मगर भाई जरा जल्दी करना चाहिये।

घसीटा—सो आपको कहना नहीं पड़ेगा। एक हफ्तेके भीतर छोकड़ियाको लाके आपके सामने खड़ा करदें तब आप रुपया दीजियेगा, नहीं तो एक पैसा लें तो वह मेरे लिये हराम है।

शम०—(खुश होकर) अः, ऐसा जो कर सको, भाई, तो फिर क्या कहना है? आओ रुपया लेजाओ।

[दोनोंका प्रस्थान।

चौथी झांकी।

पटना, मुरादपुर, सायण्टिफिक ऐसोसिएशन।

सज्जाद—(वक्तृता पढ़ रहा है।) इस बारेमें जियादा और मैं कुछ नहीं कहा चाहता। और सच पूछिये तो अब और कुछ कहनेको है भी नहीं। मखसूस अंजुमनका और आपलोगोंका वेश-कीमत वक्त जाया करानेका मुझे कोई इख्तियार नहीं। ऊपर जो

कुछ कह आया हूं, उससे साफ जाहिर है कि दुनियामें सब तरहकी बुराइयोंका गोया चश्मा वही, वही मनहूस इश्क है। ऐसी और कोई बात नहीं है, ऐसी कोई चीज नहीं है जो इनसानको हर तरहके लामहदूद खतरे आफत और मुसीबतोंका शिकार बनाती हो जैसा कि इश्क बनाता है। (तालियां बजती हैं) सिर्फ इश्क फासिकही—जिसे लोग बुरा समझके नफरत करते हैं—सिर्फ इश्क फासिकही नहीं बल्कि हर तरहका इश्क ख्वाह वह फासिक हो या सादिक हर तरहकी बुराइयोंकी वजह और जड़ है। पस अक्लमन्दोंको लाजिम है, खासकर अंजुमने-साइण्टिफिक ऐसोसिएशनके मेम्बरोंको, कि अपने अपने दिलोंके किलओंको ऐसा मजबूत बनाये रखें कि इस हेवाड़ दुश्मनको उनपर दाख न गलने पावे। किसी शाइरने खूब कहा—

"क्या मैं इस काफिरे बदकेशका अहवाल कहूं,
यही खूंखार पिया करता है आशिकका खूं।
जार कर देता है इन्सानको यह और जबूं।
रफ्ता रफ्ता यही पहुंचता है नौबत बजुनूं।
यही खूंरेज तो खूंखार है इन्सानोंका,
दीन खोता है यह, काफिर हो मुसल्मानोंका।

———

"यही करता है हर एक शख्सको रुसवा, जालिम,
यही करता है हरएक चश्मको दरया, जालिम।
कोह दिखलाता है राहें, गहे सहरा, जालिम।
क्या बताऊं तुम्हें करता है यह क्या क्या जालिम?
दरबदर खाक बसर, चाक गिरीबां करके,
जान लेता है वले बेसरो सामां करके।

———

"यही लानी तो जुलैखाकी भी था खारीका,
यही बाइस दमनो नलकी हुआ यारीका।

"इसने मजनूंसे बनाये हैं बहुत दीवाने,
यही फर्हादके हामी था तबरदारीका,
इश्क कहिये न इसे क़हर है यह बारीका।
तल्ख कामी हुई, शीरींको इसीसे हासिल,
किये बेपर्दा औ बरबाद हजारों महमिल।

इसने खुदरफ्तगीमें अपने किये बेगाने।
गोकि मशहूर जहां इसके हैं सब अफ्साने,
पर जो इस कामका मश्शाक़ हो वोही जाने।
कभी माशूकके पर्देमें निहां होता है,
कभी सर चढ़के यह आशिकके अयां होता है।

"एक शिम्मा है लिखा हाल जो मैंने इसका,
जिसपे इस देवने अल्ताफका साया डाला।
दश्ते गुर्बतमें वह आवारः औ सरगश्ता हुआ,
दोस्त भी छूटते हैं, शहर भी छोड़े अपना।
पास जिसके यह गया, खल्कसे वह दूर हुआ,
कौनसा शीशयेदिल था कि न वह चूर हुआ ?

इस शजरे इश्कके जहरीले फल ऐसी कसरतसे लगे हैं उनका शुमार तसव्वुर भी नहीं कर सकता। बाजे बेवकूफ समझते हैं कि खालिस इश्क गोया खानयेखुशी है, बल्कि जीनये मजहब है, मगर सच पूछिये तो खालिस हो या कोई हो इश्क गुलामी या नफ्सपरस्तीका दूसरा नाम है। (तालियां बजती हैं) इश्क इन्सानियतको गायब कर देता है, खुदाने जिन हवासोंको इन्सानके दिलोंमें मुल्ककी भलाईके लिये पैदा किया है, उन्हें यह इश्क सिकुड़ाये डालता है, और हुब्बे-वतनको तो एकबारगी इन्सानके दिलसे नेस्तोनाबूदही कर छोड़ता है। जियादे और

क्या कहें, इन्सान, जिसे खुदाने अशरफुल मख्लूकात पैदा किया है, उसे यह शैतान हैवानसे भी बदतर बना छोड़ता है। जिस इश्कके ऐसे ऐसे नतीजे हैं, वह इश्क क्या, हम आपही लोगोंसे सवाल करते हैं, खानयेखुशी या जीनयेमजहब होसकता है? (कभी नहीं, कभी नहीं।) पस अगर हमलोगोंमें कुछ भी इन्सानियत है, अगर इस अंजुमनके फायदोंने कुछ भी हमलोगोंके दिलपर असर किया हो, तो आइये सबके सब एक दिल होकर वादा करें कि जबतक अक्ल सावित है, तबतक कभी भूले भटके भी इश्ककी राहके मुसाफिर न होवें, कभी इस हकीर दुश्मनकी गुलामी न कबूल करें—कभी नहीं, हरगिज नहीं, मरनेपर भी नहीं। (तालियां बजती हैं, और सज्जाद बैठता है।)

पहला मेम्बर—हजरात, मौलवी सज्जादहुसैन साहिबकी तहरीर निहायत उम्दा और दिलचस्प हुई है। पस मैं तहरीक करनेकी इजाजत मांगता हूं कि उनको हमलोगोंकी गर्म शुक्रगुजारी दी जावे। (तालियां बजती हैं।)

दूसरा मेम्बर—मैं जीसे इस तहरीककी ताईद करता हूं। मगर इस बातको वेकहे नहीं रह सकता कि तहरीक अंगरेजी तौरकी न होकर अपने हिन्दुस्तानी तौरकी होती तो क्या अच्छा होता? "गर्म शुक्रगुजारी" का क्या मतलब? (हंसी, और तालियां बजती हैं।)

नरसिंह—दूसरोंका दोष ढूंढ़ना यह भी मनुष्योंका एक स्वाभाविक धर्म है। पहले वक्ताकी भाषा दोषवर्जित थी, यह मैं नहीं कहता परन्तु दूसरे वक्ताको क्या पूरा विश्वास है कि उनसे कोई वैसीही भूल नहीं हुई? अङ्गरजीमें एक कहावत है कि "जो शीशे के बने मकानमें रहते हैं, उन्हें दूसरोंपर ढेले नहीं चलाने चाहियें।"

मौलवी सज्जादहुसैन साहिब धन्यवादके योग्य हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं। परन्तु उनसे मैं एक बात पूछता हूं—केवल एकही बात। माना कि प्रीति बुरी वस्तु है, और विज्ञानकी सहायतासे

इन्द्रिय-संयम भी कर ले सकते हैं, परन्तु ऐसा होनेसे ईश्वरकी सृष्टिकी रक्षा क्योंकर होगी? विज्ञानकी उन्नतिका या सभ्यताके फैलनेका फल क्या यही हुआ कि मनुष्य निर्वंश होजावें? आदमी की सूरत इस पृथिवीमें न देख पड़े? (तालियां बजती हैं।) फिर विज्ञानकी सहायतासे ईश्वरकी दी हुई इन्द्रियोंका दमन होना क्योंकर सम्भव है? यह बात तो हमारी छोटी बुद्धिमें नहीं समाती। (तालियां बजती हैं।)

सज्जाद—बाबू नरसिंह सहायके सवालके जवाबमें इतना कहना काफी होगा कि विज्ञानकी तरक्कीकी हद नहीं है। मुमकिन है कि विज्ञानकी मददसे बगैर ब्याह शादी कियेभी बेटाबेटी पैदा करसकें। मैंने सुना हैं कि नामी फ्रान्सीसी हकीम कोम्टकी भी यहीराय है। मगर जब तक कि विज्ञानकी मददसे आदमी बना लेनेकी कोई हिकमत नहीं निकलती, तबतक, बड़े अफसोसकी बात है—जिस प्रकार किसी मरजको दूर करनेके लिये कड़वी दवायें खाते हैं, वैसेही ब्याहके जञ्जालमें फंसना पड़ेगा। ब्याह करो, मगर ऐशकी नजरसे नहीं—इश्‌ककी नजरसे नहीं—सिर्फ फर्ज अदा करनेकी नजरसे। अगर आंखें हमारी इस बातमें दुश्मन हों, तो उन्हें फोड़ डालेंगे, अगर दिल हमारा दुश्मन हो तो उसे तलवारसे दोटुकड़े कर डालेंगे। अगर इतना भी न हो सका तो फिर हम लोगोंकी तालीमका क्या नतीजा निकला? अगर दिलकी एक अदना ख्वाहिश न रोक सके तो तुफ है हमलोगोंकी जिन्दगीपर, तुफ है विज्ञानको, तुफ है हम लोगोंकी इस अंजुमनको। (तालियां बजती हैं।)

हैदर—(आपही आप) देखना हो तो है कि यह घमण्ड कब तक निभता है।

सभापति—(चश्मा लगाके खड़े होके और चारों तरफ देखके) सबके कहनेसे जाना गया और सचमुच मौलवी सज्जादहुसेन की लिखावट बहुतही चोखी और खरी हुई। इस लिये मैं सब मेम्बरोंकी ओरसे उनका गुन गाता हूँ। (तालियां बजती हैं।)

मगर मौलवी सज्जादहुसैन साहिबको मैं चिता देता हूं कि आगे और कभी अंजुमनमें कोगट साहिबसे आदमियोंका नाम न लिया करें। जो आदमी 'करतारको नहीं मानता उसके नाम लेनेसे पाप होता है, सुननेसे भी पाप होता है। (तालियां बजती हैं।)

अब मैं आप, लोगोंसे एक दो बातें दोस्ताना नसीहतके ढङ्ग पर कहता हूं; आपलोग कान धरके जी लगाके सुनें। इन महीन बातोंको मैंने बहुत दिनों तक सोचनेके बाद बड़ी बड़ी मुशकिलोंसे निकाला है। इस सभाके सब मेम्बरोंको चाहिये कि ऊपर मुंह किये चला करें।—इस ढङ्गसे।—क्योंकि हम लोगोंका मन सदा ऊंची ऊंची बातोंके सोच विचारमें व्याकुल रहता है। ओछी और छोटी बातें हमलोगोंके मनमें नहीं पैठने पातीं। और हमलोगोंको चाहिये कि मनका सब सोच विचार बाहर खोला करें, नहीं तो हमलोग कपटी कहलायेंगे। दूसरी बात यह है कि हमलोग गहरे सुभाव के हैं। कहिये कि हमलोग सदा गहरी बातों पर सोच विचार किया करते हैं, इस लिये हमलोगोंको चाहिये कि सदा धीर और चुप चाप होके चला करें। यानी चलते वक्त दोनों हाथ न हिलने पावें, पञ्जरोंसे सटे रहें।—इस ढङ्गसे—। तीसरी बात यह है—इस धरतीसे हमलोगोंका थोड़े दिनका नाता है इसलिये चाहिये कि धरतीसे जितना अलग रह सकें उतना रहें। सारे पैरको धरतीपर रख देना नहीं चाहिये। अङ्गूठे पर भार देके चलना चाहिये।—इस तरह—!——आज रात जियादे होगई। आनेवाली सभामें इसी बातको अच्छी तरह खोलके कहेंगे। अब सभा तोड़ी जाये, और जो लोग हमारी राय भली समझते हैं, उनको चाहिये कि जो बातें मैं कह आया, उनका आजहीसे बर्ताव करें।

(सभापतिको धन्यवाद देके सभाका उठना। सभापतिके पीछे पीछे चार आदमी ऊपर लिखे अनुसार चलते हैं और ठेसके लगनेसे गिर पड़ते हैं।)

सभापति—एक गहरी बातके सोच विचारमें डूबा था। इस छोटी धरतीको छोटीसी चीजकी ठोकरसे गिर पड़ा। कुछ भी अचंभेकी बात नहीं। इस अंधियारे संसारमें जिन जिन आदमियों ने विज्ञानका चांदना फैलाना चाहा है, सबहीको इस इस तरहकी तकलीफें उठानी पड़ी हैं। इस राहका यही इनआम है।

(उठ कर फिर वैसाही चलते हैं।)

[सज्जादके सिवा सबका प्रस्थान।

[हुसैनी का प्रवेश।]

सज्जाद—क्या है रे यहां क्यों तू आया है ?

हुसैनी बिहारसे एक आदमी ई चीठी ले आइस है ! दीवानजी भेजिन हैं और कहिन हैं कि जैसे पहुँचोगे वैसेही मियांके हाथमें दीजियो, घरपर क्या जो होगया है।

[चिट्ठी देकर प्रस्थान।

सज्जाद—(चिट्ठी पढ़कर) खतमें तो कुछ भी साफ नहीं लिखा है। मालूम हुआ, कुछ है वै नहीं, हमें बुलानेकी यह तरकीब है। मैं वहां इस वक्त किसी तरहसे नहीं जा सकता। मुझे आजकल यहां वहुत काम हैं। (सोचके) यही सलाह ठीक है। अब्बासको वहां भेजदूं। उसे खुद भी बिहार जानेकी जरूरत है। हलीमाने उसे बुला भेजा है। (चीठीका फिर पढ़ना।) सुम्बुल और गुलशनको बहुत दिनोंसे नहीं देखा है। उन लोगोंको ओर बड़ा जी लगा है। एकबार जरा उन्हें देखही आया होता।

[प्रस्थान।

चौथा अंक ।

पहली झांकी ।

बिहार, अरवर, सज्जादहुसैनका जनाना मकान ।

सुम्बुल और गुलशन बैठी हैं ।

सुम्बुल—(चिट्ठी पढ़ती है ।)

बांकीपुर,

२३वीं फरवरी, १८७४ ई० ।

सुम्बुल,

मियां अब्बासके हाथ यह खत भेजता हूं । इनका किस्सा इनहीकी जबानी सुन लेना । इनसे लिहाज शर्मकी हाजत नहीं । इन्हें नेकीका पुतला कहें तो बजा है । निहायतही खलीक शाइस्ता और नेकमिजाज हैं । चालचलन निहायतही पाक है । इनको ठीक हमारे छोटे भाईके बराबर मानना । दूसरा न समझना ।

तुम्हारा खैरख्वाह

सज्जादहुसैन ।

(हंसकर) तुम्हारे भइया जहां जाते हैं, वहीं उनको भाई बहन मिल जाया करते हैं । ए मामा आ ।

नेपथ्यसे—जी पहुँची ।

[दाईका प्रवेश ।]

सुम्बुल—ए मामा, जो यह खत लाये हैं, उनको अपने साथ अन्दर ले आओ ।

दाई—बीवी, ऊ को हैं ?

सुम्बुल—(मुसकुराके) वह मियां सज्जादके रिश्तेमें भाई होते हैं ।

(दाई गई, और अब्बासको लेकर लौट आई।)

सुम्बुल—आइये, यों तशरीफ लाइये। (दाईसे) मामा, तुम जरा इनके नाश्तेका सामान कर दो।

[दाईका प्रस्थान।

सुम्बुल—आप खड़े क्यों हैं, बैठ न जाइये। (अब्बास बैठ गया।) रास्ते में आपको किसी बातकी तकलीफ तो न हुई?

अब्बास—जी नहीं।

गुलशन—(सुम्बुलसे—धीरे धीरे चिट्ठी पढ़ती है।) "इनको ठीक हमारे छोटे भाईके बराबर मानना। दूसरा न समझना। इनसे लिहाज शर्मकी हाजत नहीं। भइयाका पर्वाना आया है। हमारी बलइया सुनती है। जिसको चाहेंगे उसको छोटा भाई बना बनाकर भेज देंगे, और हमलोग भी उनसे लिहाज शर्म न रखा करें तो जगह चाहिये। आपा तुमही उनसे बोलो, मुझको तो उनसे बातचीत करते शर्म मालूम होती है।

सुम्बुल—(हंसके धीरेसे) वल्लाह, वह जो कहते हैं, सो हकीकत में सच है, तुम वाकई खब्ती हो।

गुलशन—(धीरेसे) जी रहने दीजिये, तुम्हारे तशरीह करनेकी जरूरत नहीं। तुम्हारी बलासे, मैं खब्तीही सही।

(कलेऊ लेकर दाईका प्रवेश।)

(सुम्बुल और दाई दोनों मिलकर दस्तरखान आदि बिछाती हैं।)

[दाईका प्रस्थान।

सुम्बुल—आइये, थोड़ा नाश्ता कर लीजिये।

(अब्बास बैठता है।)

सु०—ऐ है, आप शर्माते क्यों हैं? हम दोनों आपकी बहन हैं, या कोई दूसरी हैं। देखिये, देर न कीजिये। आइये बिस्मिल्लाह कीजिते।

गु०—(सुम्बुलकी तरफ धीरेसे) तुम्हारा जी चाहता हो, तुम बहन बनो, खुदाके लिये मुझे क्यों सानती हो?

सु०—भला मुझे क्यों नाहक बदनाम करती हो, भाईपर चाहो जितना खफा हो लेना। (अब्बाससे) माजअल्लाह, यह आप इतनी तकलुफ क्यों कर रहे हैं ?

अब्बास—(शर्मांके) आप मुझे "आप" "आप" कहती हैं, इसीसे मैं शर्मा रहा हूं।

सु०—(मुसकुराके और अब्बासके पास बैठके) अच्छा भाई, खाओ। लो अब तो हुआ न ? (गुलशनसे) जरा तुम भी तो कहो, शायद तुम्हारी बात मानलें।

गु०—(मुंह नीचा करके और शर्मांके) खाइदे।

सु०—सो नहीं, कहो "जरा खा लो।"

गु०—(शर्मांके आधा कहना) "जरा खा—"

अब्बा०—(जोमें) माशाअल्लाह, यह कैफियत मैंने कभी नहीं देखी। कहां ये और कहा मैं। समझता था कि औरतें पढ़ लिख कर मगरूर होजाती हैं। (खाता है।)

सु०—आज ये राहके थके मांदे होंगे। इस वक्त, इन्हें तकलीफ देना लाजिम नहीं। कल इनका सारा किस्सा सुन लेंगे। चलूं, इन्हें सोनेकी जगह बतला आऊं।

अब्बा०—अभी तो शामही हुई है। जरा मैं टहलने जाऊंगा।

सु०—बेहतर, जो चाहे घोड़ा कसवा लो। लौटोगे कबतक ?

अब्बा०—घंटे दो एकके बाद लौट आऊंगा।

[अब्बासका प्रस्थान।

[दाईका प्रवेश।]

दाई—बीबी, दीवानजी कहिन हैं कि हम तो चिट्ठी भी लिख चुके, पर तब भी मीयां न आये, अब हम क्या करें। और कहिन हैं कि हमारे लिखेसे नहीं आवें हैं, तो एक बेर तुम सब भी लिखके देखो। बीबी समसेरबहादुरका हाल जो आदमी सब आ आके कहें हैं, ऊ सुन सुनके तो हमारी छाती उड़ी जाये है। उनके हियां का जो २०. २५ बदसाश सब पटनेसे आ आके नौकर रहे हैं।

गु०—मामा, क्या सचही ? आपा, मुझे तो बड़ा डर मालूम होरहा है।

सु०—गुलशन डरकी बात भला कौनसी है ? अरे नव्वाबी तो कुछ अब है नहीं, योंही कोई किसीको लूट ले। अंगरेज बहादुर का राज है, क्या मकदूर कि कोई किसीकी तरफ उंगली दिखा सके।

दाई—बीबीकी बात ! गांव गंवईमें अब भी जमींदार इतना जुलुम करे हैं, कि सुनो तो तुमरा बदन सिहर उठे। बीबी अख्यायें का हाल सुनोगी ? हमारा नइहर तो हुईं न है। वहांके—

सु०—मामा, मैं सुन चुकी हूं, तुमहीने तो उस दिन कहा था। (मुसकुराके) भला तब भी डर क्या है ? आखिर मियां सज्जाद भी तो जमींदार हैं ?

दाई—सो क्या बीबी, पांचो अंगुलीका बरोबरे होये है ? हमरे सज्जाद मियांके ऐसे या बरबीघाके सुरूजकुमार बाबूके ऐसे कैठो जमींदार हैं ?—सो जो होय, बीबी, तुम भी एक चिट्ठी लिखके देखो। देखो ऐसा करो, जिसमें मियां जल्दी आवें।

सु०—अच्छा। (जीमें) नेकी और पूछ पूछके ?

[सबका प्रस्थान।

दूसरी झांकी।

बाग।

(अब्बासका प्रवेश।)

अब्बास—हलीमाने आज मुझे यहां बुलवा भेजा है। उन्हें कोई जरूरी बात कहनी है। अल्लाह कौनसी जरूरी बात है ? यहांसे खानकाह डेढ़कोसके अन्दाज होगा, मैं तो हैरान हूं कि वह

आवेंगी क्योंकर? शमशेरबहादुरको तो जरूर मालूम होजावेगा। (इधर उधर टहलना।) अभी आठ नहीं बजे होंगे। (चारों तरफ देखके) सारी दुनियामें इस वक्त सन्नाटा छाया है। अहा, चांदकी किरनोंसे सारा मैदान चांदीसे पिटा हुआ मालूम होरहा है। ये दरख्त हैं कि शाखें इनकी चांदीसे गोया मढ़ीं हैं। वह रेत है कि झलगही चमक रही है, गोया कि सोने चांदीके जर्रे उसमें छिड़क दिये हैं। हवाके झोंके जो पत्तोंमें लगते हैं तो ठीक ऐसा मालूम होरहा है गोया कोई लड़का तोतली तोतली बोलियां बोल रहा है।—अहा, वह देखो, कोई बैपारी, जो अपने साथियोंसे छूट गया है, बैलोंको टखटखाता और गाता चला आता है। इधर धोबी अलग गधोंपर पोट लादे तान लगाता चला जाता है।—वाह, हवा तो एक अजीब कैफियत दिखला रही है। यह तो गोया मुझसे बातें करती है। हैं, हवाने हमारे दिलकी बातें क्योंकर जानलीं? माशाअल्लाह यह तो गोया मुझे नसीहत कर रही है कि "लड़के, यह क्या तू लड़कपन करता है? कहां वह, और कहां तू? छोड़ दे, उस ख्यालको।" वाकई हमारी यह बेवकूफी है। वही मसल है कि "झोंपड़ियोंमें रहना और महलोंका ख्वाब देखना।"

[एक डोली लिये गाते हुए चार कहारोंका प्रवेश।]

[हलीमाका प्रवेश।]

अव्वाल—आइये, मैं घण्टोंसे आपके मुन्तजिर खड़ा हूँ। भला यह तो कहिये, आप आईं क्योंकर? शमशेरबहादुरको तो जरूर मालूम हुआ होगा।

हलीमा—उसे एक नया शगल मिल गया है, इस वक्त वह उसी के पीछे दीवाना है! हमारी खोज खबर नहीं करेगा।

अ०—शायद, अगर खोज करे?

हलीमा—करने दो, हमारी बलासे। (भीषण स्वरसे) यह हालत कबतक रहेगी? उसकी छातीका लहू न चूसा, उसे मिट्टीमें घुलटा घुलटाके न मारा, तो नाम क्या?

ह०—(डरसे) क्यों, क्यों, उनपर इतनी खफगी क्यों ?

ह०—चाहते हो, इतनी खफगी क्यों ? तुम तो, बेटा, अभी लड़की हो, क्या जानोगी ? औरतें मुहब्बत करना जानती हैं, बल्कि मुहब्बतके पीछे अपना सर्वस्व छोड़ दे सकती हैं, मगर बिगड़ीं तो फिर अल्लाहकी पनाह ! ऐसी बिगड़ती हैं, ऐसी बिगड़ती हैं कि अगर मल्कुलमौत हो तो वह भी एक बार थर्रा जाये। बेटा, पूछते हो इतनी खफगी क्यों ?

अ०—(जोसें) अल्लाहोगनी, यह गुस्सा ! (प्रकाश्य।) मियां शमशेरबहादुरने क्या आपका बिगाड़ा है ?

ह०—कुछ बिगड़ा है ? बिगाड़ना और अब किसे चाहते हैं ! ऐ लो सुनो। हमारे शौहर जिस वक्त जिन्दा थे उसी वक्त यह गुनहगार मुझको अपने नजरों पर चढ़ा चुका था। उनके सामने तो इनकी कुछ दाल न गलने पाई। और मियांके जिन्दे रहते (रोके) औरतका बिगड़ना भी दुशवार है। सदहैफ (रोके) वह मुझे बहुतही प्यार……। जबकि इस कमबख्तने देखा कि हमारे शौहरके जीते रहते मुराद बर आनेको नहीं तो क्या किया (रो रोके) कि किसी तरह उन्हें कतल करवा डाला। जब दो दिन तक वह हमारे पास नहीं आये तो हमारे कान खड़े हुए। तबियत बेतौर घबराई, आदमियोंको इधर उधर भेजा, तमाम तलाश करवाया- पर पता कहांसे लगे ? हों तब तो ? तीन दिनके बाद सुना कि ११ बजेके वक्त एक पोखरेमें उनकी लाश पाई गई। (रोना) मैंने जो सोचा था, वही बात आखिर पेश आई। अब क्या करूं, करम ठोंकके बैठ रही। सुनती हूं घसीटा वसीटा नाम कोई बदमाश है उसीने मारा था। निगोड़ा थाना फौजदारी भी गरीब होके लिये है, बड़ेआदमियोंका कुछ नहीं होता। आखिर ये अभी तक बचे हुए ही न हैं। इसके आठवें महीने रमजानका महीना आया। उन्नीसवीं तारीखको कि जिस दिन मैं रोजोंसे बहुतही कमजोर होगई थी, तीन बजेके वक्त एकाएक हमारे रूबरू आप

मारके बुड्ढे होगये। दाइयोंको रुपये उपये देकर अपने अखतियारमें कर रक्खा होगा। मैंने लाख पुकारा पर किसीने जवाब न दिया। कितना रोई, कितना गिड़गिड़ाई पर कौन सुनता है। "चोर दूने बरसकी कहानी।" एक तो औरत दूसरे रोजोंसे कमजोर कहां-तक क्या करती? बचनेकी जब कोई तदबीर न सूझी, तब मैंने यह सोचा कि गलेमें फांसी लगाके मरजाना बेहतर है। मगर हत्यारेने वह भी करने न दिया। तब मैंने चाहा कि खाना तो अपने अखतियार है, न खाऊंगी, दो तीन रोजतक बराबर भूखी रहूंगी, बस मर जाऊंगी। मगर उस गुनहगार दोजखीसे कौन बच सकता है? जबरदस्ती चमचोंसे दूध पिलवा देता। जब मैं कुछ कहती तो हंसके उड़ा देता और खूबसूरत मुंह बनाके कहता कि "नाजनीं, तुझे मैं दिलोजानसे प्यार करता हूं।" इसी तरह १०, १५ दिन गुजरे, तो मैंने यह सोचा कि अब हमारी पाकदामनीमें दाग तो लगही चुका, अब नाहक मरनेकी तदबीर क्यों करूं। मगर मैंने अपने जीमें उसी वक्त वादा किया था (दांतपर दांत मसमसाके) कि आज हो या कल, एक रोज न एक रोज, इसके खूनसे मैं जरूर नहाऊंगी। उसी वक्तसे मैं घातमें लगी हूं।

अ०—(जीमें) गुस्सेकी यह वजह है।—तब तो शमशेरबहादुरको यह मारेगी जरूर, देखा चाहिये कब मारती है, मगर वह बदमाश हो चाहे कुछ हो उसे मारने देना मुझे लाजिम नहीं। उसीने हमारी परवरिश की है। उसे एक गुमनाम खत लिखके होशियार कर देना मुनासिब है। मगर ऐसा लिखना चाहिये कि इसपर कोई आंच न आने पावे। इसी मुझपर एतमाद है।

ह०—मैं अब रुखसत होती हूं, रात जियादा आगई। जबसे उसने तुम्हारा वह खत पाया है, बेतौर घबरा रहा है। होशियार रहना, मियां सज्जादको भी होशियार रहनेको कह देना। यह तो मैं खूब जानतीं हूं, कि तुमलोगोंका वह कुछ नहीं कर सकेगा, पर

तब भी मसल मशहूर है कि जागतेको किसी बातका डर नहीं। खैर तो मैं अब जाती हूँ।

[अब्बासके सलामका जवाब देके गई।

अब्बास—अब वह हमारा क्या करेगा। हमें तो अब उसीकी फिक्र पड़ी है। अब मैं भी चलूं, न मालूम जीमें वे क्या कहती होंगी, कि क्यों इतनी देर हुई।

[गया।

तीसरी झांकी

पटना, मुख्तारका डेरा।

[शमशेरबहादुर और घसीटाका प्रवेश।]

शमशेर—सनीचरके रोज़ रातको, ठीक ११ बजे। मैं साथ नहीं जा सकता। शायद कोई पहचान ले, समझे न? तुमलोग दो गोल बांधके जाना। एक गोल जाके सदर दरवाजा घेर लेना, और उसी तरफसे हेल जाना। और दूसरा गोल मकानके पीछे सीढ़ी लगाके चढ़ाई करे, और छप्पर फांद फांदके अन्दर घुसे। इतने बखेड़ोंकी कुछ जरूरत न थी, मगर फिर भी जो कुछ किया उसे पक्काही करके किया। और देखो उन गोरोंको जो मुकर्रर किया है, वह भी साथ रहें। वह कुछ करें चाहे न करें, पर उनके साथ रहनेसे बड़ा काम निकलेगा। सुफेद मुंहको देखतेही काले हिन्दुस्थानी फौरन डर जाते हैं।

घसीटा—वह राजी हों तब न?

शम०—दुर बेवकूफ, अङ्गरेजकी जात है या कोई और है?

रुपये हों तो चाहो इनकी जातकी जात खरीद लो। रुपयेहीके लिये न ये सात समुन्दर पार उतरके यहां आये हैं।

वसी०—तो फिर क्या कहना है?

गम०—सर्वे हथियारसे मुस्तैद होके जाना।

वसी०—गोरे भड़ुओंके हाथमें क्या देंगे?

गम०—उनके हाथमें कुछ भी न रहे तो कुछ मुजायका नहीं। अरे वह तो आपही एक एक आदमी एक एक भैंसेकी बराबर हैं।

वसी०—और काम पड़े तब?

गम०—काम पड़े तो एक तलवार दे देना। मगर खूब समझ बूझके। कहीं ऐसा न हो कि उलटे तुमही लोगों पर हाथ साफ करने लगें। खैर, तुम अब इस वक्त जाओ, कल सवेरे जरा फिर मुलाकात करना।

वसी०—बहुत खूब।

[सलाम करके गया।

गम०—इधरकी बात भी पक्की कर लें। अरे हुसना-आ-आ।

नैपथ्यसे—जी-ई-ई।

गम०—अरे मुख्तार साहिब कचहरीसे आये?

नैपथ्यसे—जी हां, आये।

गम०—इधर भेज तो दे।

[हेमनलाल मुख्तारका प्रवेश।]

(सलाम बन्दगीका होना।)

गम०—कहिये, मुख्तार साहिब, अर्जीदावी तय्यार हुई?

हेमन—आप किस बुनियाद पर मियां सज्जादकी जायदाद पर दावी किया चाहते हैं?

गम०—फय्याजहुसेनने अपनी बीबी याने सज्जादकी माके फौत होने पर बीबी महमूदासे निकाह किया। फय्याजहुसैन उस वक्त करीब ६० बरसके होचुके थे। बूढ़े होनेकी वजह बीबी महमूदा उनसे राजी न थीं। मगर उस बूढ़ेने, अपनी बीबीको राजी रखने

के लिये अपनी सब जायदाद बीबी महमूदाके नामसे लिख दी थी।

हेमन—क्या लिख दिया था?

शम०—वसीयत नामा।

हेमन—खैर तो फिर उससे आपको क्या?

शम०—व्याह करनेके बरस पांच छः के बाद फय्याज़हुसेनने इन्तकाल किया। महमूदाको उनसे लड़का बाला कोई न हुआ। उस वक्त वह जवानीकी औजमें थी। फिर हमारे साथ—क्या हुआ समझही गये होंगे। आहिस्ते आहिस्ते बात फैलती चली, फिर महमूदा शर्मसे मकान छोड़के कहीं चली गई।

हेमन—यह तो मैं समझा, मगर हज्रत, असल बात तो यह है कि आप उसकी जायदादको किस बुनियाद पर दावी करते हैं?

शम०—वही मसल है कि "बारह बरस दिल्लीमें रहके क्या किया कि भाड़ झोंका।" इतने दिनोंसे आप मुखतारकारी करते आये, आप अभीतक मुद्दआ न समझे? हमारे साथ आशनाई—समझते हो?—थी। इसी वजहसे वह मुझे अपनी जायदाद वसीयत कर गई।

हेमन—हज्'त, अदालतमें तो यह वजह काबिले समाअत न होगी।

शम०—क्यों, अदालतसे यह कहा जाये कि जब सज्जादने उसे अपने मकानसे निकलवा दिया, तो वह हमारे पास आई। हमने उसे इस शर्त पर मदद देना मञ्जूर किया कि उसके शौहरने जो जायदाद उसके नाम लिख दी है, वह उसे हमारे नाम लिख दे। और यह तो हकीकत भी है कि अपनी चीज़पर हमारा इख्तियार है, जिसको चाहें दे डालें। मैं गवाही दे दूंगा?

हेमन—(जीमें) न मालूम तुम क्या गवाही दोगे, अपना सिर या मेरा सिर? हमें क्या है, हमे तो रुपयेसे काम। जैसे कहो वैसे मुकद्दमा चलावें। (प्रकाश्य) इतने दिनोंसे नालिश क्यों न की थी।

शम०—यही इस तरहके झगड़े झञ्झटके सबबसे फुर्सत न

मिली। अलावह इसके, जल्दी करनेकी कोई जरूरत भी न थी।

हैसन—मगर हुजूर, इस मुकद्दमेमें खर्च बहुत पड़ेगा।

शम०—कुछ पर्वाह नहीं। जितना खर्च हो, होने दीजिये. मैं सब दूँगा।

हैसन—तो भी सबूत होना मुशकिल है। मगर मुझसे जहां तक पैरवी बन पड़ेगी करूंगा, क्योंकि आप हमारे पुराने मवक्किल हैं। मवक्किल कहिये तो और मुरब्बी कहिये तो जो कुछ हैं सो आपही हैं। क्यों जनाब, मियां सज्जाद आजकल हैं कहां?

शम०—वह यहीं पटनेमें हमेशा रहता है। खैर तो मैं इस वक्त जाता हूं, लेकिन मुखतार साहब आप भी इधर मुकद्दमा जल्दही दाग दीजिये, समझे न?

हैसन—बहुत खूब, मगर देखिये खर्चकी मददमें कुताही न कीजियेगा।

[शमशेरबहादुरका प्रस्थान।

हैसन—ऐं बीबी मकसूदा अपनी जायदाद इनको दे गई हैं मुझे तो यह यकीन नहीं होता। झूठी गवाहियां दिलवायेगा और क्या? मालूम होता है जाल भी करेगा। मगर वकीलोंकी जिरह से बच जाय तब जानें।—मियां सज्जादको खबर दे देनी चाहिये। इधरसे तो खूब मिलेहीगा, देखूँ, उधर भी किस्मत आजमा लूँ कुछ मिल जाये तो मिल जाये। लड़ाईके होनेहीसे कौओं और गिद्धोंकी किस्मत जागती है। हा-हा-हा।

[गया।

चौथी झांकी।

अंधेर, सजादका मकान।

(अब्बास बैठा है।)

अब्बास—यहां आये मुझे सिर्फ एक महीना हुआ है लेकिन इतनेहीमें मुझे यह अपना मकानसा मालूम होने लगा। सबही मुझे प्यार करते हैं। मखसूस सुम्बुल मुझपर ऐसी मिहरबानीकी नजर रखती है, कि अपनी सगी बहन भी इतनी न रखती होगी। औरतोंका मिजाज न मालूम क्यों आपही आप इतना नरम होता है। मगर लड़कपनमें व्याह न करके जियादे उम्रतक लिखने पढ़नेसे औरतोंकी कैसी अच्छी हालत होजाती है, यह बात जिसने सुम्बुल को नहीं देखा, वह नहीं कहसकता। जबतक कोई चीज आंखोंसे न देखे, तबतक यकीन नहीं होता। लोगोंका यह खयाल कि औरतोंका पढ़ाना लिखाना अच्छा नहीं, न मालूम कब दूर होगा।—सुम्बुल पर हमारा क्या खयाल है?—मुहब्बत, ताजीम, इहसान। मगर कशिशेमकनातीस किधर है?—दूसरी ओर। दिल अपना अब बेहाथ हुआ चाहता है। (सिरनीचा किये बैठना।)

(गुलशन का प्रवेश।)

गुल—(जीमें) माजअल्लाह, यह गौर! आज कल देखती हूं इसी तरह दिन रात गौर करते रहते हैं। रहो, मैं इन्हें छकाती हूं।

(गुलशनका प्रस्थान, और फिर छिपे छिपे थोड़े पटाखे लाके अब्बासके कानके पास अचानक छोड़ना।)

अब्बास—(डरसे चौंकके, और खड़े होके) हुं-उं यह क्या! (गुलशनकी तरफ देखके और शर्माके) आप थीं?

गुल०—क्या हुआ, क्या हुआ ? डरे क्यों ? इस तरह एका एक चौंक क्यों उठे ? कोई भूत जत तो नहीं देखा ?

अ—०वाह, आप अचानकसे कानके पास पटाखे छोड़ें और मैं चौंकूं नहीं ?

गु०—(डरावनी आवाजसे) हां देखो, उस पेड़पर एक भूत रहता है। मैं कहूं, शायद तुम्हें यकीन न हो, वह कोई तीन ताड़ तो लम्बा है और दोनों हाथ दोनों तरफ लंबे लंबे बांस से अलग लटकाते हैं और जब किसीको देखता है, वो पकड़नेके लिये, उस पर टूटता है। (हाथसे दिखलाके) शामको या रातको या ठीक दो पहरको यहां न जाना ? खुदा न खास्ते तुम्हें भी कहीं वह देख ले।

अब्बास—(जीमें) इसे अब कौनसा जवाब दें ?

गु—अच्छा, तुम क्या गौर कर रहे थे ?

अ०—किस वक्त ?

गु०—अभी अभी जब कि मैं इधर आई थी।

अ०—कहां, कुछ तो नहीं।

गु०—क्यों जी, इसकी क्या वजह कि तुम लोग इधर कई दिनोंसे अक्सर कुछ सोचा करते हो, और सदा उदास रहते हो। आपाकी भी यही हालत है।

अ०—क्यों, आप क्या कभी कुछ सोचतीं साचतीं नहीं ?

गु०—तुम इतने दिनोंसे यहां हो, कभी देखा है ?

अ०—अच्छा फर्ज, कीजिये कि अगर आपके भाई बीमार हो जायें, तो क्या तबभी आप उनके लिये सोच न करेंगी ?

गु०—क्यों, क्यों, वह बीमार हैं क्या ?

अ०—नहीं तो खुदा न करे ! (आह भरके) मैं अमीर होता तो क्या खूब होता !

गु०—(उत्कंठित भावसे) तुम्हें जरूर कोई न कोई तकलीफ है। तुम्हें कसम अल्लाहकी मुझसे साफ साफ कहो क्या बात है।

क्या किसी नौकरने तुम्हारी कोई बात नहीं सुनी है? या और कोई बेअदबी की है? क्या बात है, मैं तुम्हारे पांव पड़ती हूं, कहो।

अ०—(आंखमें आंसू भरके) मियां सज्जाद और तुमलोगोंकी मिहरबानीसे मुझे इस तरहकी कोई तकलीफ नहीं है। मैं यहां हर तरहसे खुश हूं।

गु०—फिर तुम्हें फिक्र किस बातकी है? भाई, मुझे सचसच कहदो।

अ०—आप यह सुनके क्या करेंगी?—और कहां, मुझे तो कोई फिक्र नहीं है।

गु०—भला, खैर तब भी कहो सही। मुझे खौफ इस बातका है कि अगर कहीं भइयाने सुन पाया कि तुम्हें किसी तरहकी यहां तकलीफ है तो वह हमलोगोंपर बड़े खफा होंगे।

अ०—तो क्या आप जरूरही सुनेंगी?

गु०—हां, हां, वल्लाह, कहो।

अ०—अच्छा मैं पहले आपको एक किस्सा सुनाता हूँ, सुनिये। पटनेके पास किसी गांवमें गुलामहुसैन नाम एक शख्स रहते थे। उन्होंने सौदागरी करके कुछ रुपये पैदा किये थे। उन्हें सिर्फ एक छोटासा लड़का था। उसका नाम यारमुहम्मद था। गुलामहुसैन मरते वक्त अपने लड़कोंको और रुपयोंको एक दोस्तके यहां रख गये। उन्होंने अपने दोस्तसे कहा, "दोस्त, मैं लड़का अपना तुम्हें देके चला। उसे आदमी बनाइयो। और जब बालिग हो, तो हमारा हाल कह देना, और रुपया पैसा, जो कुछ है, समझा देना। (आंसूका आंखोंमें भर आना।) मगर उस दोस्तने दगाबाजी की। रुपयोंको तो अपने कामसें खर्च कर डाला और यारमुहम्मद जब जवान हुआ, तो उसे मकानसे निकलवा दिया। वह बेचारा सैकड़ों मुसीबतें झेलता, भटकता भटकता शाहिदहुसैन नाम एक भले आदमीकी पनाहमें आया! शाहिदहुसैनने इन्हें बहुतही अच्छी

लड़कोंके रक्खा, और ठीक अपने छोटेभाईके बराबर मानने लगे। मगर किस्मतकी खूबी, यारमुहम्मदको मुसीबत यहां भी सतानेसे बाज न आई। यानी शाहिदहुसैनकी जुबैदा नाम कुंआरी बहन जो थी, उसपर वह आशिक होगया। मगर जुबैदा उसे नफरतकी नजरसे देखती थी। यही पहला मर्तबा था कि यारमुहम्मद मुहब्बतके फन्देमें फंसा था। ज्यों ज्यों मुहब्बत बढ़ने लगी त्यों त्यों तबीयत उसकी बेकाबू होती चली। मगर दिलकी बात कहीं जाहिर भी नहीं कर सकता। क्योंकि वह खुद तो एक अदना उड़ता पुड़ता मुसाफिर था, और उसपर भी गरीब, और जुबैदा तो माशा-अल्लाह एक बड़े आदमीकी बहन थीं। गरज कहनेकी हिम्मत न होती थी। आखिरकार मौतने यारमुहम्मदको इन तकलीफोंसे रिहाई दिलवाई। (आह भरना।)

गु०—उन्होंने एक बार कहके इम्तिहानही लिया होता। शाहि०हुसैनको तो भला उसकी इत्तिला दी होती। जिनकी तारीफ तुमने इतनी की, वह भी क्या ऐसी बेवकूफीकी राह देते कि यारमुहम्मदको गरीब होनेकी वजह, अपनी बहनसे न व्याह देते? सबही दौलतकी परस्तिश नहीं करते।

अ०—यारमुहम्मदमें कोई बात भी ऐसी न थी कि जिसकी वजहसे उसको लोग खारिज करें। और फर्ज किया कि कोई बात ऐसी होती भी, और शाहिदहुसैनकी भी राय होजाती, मगर शायद जुबैदा व्याह करनेको राजी न होतीं?

गु०—(नीचा मुँह करके अस्फुट स्वरसे।) मुझे तो मालूम होता है कि उनके भइयाको मंजूर होता तो वह भी राजी हो जातीं।

अ०—तुम्हें क्या यह ठीक मालूम है? तुम यकीनन कहती हो?

गु०—मैं ठीक नहीं कह सकती, मुझे ऐसा मालूम होता है।

अ०—(आह भरके जीमें) जो उम्मीद बंधी थी वह भी गई।

गु०—वाह वा, यह क्या ? तुमने अपना हाल तो कुछ कहाही नहीं। सिर्फ एक किस्सा सुना दिया।

अ०—(गुलशनके मुंहकी तरफ कुछ देरतक देखना, और फिर अचानकसे हाथ पकड़के। गुलशन—

(एक नौकरका डरते डरते प्रवेश और अब्बासका गुलशनका हाथ छोड़ देना।)

अ०—क्यों रे, तेरा मुँह क्यों इतना सूख गया है ? खैरियत है न ?

नौकर—मीयां कहते मेरा बदन सिहरे है। (कांपना)

अ०—कह तो सही, क्या है क्या ?

नौ०—मीयां, हम मसजिदकी डेवढ़ी पर बैठे थे कि एक मुष्टण्डा नाटा घोंटा कालासा आदमी हाथमें लाठी लिये हमसे आके पूछिस कि "अरे, मीयां अब्बासहुसैन नामके कोई आदमी यहां आके रहे हैं ?" हम कहा "हां, रहे हैं तो।" तब फिर पूछिस कि, "थोड़ेही दिन उसके आयेको हुआ है न ? दुबला पतला सा है।" हम कहा "हां।" तब हम उलटके पूछा कि "काहेजो तुम उनका हाल काहेको पूछो हो।" तब कुछ जवाब नहीं दिहिस और कटमटा कटमटा मेरे तरफ देखे लगा। और जब जावे लगा तब अपने जीमें भुनभुनाके क्या कहिस कि "हूँ हूँ बचाका पता लग गया। अब कहां जाने पावे है।" यह सुनके हमको बड़ा डर हुआ, और येही कहेको हम दौड़े चले आवे हैं।

गु०—यह क्या तुम्हारा कोई दुश्मन भी है ?

अ०—(जीमें) यह तो मैं देखता हूँ, शमशेरबहादुरका कोई भेदिया है। उसीने जरूर कोई फांदा लगाया है। मुझे फंसाया चाहता है। बड़ा डर मालूम होरहा है। (प्रकाश्य) अच्छा जरा मुझे दिखला तो दे कि वह आदमी गया किधर। तू क्यों नाहक डर रहा है ? (गुलशनसे) तुम ऊपर जाओ, मैं अभी अभी आया।

गु०—देखो, हमारी बात सुनो, तुम न जाओ, और किसीको भेजो।

अ०—नहीं, खौफ क्या है? देखो मैं अभी पहुंचता हूँ।

गु०—या अली, माजरा क्या है! अल्लाह, तूही मालिक है। खैर, मगर देखो किसी आफतमें न पड़ना। जल्दी आइयो।

[सबका प्रस्थान।

पांचवीं झांकी।

बिहार, अखैर, सज्जादका मकान।

(सुम्बुल बैठी है, हुसैनीका प्रवेश।)

सुम्बुल—तुमलोगोंके आनेकी खबर तो शामहीको थी, फिर इतनी देर क्यों हुई?

हुसैनी—बीबी! हम का कहें? हम तो जानें हैं सज्जाद मीयां का ऐसा आदमी दुनियामें कभी जनम नहीं लिहिस होगा।

सु०—(हंसके) क्यों क्यों? भला कैसे रे?

हु०—हीयां आवे खातिर काल तीने बजे सपर चुके थे, बलुक इष्टीसनमें भी जा चुके थे। इष्टीसनमें पहुँचके ज्योंही मीयां टिकस लेवेको बढ़े हैं, त्योंही क्या देखिनको एक निगोड़ी बुढ़िया भोकार पाड़के रो रही है। मीयां उसके पास जाके पूछिन कि "काहे रोवे है, बुढ़िया?" बुढ़िया जवाब दिहिस कि "बाबू हम पटनेमें एक कायथ कने नौकर हैं, आज चिट्ठी आई थी कि हमरा छोटकाबेटका बड़ा बेराम है, ओही सुनके गिर्याईनसे छुट्टी लेके, हम अपने गांव पर जाये खातिर हीयां आये थे। एक आदमीको हम टिकस लावेका रुपइया दिया, सो ऊ रुपइया लेके भाग गया। सो रुपइवा गया तो गया रेल खुल जायेगी तो आज हम अपने बेटवाको कैसे देखेंगे।" ई सुनके मीयां क्या किहिन कि एक टिकस मोल लाके

उस बुढ़ियाको दिहिन और कुछ रुपया देके कहिन कि "ले इससे लड़केके लिये दवा मोल लेना।" बुढ़िया तो मीयांकी ई मेहरबानी देखके नेहाल होगई, उनका पैर पकड़के रोवे लगी, और बहुत दोआ देने लगी। मीयां किसी तरह समझा बुझाके उससे जान छुड़ाइन और जब चले लगे तो उनके आंखमें आंसू डबडबा आया।—बीबी, ई का तुमरे आंखमें भी आंसू भर आया!

सु०—(तुरत आंसू पोंछके) वाह, मेरी आंखमें आंसू कहां है रे? खैर तो कह फिर उसके बाद क्या हुआ?

हु०—फिर उसके बाद क्या होगा, पासमें एक फूटी कौड़ी न रही, कि जिससे टिकस लेते। झाड़ बुहाड़के सब बुढ़ियाको दे दिहिन था। लाचार घर फिर गये। उसके बाद फेर आज रेलपर सवार हुए, १२ बजे अन्दाज बखतियारपुर पहुँचे, और वहांके चले चले इस बखत चले आवें हैं।

सु०—मैं नहीं जानती थी कि तेरे मियां ऐसे हैं। खैर तो यहां आके फिर गये किधर?

हु०—का जाने किससे जो बात कर रहे हैं। अच्छी, बीबी उस दफे कही थीव कि तैं इस बार पटनेसे होआवेगा, तब हम अपना सब हाल कहेंगी, सो कहो न अब, बीबी।

सु०—तुझको अभीतक यादही है? अच्छा सुन। हमारा सोरदादमें मकान था। मैं जब नौही बरसकी थी, तब बाबाने इन्तकाल किया। उन्हींके अफसोससे अम्मा बीमार हुईं। बाबाने अपनी जिन्दगीमें कुछ कर्ज किया था, कि जिसके लिये उनके मरने का हाल सुनके महाजनोंने तकाजा करना शुरू किया। जब उन लोगोंने बहुत दिक किया तो अम्माने मियां सज्जादको बुलवा भेजा, और कहा "बेटा, हमारी तो यह हालत है, और महाजनोंने और भी नाकोंदम कर डाला है। हमारे यहां कोई मर्द न रहा, मैं किससे कहवाऊं, जरा तुमही महाजनोंको बुलवाके समझा दीजो कि कुछ रोज और दम लें, मैं चङ्गी होजाऊं तो मकान जेवर बेच

कर सबका कर्ज अदा कर दूंगी।" मियां सज्जादने कहा "कुछ पर्वा नहीं, आप किसी बातकी फिक्र न करें। वह रहीम है, वह आपकी भी खबर लेगा।" जब चलने लगे तो मुझे पुकारके बोले, "सुम्बुल, ये कई एक कागज हैं, तुम अपनी माको दे आओ।" मैंने उन्हें जाके अम्माको दिया। अम्माने देखा तो कहा कि ये तो नोट हैं। गरज उन्हीं रुपयोंसे सब कर्ज भी अदा हुआ, और १००) रुपये बच रहे। मगर अम्माकी बीमारी नहीं अच्छी हुई। (रोके) उन्होंने मरते वक्त मियां सज्जादको बुलवा भेजा, और कहा कि, "बेटा सज्जाद, मैं तो इस दुनियांसे रुखसत होती हूँ, मगर हमारी सुम्बुल तुम्हारे सुपुर्द रही। (रोना) देखो इसपर खयाल रखना। और हमारी यही आखिरी दुआ है कि दोनों सदा खुश रहना।" (रोना और आंसू पोछते जाना।) इसके बादही अम्माने इस दुनियासे कूच कर दिया। बस, उसी वक्तसे मैं बराबर यहां हूं। (आहका भरना।)

हु०—(आंख पोंछके।) अच्छा बीबी, तुम और छोटी बीबी दोनों आदमी पन्द्रह सोलह बरससे तो ऊपर हुई होगी, तो अब मियां तुम लोगोंका व्याह क्यों नहीं कर दे हैं? महल्लेके अमीर गरीब सबही इस बातको दूसे हैं।

[सुम्बुलका शर्मसे सर नीचा कर लेना।]

हु०—बोलो न बीबी, हमसे ई बात कहेमें सरम क्या है? हम तो एक लड़कई न हैं। व्याह काहे नहीं कर दे हैं?

[सज्जादका प्रवेश।]

सज्जाद—क्या है रे हुसैनी, क्या है? किसका व्याह होता है? तेरा व्याह है क्या? कब है रे?

(सुम्बुलका शर्माके उठ जाना, और हुसैनीका भाग जाना।)

सुम्बुल—आइये, अच्छी तरह हैं? आपके आनेमें देर क्यों हुई?

सज्जाद—(प्यारसे) तुम अच्छी तरह हो न? ऐ है इतनेही दिनोंमें तुम इस कदर लांबी होगई! अगर एकाएक कहीं नजर पड़ जाती तो, वल्लाह, मैं तुम्हें पहचान भी नहीं सकता।

सु०—(हंसके) जी हां, आपकी दुआसे अच्छी तरह हूं। बैठिये।

स०—(तअज्जुबसे) यह क्या सुम्बुल, पहले जब मैं विहारसे आता था, तुम बड़े प्यारसे हमारे पास दौड़के चली आती थीं, और अब तो गोया मुझसे भागती फिरती हो। और इसके सिवा मुझे "आप" "आइये" "बैठिये" क्यों कहती हो? इसके क्या मानी? मुझ पर खफा हो क्या?

सु०—भला आप पर खफा?

स०—फिर "आप।" खफा नहीं हो तो क्या हो?

सु०—कुछ तो नहीं हैं। अच्छा आप बैठिये न।

स०—फिर? फिर "आप" "बैठिये"? सुम्बुल, मैं तुम्हारे पाओं पड़ता हूं, सच कहो माजरा क्या है? तुम्हें क्या होगया है?

सु०—लाहौलवलाकूवत, ऐसी बात मुंहसे न निकालिये। (रोवासी आवाजसे) मैं आपकी मिहरबानीसे जिन्दा हूँ, अम्माके मरने पर आप मुझपर मिहरबानी न करते तो हमारा क्या हाल होता? छी छी, आपको क्या ऐसा कहना लाजिम है?

स०—लो तो मैं अब जाता हूं। अभी फिर अजीमाबाद लौटे जाता हूं, क्या करूंगा यहां रहके?

[जाना चाहता है।

सु०—सुनिये, सुनिये। यह आप क्या करते हैं? लोग क्या कहेंगे?

स०—लोग कहेंगे, कहने दो, मेरी बलासे। मैं तो अभी जरूर ही जाऊंगा। मैंने तुमसे सैकड़ों बार कहा कि जो बात गुजर गई उसे बारबार न दोहराया करो। मगर न मालूम तुम्हें क्या उन सैकड़ों बरसकी पुरानी बातोंसे ऐसा शौक है कि जबतब वही बात निकाला करती हो। मैं तो जरूरही जाऊंगा। कोई कुछ पूछेगा तो मैं कह दूंगा कि सुम्बुल मुझसे लड़ी है।—

[जानेका उद्योग।

सु०—(सज्जादका हाथ थामके) हमसे क़ुसूर हुआ, मुआफ कीजिये। वल्लाह, मैं कभी अब वह बातें जवान पर न लाऊंगी। आप न जाइये।

स०—(दुःखित स्वरसे) बुल्बुल, तुम क्या मुझे अब नहीं चाहती हो? तुम मुझे बारबार "आप" "आप" क्यों कहती हो? पहले तो ऐसा नहीं कहती थीं?

सु०—लड़कपनमें बेवकूफीकी वजह आपको "तुम" "तुम" कहती थीं। आखिर लफ्ज "आप" क्या बुरा है? इसमें आपका हर्ज क्या है?

स०—हर्ज तो कुछ नहीं है मगर "आप" "आप" कहनेमे परायासा जीमें खटकता है। "तुम" कहनेमें जो बेतकल्लुफी और प्यार जाहिर होता है, वह बात लफ्ज "आप" में नहीं है।

सु०—क्यों, लड़के जब सयाने होते हैं तो वालदैनको "आप" "आप" कहके पुकारते हैं, तो क्या इससे वह पराये होजाते हैं?

स०—जी हां, फर्माना आपका बजा है, मगर अफसोस इसी क़दर है कि बन्देकी राय आपसे मिलती नहीं। तो फिर आप खड़ी क्यों रह गईं, आइये, तशरीफ लाइये।

सु०—(हंसके) माशअल्लाह, यह नाज देखो। इसके क्या मानी?

न०—इसके ये मानी हैं कि "आप" "आप" कहना मुझे भी आता है।

[गुलशनका प्रवेश।]

गुल०—(खुश होके) ऐ लो, भइया आये! किस वक्त आये भइया?

स०—अभी चला आता हूँ। तू अच्छी तरह है न?

सु०—(हंसके) क्यों गुलशन, तुमने तो कहा "भइया घर आयेंगे, तो मैं कभी जो लूं उनसे बो?"

नेपथ्यमें—मार, मार,—अरे डांका पड़ा है डांका। भाग, भाग।

सब—(घबराके) यह क्या, यह क्या ?

[हुसैनी और दो नौकरोंका प्रवेश।]

नौकर सब—मियां, डांका पड़ा है, डांका।

सज्जाद, सुम्बुल, गुलशन—या अली, सो क्या, सो क्या ?

एक नौकर—साहिब, आजकल डकैतीकी बड़ी धूम है, आपको नहीं मालूम ?

स०—नहीं, मुझे क्योंकर मालूम हो ? मैं तो अभी चला आता हूँ। (गुलशनसे) अब्बास कहां है ?

गुल०—मुझे क्या मालूम ?

सुम्बु०—इस आफतके वक्त वह किधर गये ?

गु०—अइया, अब क्या होगा ? (रोना)

सज्जा०—तुमलोगोंको कुछ खौफ नहीं है। जबतक मैं जिन्दा हूं, तबतक तुमलोगोंका कुछ नहीं हो सकता।

(नेपथ्यमें डाकुओंकी गोहार, और डरसे
गुलशन और सुम्बुलका एक दूसरेका
हाथ पकड़ लेना।)

सज्जा०—(आलमारीसे एक रिवोल्वर और एक तमञ्चा निकालके सबका भरना।) (नौकरोंसे) तुमलोग सब कोई हिम्मत करते जाओ। डरो मत। कुछ पर्वा नहीं। इस कमरेके दरवाजेको बन्द करके जोरसे दबाये रहो। कहीं ऐसा न हो, कि तमञ्चा भरनेके पहिलेही वह लोग अन्दर घुस आयें।

(नौकर लोग वैसाही करते हैं।)

नेपथ्यमें—अरे इधर सीढ़ी लगा, इधर। जल्दी रे जल्दी। साहब तुम चढ़ जाओ ऊपर।

नौकर लोग—ए मियां अब तो बचनेकी कोई तदबीर नहीं है। एक गुठ मकानके पीछे भी आगई है, और सीढ़ी लगाके लोग ऊपर

चढ़ आवें हैं। साथमें मालूम होता है अङ्गरेज भी हैं। या अल्लाह तूही बचा। (बिकट शब्द।)

गु०—आपा, गला हमारा सूखा जाता हैं, छाती हमारी उड़ी जाती है। तुम जरा हमें थांमे रहो।

सु०—(आंख पोछके) अल्लाहही मालिक है!

स०—(नौकरसे) अरे तू तमञ्चा छोड़ सकेगा? ले देख, इस तरह घोड़ेको खींचना, तब इसे नीचे दवाना।

नौकर—(रोता रोता) जी—ई—ई—

सज्जाद—दूर बेवकूफ, तुझसे क्या होगा? तुझको तो एक जी कहते डेढ़ पहर लगा। (छोटे तमञ्चेको मेजपर रखके) अभी यहीं रहे, पीछे देखा जायेगा। (गुलशन और सुम्बुलसे) तुमलोग अब न डरो। इन्शाअल्लाहताला, मैं इससे अकेला २० डाकुओं को मुआऊंगा, आइन्दा खुदा मालिक है। मगर देखो तुम घबराओगी, तो सब खेल बिगड़ जायेगा।

(नेपथ्यसे भयानक कोलाहल, और एक खिड़कीका टूटना और तलवार वगैरहकी चमक दिखाई देना। और तलवार लिये खिड़की की राहसे घसीटा वगैरहका कूदना। और सज्जादकी गोली खा खाके कई एकका गिरना और कई एकका भागना।)

सज्जाद—(घसीटाकी तलवार लेके) इससे भी मैं मजा दिखाता हूं। (डांकुओंपर बार बार गोली चलाना।)

नेपथ्यसे—भाग, भाग, भाग रे। उनलोगोंके पास बहुतसी सन्दूकें हैं।

नेपथ्यसे—डैम, कावर्डस।

(दो गोरोंका प्रवेश, और उनका सज्जादपर आक्रमण और सज्जादके हाथसे रिवल्वरका गिर जाना।)

सज्जाद—(बहुत चिल्लाके) लोग गवाह रहें, जिसका जी चाहे हिन्दुस्तानियोंकी हिम्मत और जोर आजमा ले। (जोरसे तलवार चलाना, दोनोंके वार रोकना, और दोनोंको घायल करना।

(एक गोरेका मरके गिरना, और उसीके बदनसे फंसके
सज्जादका भी जमीनपर गिरना, और फिर उठने
की कोशिश करना और सुम्बुल और
गुलशनका रोना।)

दूसरा गोरा—(सज्जादके सीने पर लात रखके, और उसके गले के पास तलवारकी नोक लगाके) आई हैव यू नाऊ, बुडी निगर!

सज्जाद—मैं तो अब मरता हूं, पर बहिश्त गवाह रहे कि हिन्दुस्तानी बुजदिल नहीं होते।—सुम्बुल, गुलशन!

नेपथ्यसे—अरे गिरा, गिरा, आओ आओ अब आते जाओ!

सु०—अब मुझसे नहीं रहा जाता। मैं हूँ तो औरत, मगर खुदा, तू हमारे दिलमें इस वक्त हिम्मत बख्श। (छोटे तमञ्चेको उठाके दूसरे गोरेपर चलाना, और गोरेका मरके गिरना।)

(डाकुओंका फिर प्रवेश, और सज्जादका फिर
तलवार लेके उठना।)

डाकूलोग—ए बाबा, ई तो फेर उठा रे।

[सब डाकुओंका भागना।

[सज्जाद उनके पीछे जाना चाहता है।]

सु० और गु०—(सज्जादका हाथ थामके) वह अब भाग गये, अब तुम्हारे जानेकी जरूरत नहीं।

स०—सुम्बुल, आज तुमहीने हमारी जान बचाई। खैर वह बात तो पीछे होगी पर मैं एक बार जरा देख तो आऊं, कहां कहां क्या हुआ है।

[गया।

सुम्बुल और गुलशन—तुम न जाओ, तुम न जाओ।

[सज्जादके पीछे पीछे दोनोंका जाना।

(नेपथ्यमें दूरपर लाठी तलवारकी आवाज।)

एक नौकर—अरे देख तो हमरे गर्दनको तो नही काट डालिस?

[कांपता कांपता बाहर गया।

पांचवां अंक।

पहली झांकी।

विहार, अल्वेर, सज्जादका मकान।

चारपाई पर सज्जाद सोया है, और पास
सुम्बुल बैठी है।

सुम्बुल—(सज्जादके मुंहकी तरफ देखती हुई दुःखित स्वरसे) अब हमारा यहां रहना लाजिम नहीं। रात दिन इनके पास रहना ठहरा, शायद जीकी बात अगर निकल पड़ी, तो फिर शर्म और जलाजतको रखनेकी जगह न मिलेगी। जितना इसके पास रहती हूं, जितना इसे देखती हूँ, उतनीही मुहब्बत बढ़ी जाती है। कभी कभी यह भी जीमें आता है कि, सज्जाद, अब कहांतक छिपाऊं अपने दिलके फफोले छाती फाड़के तुझे दिखाही दूँ, कि जिससे दिलका दर्द दफा होजाये। मगर हिम्मत नहीं होती। जबही अपना दुखड़ा कहनेको मुस्तैद होती हूँ, तबही दिल धड़कने लगता है, गला सूख जाता है, और मुंहसे बोली नहीं निकलती।—आखिर कहीके क्या करूंगी? अव्वल तो तेरा यह वादा है कि शादी ही नहीं करूंगा, दूसरे मुझमें कौनसा ऐसा हुनर है कि जिससे तेरे दिलको अपनी तरफ रिझा सकूं। मुहब्बत तो बराबरवालोंमें होती है। मगर तुझमें और मुझमें तो आसमान और जमीनसे भी जियादा फर्क है। तू इल्म हिल्म और सखावत का बादशाह है। जहानमें कौन है, जो तुझसे राजी और खुश न हो? अम्माने ठीक कहा था—"बेटी, मियां सज्जाद इन्सान नहीं हैं, यह कोई फरिश्ता हैं।" हमें इस बातका मतलब तब समझ

नहीं पड़ता था, अब मैं समझती हूं। और मैं,—मैं क्या हूं? कमजोर दिलकी एक अदना औरत। मुझमें कोई ऐसा वस्फ भी नहीं कि तेरे प्यारके लायक होसकूं। (दीर्घनिश्वास) दिल कड़ा करके और तुझे जगाके क्या इसी वक्त अपना दिल दिखा दूं? न, कहनेसे शायद खफा होजावे, नफरत करने लगे। दिलकी आग दिलहीमें रहे। (सुसुकना) हाय, मेरी जिन्दगी योंही गुजर जायेगी। हाय, गम हमारा सारी उम्रका साथी हुआ! (आंसूका गिरना) हमारे चले जानेसे अब तेरा नुकसान भी नहीं है। गुलशन है, वह तेरी खिदमत किया करेगी। (उठके, रोती हुई) प्यारे, दिल-वर, अब मैं रुखसत होती हूँ, सारी उम्रके लिये रुखसत होती हूं। (रोती हुई जरा दूर सरकके) खुदाया! तेरे पास मैं यही दुआ मांगती हूं कि इस बेरहमको खुश रखना और जब मरूं तो इस दर्देदिलका मुखड़ा एक बार देखके मरूं। (कुछ और दूर सरकके।)

गीत।

(गजल—रागिनी भैरवी।)

दिलपे है जानि जहां नक्श जो सूरत तेरी,
हिज्रमें भी मुझे हासिल है जियारत तेरी।
जाहिरा दूर हूं पे दिलसे करीं हूं तेरे,
जानके साथ है ऐ जान मुहब्बत तेरी।
दीद तेरा मुझे हासिल है, तसव्वुरमें मदाम,
रहती है जेरि निगह आंखोंमें सूरत तेरी।
हो बुरा शर्मो हयाका कि है माने, वरना
उम्र भर करती मैं, वल्लाह! रिफाकत तेरी।
जानजां देखके तुझको भी नहीं चैन मुझे,
चुटकियोंसे मेरा दिल मलती है सूरत तेरी।
तेरे उठते हुए बस मौतही आजाती है,
आमदे वक्त मुझे होती है रुखसत तेरी।

कोही सहरामें हूँ आवरा जो मैं बहरे नसीब,
अपनी क़िस्मतका गिला है, न शिकायत तेरी ।
जिन्दगी तल्ख है वे तेरे सनम, सुम्बुलकी,
एक दिन क़त्ल करेगी उसे फ़ुर्क़त तेरी ।
कोही सहरामें हूँ जुज यास कोई साथ नहीं,
कौन जंगलमें कहे आके हक़ीक़त तेरी ।
सुम्बुले शेफ्ताकी जल्द खबर ले सज्जाद,
हो न बरबाद कहीं सारी यह मिहनत तेरी ।

अरे हुसैनी, मियां इधर अकेले हैं जरा इधर आके बैठ ।

(सज्जादकी तरफ कुछ देर तक देखनेके बाद रोती हुई गई ।)

(हुसैनीका प्रवेश ।)

हु०—(सज्जादको पंखा झलता हुआ) सुम्बुल बीबीकी मिहनत भी गजब है । आज डाका पड़ेको अन्दाज महीना एक हुआ होगा —जिस दिन मियांका पांव फिसलके गिर पड़नेसे, टूट गया था—उस दिनसे बीबीको कैसा खाना और कैसा सोना । जब देखो तब मियांकी टहलमें लगी हैं । और किसीको कोई काम नहीं करे दे हैं । छोटी बीबी जबरदस्ती कोई काम किहिन को उन पर बड़ी खफा । मियांको जहां जरा तकलीफ या दरद हुआ कि इनको जान निकलने लगी । हम बहुत दफे लुक लुकके देखा है कि जरा मियांका जी मांदा हुआ कि सुसुक सुसुकके रोवे हैं ।— हुकुम करे तो जानबे न करे हैं, सब काम अपनेही हाथसे ।— डकैतीके मुक़द्दमेका थानेवाले सब कैसा गोलमाल कर दिहिन ।

सज्जाद—(नींद टूटनेके बाद चारों तरफ देखके) क्यों सुम्बुल,— कहां हैं, किधर गईं ?

हु०—जी, अभी हमको बलाके उधर गई हैं । जां हैं, बला लावें हैं ।

[गया ।

स०—आः—सुम्बुलने हमारे लिये कैसी कैसी तकलीफें उठाई हैं। लेकिन तब भी किसी वक्त चिहरा उसका मैला नहीं दिखाई दिया, जब देखो तब खुश। न खाना है न सोना है, मगर तब भी चिहरा फूलसा खिला हुआ। जिस वक्त मैं अपने जखमोंके दर्दसे बेहाल रहता था, उस वक्त जो कहीं सुम्बुल पास आके बैठती तो फिर कहांका दर्द और बेकली। औरतोंके दिल रहम और दिल-सोजीके गढ़े रहते हैं। दर्दने शायद इस शेरको औरतोंहि के हकमें कहा था—

"दर्द दिलके वास्ते पैदा किया इन्सानको,
वरना ताअतके लिये कुछ कम न थे करों बयां।"

ये दूसरोंकी खुशीसे खुश, दूसरोंके गमसे गमगीन। अपना कुछ खयाल नहीं। इस दफे सुम्बुल अगर हमारी बीमारदारी न करती, तो मैं कभीका खतम हुआ होता। बीमारीदारीको कौन पूछता है, डाकुओंसे हमें किसने बचाया था। ये चन्द दिनोंसे न मालूम हमारी तबीयत कैसी कैसी होती है। लहजा भर भी सुम्बुल से अलग होनेमें दिलको तकलीफ होने लगती है। इसका क्या सबब?—हमारा जी खटकता है—(गौर करता हुआ)—

इश्क—सुनते थे जिसे हम, वह यही है शायद!
खुद बखुद दिलमें है एक शख्स समाया जाता॥

आखिर इसके कबूलनेमें शर्म क्या है? नहीं सिर्फ इहसानका खयाल है। इहसान मानना क्या गुनाह है?—बेशक, सुम्बुलको मैं प्यार करता हूं, मगर बतौर भाईके। इसमें तो कुछ गुनाह नहीं। इस तरहकी मुहब्बत तो हमारी रायके बरखिलाफ नहीं है।—इधर कई एक दिनोंसे मैं देखता हूं कि मुंहकी तरफ देखते ही सुम्बुल शर्माके नीचा मुंह कर लेती है और कभी कभी फेर लेती है। (गौर करना।)

(हुसैनीका प्रवेश।)

हु०—मियां, सुम्बुल बीबी तो इधर नहीं हैं, ऊपर नीचे सगरो खोजा कहीं न मिलीं।

सज्जाद—जायेंगी कहां, उधरही कहीं होंगी। फिर जा, अच्छी तरह ढूंढ़।

[हुसैनी गया।

हाथमें चिट्ठी लिये गुलशनका रोते हुए प्रवेश।

गुल०—भइया, यह क्या? आपा कहां गईं? तुमने क्या उनको कुछ कहा था?

सज्जाद—(घबराके) क्यों क्यों, क्या हुआ? वह कहां गईं?

गुल०—लो, सुनो। (सुसुक सुसुकके चिट्ठी पढ़ना।)

प्यारी बहन,

तुमलोगोंके इहसान इतने मुझपर हैं कि मैं सर नहीं उठा सकती। मुझे न बाप है, न मा, मैं यतीम हूं। लेकिन तुमलोगों की मुहब्बत और मिहरबानीसे मैं आजतक यह नहीं जानती कि तकलीफ किसे कहते हैं। मैं कहीं और किसी हालतमें क्यों न रहूँ, मगर तुमलोगोंको कभी न भूलूंगी। बहन, कुछ खयाल न करना, तुमसे हमेशाके लिये रुखसत हुई। हमारे लिये न बेफाइदा अफसोस करना, न हमें नाहक ढूंढ़वाना। इस दुनियामें अब तुम लोगोंसे और मुझसे मुलाकात न होगी। अल्लाहताला गुफूरुलरहीम के पास हमारी यही दुआ है कि तुम लोग सदा खुश रहो! गुलशन प्यारी बहन, तुझे छोड़ते छाती फटती है, पर क्या करूं लाचार हूं। गुलशन, मुझे भूलना मत, दिनभरमें एक बार भी याद करोगी तो बहुत है।

तुम्हारी कम्बख्त बुलबुल।

(आंसू पोंछके।) सारे खतमें तुम्हारा नाम कहीं नहीं लिखा है। भइया, तुम आपा पर खफा तो नहीं हुए थे।—भइया, हमारा जी कैसा कैसा जी होरहा है, कहनेको कुछ, मुंहसे निकलता है कुछ,—देखो हमपर खफा न होना। (रोना।)

सज्जाद—(आंसू पोंछके) गुलशन, हम क्या कभी तुमलोगों पर खफा हुए हैं? क्या हमें अक्ल नहीं है?

(घबरायासा अब्बासका प्रवेश।)

अब्बास—क्या है क्या ? माजरा क्या है ? बीबी सुम्बुल गई कहां ?

सज्जाद—(रोवासी आवाजसे) भाई लो, देखो।

(अब्बासके हाथमें सुम्बुलकी चिट्ठीका देना।)

अब्बास—(पढ़के) हाय यह क्या, इसके क्या मानी ?

(हुसैनीका प्रवेश।)

हुसैनी—इस चिट्ठीको डाकवहा देगया है।

[अब्बासके हाथमें चिट्ठी देके जाना।

अब्बास—(चिट्ठी जल्द पढ़के) ऐ लो, यह एक और आफत! बाबू नरसिंहसहाय लिखते हैं कि अनन्तपुरके मजिष्ट्रेटने झूठ तुहमत लगानेका जुर्म कायम करके आप पर मुकद्दमा चलाया है।

सज्जाद—मुकद्दमा कहां होगा, और कब ?

अब्बास—पटनेमें, अभी चौदह दिन बाकी हैं।

(हुसैनीका फिर प्रवेश।)

हुसैनी—मियां, एक चिट्ठी आउर है।

स०—देखूं, देखूं, (चिट्ठी पढ़के) लो, एक मुकद्दमा और है! अलमीरबहादुरने नालिश की है। अगले सनीचरको तारीख पड़ी है।

गुल०—सब मुसीबतें क्या एकही बार टूट पड़ीं ? (रोना।)

अ०—दुनियाका यही कायदा है। (ठंडी सांस लेना।)

स०—हां और क्या, अक्सर तो योंही देखा जाता है। गुलशन आफतके वक्त रोना लाहूद है।—बिलकुल बेफायदा है। हर शख्स की जिन्दगी आफतोंका गोया एक एक वसीअ मैदान है।

गुल०—भइया! कहना तुम्हारा बजा है, मगर दिल नहीं मानता। आपके वास्ते यह अब बेताब हुआ जाता है। (जोरसे रोना।)

स०—(हुसैनीसे) जा दीवानजीको तो बुलाला।

[हुसैनीका जाना।

स०—(गुलशनसे) सुनो, सुनो। तुम्हारे पास बुलबुलका जो फोटोग्राफ है, उसे ज़रा ले तो आओ।

[गुलशनका जाना।

स०—(भाट खड़े होकर अब्बाससे) अब्बास, तुम यहीं रहो, गुलशन तुम्हारेही सुपुर्द है। दीवानजीसे पूछपाछके मुकद्दमेके बारेमें जो मसलहत हो सो करना। मैं बुलबुलकी तलाशमें जाता हूं।

[जाना चाहता है।

अ०—बगैर आपके मुकद्दमा क्योंकर चलेगा? कुछ नहीं तो, तारीखके रोज तो आपको ज़रूरही हाज़िर होना पड़ेगा।

स०—इनशाअल्लाहताला, मैं तारीखके क़बलही लौटूंगा। गुलशन पर ख़याल रखना. जियादा रोवे धोवे तो समझा बुझा देना।

[जाना।

अ०—सुनिये, सुनिये—

(गुलशनका फिर प्रवेश।)

गुल०—भइया, किधर गये? भइया—आ-आ—

[रोते रोते जाना।

दूसरी झांकी।

बिहार, अल्वर, मियां सज्जादके मकानके पासका

बाग़ और तालाब।

(बुढ़ियाके भेसमें शमशेरबहादुर और चार डांकुओंका प्रवेश।)

शम०—(जोशमें) दुनियामें इतने दिन रहनेसे मैंने और और बातें सीखीही हैं, लेकिन हमारी यह सिफत दर्जये कमालको पहुंच गई है कि जब किसी काममें हाथ डालें तो उसे जबतक कामयाब न हो, न छोड़ें। और जहानमें भला कौनसी ऐसी बात

है जो खर्च और कोशिशसे नहीं होसकती? कामयाब होनेका वादा करे तो क्या इमकान कि कामयाब न हो।—मगर, अफसोस बिचारा घसीटा, काम खतम भी न होने पाया कि आप खतम हो गया। बिचारा इन बातोंमें जीका बड़ा पुख्ता था।—मर गया, चलो एक तरहसे अच्छा हुआ। हमारी कोई बात, क्या छिपाने की और क्या नहीं छिपानेकी, उससे पोशीदा न थी। उस दफे अल्लाहने बड़ी खैर की, जो वह कहीं न बचाता, तो क्या इज्जत क्या जान क्या माल सब खाकमें मिल गया होता। मैंने तो खयाल किया था कि सज्जदवा लौंडा सिर्फ किताबकाही कीड़ा है, लेकिन यह कौन जानता था कि बचा बन्दूक चलाना भी जानता है। और अदनी देखो कि हमेशा तो वह पटनेमें रहता है, खास उसी दिन खुदा मालूम कैसे घरही पर मौजूद था। मगर, बचा, इस बार कहां जाओगे? इस दफे तो हम भी बन्दूक लाये हैं। खैर जोहो लेकिन तब भी इस दफे काम बड़ी होशियारीसे किया चाहिये। फिर "मुडली बेल तखे" चली है।—उधर सालेपर मुकद्दमा भी दायर है। (मूँछोंपर ताव देके) इन्शाअल्लाहतआला, अब जल्दही उसकी दौलत अपने हाथ आती है। बगैर जहरीले दांत तोड़े सांप काबूमें नहीं आता। गरीबको जो नाच नचाओ, नाचेगा। (प्रकट, साथियोंसे) यारो, होशियार रहना। जिस जिस तरह बता दिया है, सब याद है न? देखो बड़ी खबरदारीसे, अगर पकड़े गये, तो सबके सब जहन्नुमको चले जाओगे। क्या कहोगे, खयाल है?

डाकूलोग—जी रहने दीजिये, जो पहले पहल आया हो उसको सिखाइये। हमसबको क्या सिखाइये है, हमलोगोंने तो अपनी अपनी जिन्दगीही इसके पीछे गंवाया है। "है कोई दाता, जो इस अन्धी बुढ़ियाकी खबर ले।"

(नेपथ्यमें आवाज।)

अम०—चुप! यह आवाज कैसी आई?

पहला डाकू—हम देख आवें हैं।

(गया और झट लौट आया।)

प० डा०—बड़े मियां, बड़ा मजा हुआ है। बड़ी छोकड़िया का जो एक हज्जामके साथ निकल गई है, और उसके पकड़ेको सज्जाद मियां खुद गये हैं।

गस०—अबे सच कह। अब लो, यारो, अब तो मुआमिला फतह है।

प० डा०—अफसोस का होगे पहले लो वाहो, कैसी खुशखबरी ला दिया है।

गस०—घबराते क्यों हो, सब मिलेगा। मगर भ'ई हज्जामने बड़ा काम किया।

दू० डा०—ऐ लो· वह देखो कौन चला आता है।

गस०—हां हां तीन आदमी हैं। लो, अपने कपड़े संभाल लो। जल्दी जल्दी। (एक डाकूसे) अरे बेवकूफ सरका कपड़ा जरा और खींच ले। (किसी दूसरे डाकूसे) अरे सुबड़, तुझे एक दुम जो बाहर निकली हुई है। लाहौलवलाकूवत इन बेवकूफोंके साथ काम क्या करना है कि अपनी भी जान देनी है।

(गुलशन, अब्बास और एक दाईका प्रवेश।)

गुल०—(दाईसे) मामा, दीवानजीने क्या कहा? सदूयाका कोई पता लगा या नहीं?

दाई—नहीं बीबी, अभीतक तो कोई पता नहीं लगा।

गुल०—आपा का?

दाई—नहीं, उनका भी नहीं।

गुल०—(अब्बाससे) भइया, जिस वक्त भागे लगी तुमने हमें पुकारके कहा क्यों नहीं?

अब्बा०—फुर्सत कहां मिलीकी तुम्हें पुकारू। मैं तो निरा खब्त होगया था, भला यह आफतपर आफत!

दाई—बीबी, कुछ पर्वा नहीं, खुदा सब अच्छा करेगा।

गुल०—(रोके) हाय हाय आपा भी गई, भइया भी गये, और तिसपर ये दो दो सख्त मुकद्दमे। खुदा तेरी क्या मर्जी है? न मालूम कौन कौन आफतें और डालेगा!

दाई—बीबी, यह क्या लड़केकी तरह रोओ हो। डर क्या है। दीवानजी कहिन हैं कि मुकद्दमेका कुछ डर नहीं, क्योंकि बस्तीवाले सब तुम्हरिये तरफ हैं। और गांवके बहुतसे आदमी मियांको खोजे निकले हैं।

अब्बा०—(गुलशनसे) रात जियादे आगई, तुम जाओ, सो रहो।

डाकूलोग—(पास आके) कोई है रामका प्यारा, माई मिले भूखेको दो दाना अन। बड़ा पुन होगा।

दाई—(तअज्जुब होके) ऐं, इतनी बड़ी रातको भीख कैसी? काल भोरे आइयो, जाओ।

डा० लो०—(रोवासी आवाजसे) माई तीन दिनोंसे भूखो हैं कुछ मिल जाये माई, भगवान तुम लोगोंका भला करेगा।

गुल०—अच्छा, तुमलोग हमारे साथ आओ, मैं दिलवा देती हूं। (आगे बढ़ना।)

गस०—(जीमें) नाजिनी, एक बोसेका सवाल है।

दाई—मरो कैसो फकीरोंज रे। निगोड़ी बदनपर काहे चढ़ी आवे है? राह नहीं सूझै है?

डा० लो०—जय हनुमानकी।

(डाकुओंका गुलशन, अब्बास और दाईको एक बारगी पकड़ना और उनके मुंहमें कपड़े कोंचके सबका बांधना।)

गस०—बस कोई चूं न करने पावे। तुमलोग सब अलग अलग राहसे जाइयो। हम सबको कश्तीपर सवार कराके भागलपुर रवान करेंगे।

[सबका प्रस्थान।

तीसरी झांकी।

राजमहलके पासकी पहाड़ी जमीन।

घोड़ेपर सवार सज्जादहुसैनका प्रवेश।

सज्जाद—अहा, यह जगह क्याही सुहावनी है! हमने आज-तक इस तरहका पहाड़ कभी नहीं देखा था। अक्ल और नक्लमें कितना फर्क है! सामने वह पहाड़की चोटियां ठीक काली घटासी देख पड़ती हैं। चारों तरफ दूबका सब्ज मैदान, जिसके बीचमें जगह जगह ऊंचे ऊंचे दरख्त हैं, क्या कैफियत दिखा रहा है। वह छोटी नदी अलगही दूरसे ठीक चान्दीके तारका तकल्लुफ दिखा रही है। इतने बड़े मैदानमें आदमीकी बस्तीका कहीं निशान तक नहीं देखा जाता।—यहां आनेसे आपही आप सबकी तबीयत वश्शाश होजाती होगी। जो सबसे कमबख्त है वह भी यहां आकर एक बार खुश होजाता होगा। (आह भरके) लेकिन हमारे दिलकी तसल्ली कहां, हमारे दिलमें तो आग लगी है, इसे खुशी मिले क्योंकर? सुम्बुलकी मा मरते वक्त सुम्बुलको मेरे सुपुर्द कर गई थीं, अब फर्ज करो—हरचन्द यह गैरमुमकिन है—फर्ज करो इस वक्त मुझसे आकर पूछें कि, "दग़ाबाज, हमारी सुम्बुल कहां है?" तो क्या जवाब दूँगा?—इतनी जगह फिरा, इतना ढूँढ़ा, लेकिन सुम्बुलका कहीं पता न लगा। इलाही, अब मैं क्या करूं! सुना था कि सुम्बुलके मामू यहीं राजमहलमें कहीं नौकर हैं, मगर कहां, यहां भी तो तमाम ढूंढ़ा। यहां तो उनका कोई भी नहीं है। (पीछे देखके) साईस किधर गया? धन्नू ऊ-ऊं?

[धन्नूका प्रवेश।]

धन्नू—जी हुजूर।

सज्जाद—इतनी देरसे क्या करता था?

धन्नू—हुजूर, चले तो आते हैं, बराबर।

स०—घोड़ेको लेजाओ। मैं भी टहलता टहलता पैदलही दो एक घड़ीमें पहुँचता हूं।

धन्नू—बहुत अच्छा, सरकार।

[घोड़ेको लेकर धन्नूका जाना।

सज्जाद—इस सवीपर जरा बैठूं। (बैठना) गुलशनके लिये जी घबराता है। कुछ डर तो है नहीं, क्योंकि अब्बास वहीं है।

नेपथ्यसे—अन्धाके ऐगो पैसा मिले बाबू, अन्धाके एगो पैसा मिले बाबू।

सज्जाद—यह क्या ?

एक अन्धे फकीरका प्रवेश।

अन्धा—अन्धाको एगो पैसा मिले दाता। भगवान तुम्हारा भला करेगा।

(पैसेके वास्ते सज्जादका जेबमें हाथ डालना, इतनेमें अन्धेका आंख खोलके सज्जादके सिर पर लाठी मारना, सज्जादको गश आ जाना, और जमीनपर गिर पड़ना।)

(चार आदमियोंका प्रवेश।)

पहला आदमी—जल्द, जल्द। देर करनेका वक्त नहीं है। बहुत रुपये हैं।

(एक जगहकी घास हटानेसे एक दरवाजेका निकलना, और उसमें सज्जादको लेकर एकके सिवा सबका घुसजाना, और एक आदमीका उस दरवाजेको बन्द करके पहलेकासा बना देना।)

एक आदमी—अंधराके एगो पइसा मिले दाता, राम राम, अंधराके केऊ कुछो देखकई न।

[जाना।

चौथी झांकी ।

राजमहलके पासकी पहाड़ी जमीन, मार ।

सज्जाद बेहोश पड़ा है, और चार आदमी बैठे हैं ।

सज्जाद—(होशमें आके) तुमलोग मुझे कहां लाये हो ? मैं कहां हूं ?

पहला आदमी—आप बहुत अच्छी जगहमें हैं । कुछ पर्वा नहीं ।

स०—मुझे यहां क्यों लाये हो ?

प० आ०—कहता हूं । मगर पहले हमारे एक सवालका जवाब आप दे लें । अङ्गरेजोंकी सल्तनतसे आप खुश हैं ?

स०—यह तो एक अजीब सवाल है ! इससे तुम्हारा मुद्दआ क्या है ? (जीमें) अल्लाह, यह क्या बात है ? ये कौन हैं ? शक्लसे तो ये देहाती मालूम होते हैं, पर जबान इस कदर फसीह !

प० आ०—पहले आप हमारे सवालका जवाब तो दें, पीछे मुद्दआ आपही मालूम होजायेगा ।

स०—जबतक सवालका मतलब न समझलूं, क्योंकर जवाब दे सकता हूँ ? तकलीफ और आराम तो सबहीकी सल्तनतमें है ।

प० आ०—कहना आपका बजा है, मगर तब भी कमोबेश । गरज हमारी यह है कि अकबर वगैरह बादशाहोंके जमानेमें रय्यतको जैसा आराम था, इनके वक्तमें वैसा है ?

स०—बेशक मुसल्मानोंकी सल्तनतमें बाजे बादशाह ऐसे थे कि अगर मैं बुतपरस्त होता, तो रोज उनकी खुद पूजा किया करता । मगर बहुतेरे उनमेंसे अय्याश, खुदराय और जालिम थे । हरचन्द मैं मुसल्मान हूं, पर तोभी हमारी यह ख्वाहिश नहीं कि इस वक्त मुसल्मानोंकी सल्तनत फिर हो ।

प० आ०—(तानेसे) तुम्हारे अङ्गरेजोंमें तो सबही नफ्सकुश हैं—सबही गोया भेड़के बच्चेसे सीधे हैं।

स०—हमारी यह गरज नहीं। मुसल्मानी सल्तनतमें बादशाहोंकी खुदराईकी हद न थी, और अङ्गरेजी सल्तनतमें क्या जालिम क्या जाबिर सबको आईनकी पाबन्दी है। इसी सबब इनके वक्तमें जुल्मकी जियादती नहीं है।

प० आ०—अङ्गरेजी सरकार जो कभी कभी बड़े बड़े जुल्म किया करती है, उनसे आप नावाकिफ हैं, या उनके कबूलनेमें आपको कुछ उज्र है ?

स०—दोनोंसे एक भी नहीं।

प० आ०—खैर, आपका देश अगर आजाद हो तो आप खुश हों या नहीं ?

स०—भला, नेकी और पूछ पूछके ?

प० आ०—आपके देसको आजाद करनेकी कोई कोशिश करता हो, तो आप उसका मदद करें या नहीं ?

स०—(जीमें) वाहवा, यह बात क्या है ! सब कुछ अच्छी तरह जान लेना चाहिये। (जाहिर) इस सवालका जवाब फिलहाल मैं नहीं दे सकता, मगर इस तरहकी कोशिश क्या कोई कर रहा है ?

प० आ०—हां, बहुत दिनोंसे यह कोशिश यहां होरही है। देखिये, हमलोगोंने कितनी बन्दूकें और दूसरे हर्बे इकट्ठे किये हैं।

स०—(मुसकुराके) आप क्या इसी सामानसे अङ्गरेजोंको हिन्दुस्तानियोंकी जमीनसे निकाला चाहते हैं ?

प० आ०—दिल्ली शहर एकही दिनमें नहीं तय्यार हुआ था।

स०—मुझे यहां क्यों लाये हो ?

प० आ०—सुनिये। काफिरोंने हमलोगोंका सब माल असबाब लूट लिया है। हमलोगोंकी राय है कि अपनी छीनी हुई दौलत मय सूद उनकी रऐयतसे वसूल करें। कुछ रुपये जियादे

जैसा होजावें तो बारूदका कारखाना शुरू हो। आपको ४००० रुपये देने पड़ेंगे।

स०—अगर न दूं?

प० आ०—तुम्हारी बीबी बेवा होगी।

न०—(मुसकुराके) तो हमारी एक बात सुनिये। यह आपकी कोशिश बिलकुल लाहूट है। आप कभी कामयाब न होंगे। हमारे मुल्कके बुजदिले हनोज आजादीके मजेको कदर नहीं समझते। फर्ज किया कि इन्हें आजादी हुई भी, तो बहुत दिनोंतक इसे सम्भालना मुहाल है। इसके अलावह एक बात और भी है कि आजादीके नामसे आपकी तावेदारी कोई कबूल नहीं करेगा।—आप इस खयालको छोड़ें। और मैं वादा करता हूं कि इसके बारेमें किसीसे नहीं कहूंगा।

प० आ०—(हंसके) खैर यह बात तो पीछे होगी। पहले यह कहिये कि रुपया देना आपको मंजूर हैं या नहीं।

स०—हमारे पास तो रुपये फिलफेल हैं नहीं।

प० आ०—आप इन्हें एक इकरारनामा लिख दीजिये कि मैं इनके पास ४००० रुपयोंका कर्जदार हूं, बस काफी है।

स०—अगर मैं आपकी सब बातें जाहिर करदूं?

प० आ०—हर्ज क्या है? सबूत दे सकेंगे?

स०—क्यों, आपका यह मकान।

प० आ०—कहां है यह मकान?—मालूम है?

स०—नहीं, यह तो नहीं मालूम है। मगर शायद ढूंढ़के निकाल लूं।

प० आ०—(मुसकुराके) आपके ऐसे सैकड़ों आये और गये मगर कोई तो न ढूंढ़ सका।

स०—क्यों?

प० आ०—क्योंकि बेहोश आये, और बेहोश गये।

स०—बेहोश आनेका मतलब तो समझता हूं—यानि जैसा हमारे वास्ते हुआ:—मगर बेहोश जाते हैं क्योंकर ?

प० आ०—शराब और अफयून।

स०—(जीमें) खुदाकी पनाह, यह जब्र! जनाब, आपका दौलतखाना कहां है ? जनाब तो आपकी बड़ी फसीह है।

प० आ०—जी, आपकी इकबालसे बन्देको बहुतसी जबानोंमें दखल है।

स०—(झट उठकर, एक बन्दूक उठा उसका मुँह एक बारूदके पीपेमें लगाके) बस देखिये, खाह कलामुल्लाह छूके कसम खाइये कि "तुम्हें छोड़ देंगे" या नहीं तो हुक्म दीजिये, बन्दूक दाग दूं, और हमलोग सबके सब शामिलही बहिश्तकी राह लें।

(एक शख्सका आहिस्ते आहिस्ते दबे पांयसे प्रवेश और सज्जादके बायें कांधेपर जोरसे झटका देना, सज्जादके हाथसे बन्दूकका गिर जाना, और डोरीसे सज्जादका हाथ बांधना।)

प० आ०—हज'त आपकी बहादुरी अक्लमन्दी और चालाकीमें बत्तीभर शक नहीं। अगर आप हमारे शरीक होते तो हमारा बड़ा काम निकलता। मुआफ कीजियेगा, हमलोग सिर्फ अपना फर्ज अदा करते हैं। जबतक आप हमलोगोंकी रायमें न मिलेंगे तबतक बतौर कैदीके भूखे प्यासे यहीं रहना पड़ेगा। (साथियोंको इशारा करना, और उनका दो एक तख्तोंका उठाकर एक गढ़ेमें सज्जादको गिरा देना।)

स०—(अन्दरसे) यहां बड़ा अन्धेरा है। खाना दीजिये या न दीजिये मगर बराय खुदा एक चिराग तो दीजिये। हज'त छिपकिलियां वगैरह कीड़े बदनपर रींगते हैं। बराहे-मिहरबानी रोशनी दीजिये।

प० आ०—रुपये देना मंजूर है ?

स०—(कड़ी आवाजसे) नहीं, नहीं, दस हजार मरतबे नहीं। मुझे बुजदिल मत समझिये। लेकिन याद रहे कि अगर किसी हिकमतसे कभी खुदाने इस दोजखसे रिहाई दिलाई, तो इन्शा अल्लाह तआला आपलोगोंको पूरी सजा दिलाऊंगा।

प० आ०—(हंसके) बहुत खूब।

[सबका जाना।

—

पांचवीं झांकी।

बाग।

कई एक आदमी बैठे शराब पी रहे हैं और गा रहे हैं।

पहला मतवाला—गुरू, अब बहुत हुआ। गुरू, जरा गिलास तो दो, गला तर करलें।

दूसरा मतवाला—अरे उल्लूका पट्ठा तूने दो बोतलें तो साफ कर डालीं, अब खींचेगा तो चुम डूब करने लगेगा।

प०म०—दुर जोरूका भाई, दोही तीन बोतलोंमें घबरा गया? ला, ला, कुछ पर्वा नहीं। तेरी बहन रांड़ न होगी।

तीसरा म०—अगर होहीगी तो भी क्या पर्वा है गुरू? अब तो रांड़ोंकी शादीकी भी चाल निकला चाहती है।

(सबका शराब पीना।)

कुछ दूर बुलबुलका प्रवेश।

बुलबुल—अब नहीं चल सकती। पांओंमें आबले हो आये हैं। —मामूका घर अभी और कितनी दूर होगा?—न मालूम मामू हमें पहचानेंगे या नहीं? अव्वल तो वह कुछ अपने मामू नहीं,

दूसरे आज आठ आठ बरस हुए कि न हमने इनको देखा है और न उन्होंने हमको। (आसमानकी तरफ देखके) अल्लाह, क्या घनघोर घटा छा आई है! जरूर पानी आयेगा। (बादलका गरजना और बिजलीका चमकना) उः क्याही भयानक आवाज है, हमारे कानको बहरा किये देती है। (गौर करती हुई) अल्लाह, क्या करूं, कहां जाऊं?—वह चिराग टिमटिमा रहा है, वहां जरूर बस्ती होगी। वहीं जाऊं पनाह लेने लायक जगह मिले तो मिले। (कुछ आगे बढ़के) अल्लाह, ये तो शराबी हैं।

[भागना।

चौथा स०—अरे यार एक औरत है।

दू० म०—अरे, हां रे! नौजवान, हसीन, बरस सोलह एककी।

प० स०—यारो, मामला हाथसे निकला जावे है, देखते हो, क्या, पकड़ो पकड़ो।

सबके सब—चोर भागा जाता है। पकड़ो पकड़ो।

सबका जाना, और सुम्बुलको पकड़के लेआना।

प० स०—डर क्या है, जानी? भागती क्यों थीं?

दू० म०—(गिलासमें शराब भरके) जानी, अपने मुंहशरीफमें जरासी शराब डाल लोगी?

ती० स०—(गिलास छीनकर) अरे पाजीका जना, यह शोखी, यह एक भलेआदमीके घरकी लड़की है, सूझता नहीं? इतनी शोखी क्यों करता है?

सुम्बुल—(जीमें) खुदा, उनसे बेपूछे आई हूं, उसीकी यह सजा है।

प० स०—अरे तुमलोग यहांसे जरा चले तो जाओ। यह डरती है।

ती० स०—गुरू, सच कहियो। "अन्धा खोजे दो आंख?"

प० स०—अरे, नहीं रे नहीं। (कानमें कुछ कहना।)

ती० स०—अच्छा खैर, मगर, साले, दगा मत कीजियो।

(पहले मतवाले और सुम्बुलको छोड़के
और सबका जाना।)

मत०—डर क्या है, जान साहिब? हमने अभीतक व्याह नहीं किया है। हम तुमहीसे व्याह करेंगे—सच कहते हैं, सिवा तुम्हारे और किसीसे व्याह नहीं करेंगे—और खूब प्यार करेंगे। खौफ क्या है? तुम कहांसे आती हो, जानी?

सुम्बुल—देखिये, मैं बड़ी दूरसे चली आती हूं, मुझे बड़ी भूख लगी है। हमें कुछ खिलाइये।

मत०—अच्छा न क्या खाओगी जानी?

सुम्बुल—जो खिलाइये। (गौर करके) हमें खरबूजा बहुत पसन्द है। अगर होसके तो एक खरबूजा ला दीजिये।

मत०—जानी, एकको कौन पूछता है; कहो तो तुम्हारे लिये २० ठो ला दें। मालीने आजही तो तोड़के रखा है। तुम्हारे लिये क्या नहीं लासकता हूं, जानी।

सुम्बुल—तब मिहरबानी करके कुछ खाना और दो खरबूजे ला दीजिये। और देखिये, कोई दूसरा छीलके देगा तो मैं नहीं खाऊंगी। मैं अपनेही हाथसे छीलके खाऊंगी, सो अगर मिल जाये तो मिहरबानी करके एकाध छुरी भी लेते आइयेगा।

मत०—प्यारी, यह तो बगीचा है। यहां छुरी कहां मिलेगी? यहां तो एक हंसुआ है। उसीसे हमसब भी बोतलका मुंह तोड़े हैं। कहो तो उसीको लिये आवें?

सुम्बुल—मुजायका क्या? उसीको लेते आइयेगा।

मत०—जरासी शराब पियोगी, जान साहब?

सुम्बुल—पहले खाना तो ले आइये, फिर देखा जायगा।

(मतवालेका जाना, और हंसुआ, खाना वगैरह लिये
प्रवेश।)

मत०—लो, जान साहब, जो जो मांगीथिन सब लाके हाज़िर किया।

सुम्बुल—तब जरा आप तकलीफ करके बाहर जा रहते तो बड़ी मिहरबानी होती! मुझे मर्दोंके सामने खाते बड़ी शर्म मालूम होती है।

मत०—लो जानी, भला यह कैसी बात! तावेदारको तबर्रुक नहीं मिलेगा? जान साहब, भला अकेली अकेली खाओगी?

सुम्बुल—जी नहीं, मुझे न मालूम क्यों बड़ी शर्म मालूम होती है। आप जरा बाहर जा रहिये। मैं तुरन्त खा लेती हूँ।

मत०—अच्छा जानी, तुम्हारीही बात सही। प्यारी, तुमपर जान सदके है, भला तुम्हारी बात उठ सकती है? अच्छा जानी, हम बाहर जाते हैं, तुम खाओ।

मतवालेका बाहर जाना, और सुम्बुलका किवाड़ी बंद करके सिकरी चढ़ा देना।

नेपथ्यसे मत०—जान, यह क्या? किवाड़ी क्यों बंद कर दियो?

सुम्बुल—जी, योंही। शायद कोई सामने आ वा जाये, तो फिर मैं खा नहीं सकूँगी। आप जरा बाहरही रहें।

नेपथ्यसे मत०—कुछ डर नहीं जानी। क्या मजाल कि कोई भीतर जाये। प्यारी, तुमपर जान कुर्बान है, जरा मिहरबानी करके हमारे लिये भी रखना

सुम्बुल—(हलुआ लेके मुसकाती) अब दिनभर रोनेके लिये भी वक्त नहीं है। सज्जाद! जालिम अब मरती हूँ, मगर हाय मरते वक्त तेरी सूरत नहीं देखी! अल्ला, अब तेरी कमबख्त बेटी इस दुनियासे रुखसत होती है। खुद-कुशी गुनाह तो है, मगर क्या करूँ औरतोंके लिये इज्जतसे बढ़के कोई चीज नहीं है। खुदाया! मैं लाचार हूँ, हमारे गुनाहको बख्श! (रोती रोती) सज्जाद, जालिम तुझको मैं प्यार करती थी—अपनी जानसे भी जियादे प्यार करती थी। हाय जालिम, एक नजर भी तुझको इस वक्त देखती—अब अफसोस करनेसे क्या होता है। (रोती रोती—आंख बन्द करके) देखो मतवाले, देखो, मैं कैसा खाना खाती हूँ।

(गलेमें हलुयेका लगाना, और गिरना।)

छठा अंक ।

पहली झांकी ।

राजमहलकी पासकी पहाड़ी जमीन ।

चार एक कुलियोंके साथ बाबू हेमचन्द्रका प्रवेश ।

हेम०—पूर्वे समुद्रो एई स्थान पर्जन्तो विस्तृत छिलो । सुतरां मृत्तिकार कोनो ना कोनो स्तरे सामुद्रिक जन्तुर अस्थि-कंकाल प्राप्त होवा जाइते पारे । सेई अनुसन्धानेई आमार ए खाने आसा । (कुलियोंसे) तोमलोग आब कोई मिलके माटी खूंड़ो, कोई हाड़ ऊड़ पानेसे हामको आन के दो ।

(कुलियोंका वैसाही करना ।)

पहला कुली—लेहु न बाबू, एगो हाड़ एही तो हकई ।

हेम०—(लेके) ए तो देखछी हाथेर अंगुलेर हाड़ । मनुष्येर बोले बोध होय ना । थाक, कलिकाताय निया गिया भालो कोरे परीक्खा कोरा जावे । खोदो, खोदो, आर खोदो ।

दूसरा कुली—ए बाबू, हियांसे मटिया फुलल फुलल बुझा हई । बाबू, एकारा खोदियई की ?

हेम०—हां हां खोदो, देखो । ओसका भीतरमें क्या हाय ?

दू० कु०—बाबू हियां तो बड़गो ऐमन एगो पत्थर चांपल हई ।

हेम०—दो तीन आदमी मिलके ओसका ओटायके फेंक दो ।

(कुलीलोग वैसाही करते हैं ।)

भीतर—यह क्या, यह रोशनी किधरसे आई ?

कुलीलोग—अरे, के हो भितरसे बतिया हई ।

भीतरसे—हैं, यह तो सूरजकी रोशनी है! या मुश्किलकुशा! इस दोजखसे रहाई हुई क्या? दो रोज और बन्द रहते तो न बचते।

(गढ़ेमेंसे सज्जाद ऊपर चढ़ना चाहता है।)

कुलीलोग—(डरके) ए बाबा, ए भुंईफोड़ भूत रे—ए। दादा रयबा कैतबड़ हई, देख भाग रे, भाग रे।

[कुलियोंका भाग जाना।

हेम०—(डर और खुशीसे) ए कि प्रकृतिर आवर्तने भू मध्ये कोनो नूतन जीवेर सृष्टि होलो ना कि? यदि ताई होय, आमार नाम चिरस्मरणीय होबे। आमि प्रथम आविष्कार कोरेछी।—किन्तु एकटू ओरे डाड़ानो भालो, कि जानी जोदी हिंस्र जन्तु होय। विज्ञानेर जन्ने कि आमार बहुमूल्य मनुष्य जीवन हाराबो?

(कुछ पीछे हट जाना।)

सज्जाद—(ऊपर आके) या अली, शुक्र है, शुक्र है अल्लाह तआलाकी दरगाहमें! आज बहुत दिनोंके बाद आदमीकी सूरत देखनेमें आई है। अहा बाबू—

हेम०—(डरसे कुछ और पीछे हटके) आरे, तोम कौन हाय, मानुषेर मत कोथा कोहे जे, खबरदार हामारा पासमें तोम मत आ! खाबारदार, इधर मत आ।

सज्जाद—वाह, ये तो हेमबाबू हैं। क्यों बाबू हमें आप पहचानते नहीं?

हेम०—बा:, खूब बोलते पारे देखची। तोम क्या मानुष हाय! बोलो, तोम आदमी है? ना। एकटा आधटा प्रमाणे किछू बिश्वास कोरा उचित नोय। जुक्ति शास्त्रेर नियम-विरुद्ध। हाथ पा मानुषेर चेये एकटू लम्बा बोले बोध होच्चे। तोमको दुम है कि नहीं, देखे। तोम घूम जाओ तो, हाम तुमरा दुम देखने मांगता है।

सज्जाद—आप पागल होगये हैं क्या? हजरत मैं सज्जादहुसैन हूं। मुझे आप पहचानते नहीं?

हेम०—(धोती हंभालते संभालते) देखो, खबरदार आगे मत बढ़ो। (डरसे और पीछे हटना) देखो, तोम हुर्डग बात बोलो, आगे मत बढ़ो। आच्छा शाज्जादहुशेन तो शंस्कृत जानता था, तोम शंस्कृतका वर्णमाला पढ़ो तो, क ख ग।

सज्जाद—तोबा, अच्छी आफतमें फंसा हूं। लो—क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ—

हेम०—अच्छा थाम। फांकी दिये दांत देखे निङ्ची। दांत गुलो ठीक मानुषेर मत। (कुछ आगे बढ़के) तोम हमको काटेगा तो नाई।

सज्जाद—तुम्हारा सर चबा जाऊंगा।

हेम०—ओ बाबा, विद्धान साथाय रोइलो।

[भागता है।

सज्जाद—ए हेमबाबू सुनिये सुनिये,—काटूंगा नहीं, नहीं काटूंगा।

(हेमचन्द्रका पुनः प्रवेश।)

सज्जाद—क्या आप दीवाने होगये हैं ?

हेम०—अच्छा तोम आगेका कोनो बात बोलो, तोब हाम तोमरा बातको एतमाद कोरेगा।

सज्जाद—"साइण्टिफिक ऐसोसियेशन" में आपने कभी इस मजमून पर लेक्चर दिया था या नहीं कि "आदमी बन्दरको औलाद है।" (जोसें) सो और कोई हो या न हो, मगर तुम तो यार बेशक वही हो।

हेम०—हां हुआ, हुआ। आप ठीक शाज्जादहुशेन है। किन्तु आप हमारा बड़ा लोकशान किया। हाम आपका दारा एक बड़ा डिस्कवरी किया था। आच्छा, आप एशका भीतरमें किश लिये ढूका था ?

स०—कई एक बदमआशोंने मुझे यहां कैद करके रखा था। खैर वह सब हाल मैं आपसे कह सुनाऊंगा हमारे मकानकी खबर

आपको मालूम है ?

हेम०—हां कुछ कुछ हाम जानता है। बड़ा खाराप खबर है। कोई आदमी आपका शब धन आर जायदाद ले लिया। आपका बोन आर आब्बाजानशेनका पाता नाई लागता। आर एकठो मजिष्ट्रेटके विरुद्धमें आप एखबारमें लीखा था ओशका वास्ते आपका नामशे वारंट है।

स०—वाह खुशखबरीकी गोया बारिश होरही है। बगावत वाले मुकद्दमेका क्या हुआ ?

हेम०—नाई, शेरेफ मजिष्ट्रेट हातकरज्जतका नालिश कीरा।

स०—नालिश पटनेहीमें हुई थी ?

हेम०—हां।

स०—सुम्बुल, जिसके बारेमें मैंने अखबारमें इश्तिहार छपवाया था, उसकी खबर कुछ आपको मालूम है ? उसका कोई पता लगा या नहीं ?

हेम०—हाम ईशका हाल आच्छी तरहशे बोलने नेई शकता—मालूम होता है कि कोई पाता नाई लगा।

स०—हमारी बहनके बारेमें क्या फर्माया ?

हेम०—ओई बदमाइश शामशेरबाहादुर काहां ले जायके ओशको राक्खा है !

स०—एं, कहते क्या हैं ?

[दोनों गये।

दूसरी झांकी ।

बिहार, खानकाह, शमशेरबहादुरकी हवेलीकी
एक कोठरी ।

अब्बास सिकरीमें बंधा पड़ा है, और सामने शमशेरबहादुर
खड़ा है ।

शम०—अगर दो काम करे तो तेरी जान बचती है ।

अब्बास—क्या, क्या ?

शम०—एक तो यह कि———तू हमें लिखदे कि मैंने अपनी सब जायदाद क्या मनकूला और क्या गैरमनकूला शमशेरबहादुरको तिलाजलि देदी ।

अब्बास—मंजूर है । और ?

शम०—और यह कि एक महीना पहलेकी तारीख लिखके तू हमें इस मजमूनका अपनी माके नामसे, यानी हमारी बीबीके, एक खत लिखदे कि मियां सज्जादकी बहनपर मुझे शक होता है ।

अब्बास—(गुस्सेसे) बेगुनाह, सची, भोली गुलशनपर शक ? जिस वक्त तेरे मुंहसे यह बात निकली, तू गारत न होगया ?—इसमें तुझे क्या नफा है ?

शम०—(गुस्सेसे) नफा यही है । एक बाकराको निकाल लाना, और फातिमाको निकाल लाना, अङ्गरेजी आईनके रूसे दोनोंमें बहुत फर्क है ।

अब्बास—(जोशमें) अल्लाह, अगर हमारे हाथ पांव इस वक्त बन्धे न होते तो इसका सर मैं अभी मारे घूँसोंके तोड़ डालता । (प्रकाश्य) जबतक मुझमें जान है, तबतक मैं ऐसा नहीं लिखनेका ।

शम०—(गुस्सेसे) तुझे ये दोनों बातें जरूरही लिख देनी

पड़ेगी। (दांतपर दांत सससमसाके) अगर नहीं लिख देगा तो अभी अभी तेरा काम तमाम करता हूं।

अब्बास—(बड़े गुस्से से) कमबख़्त, दोजखी, तू कभी इस तरहका ख़याल भी न कर कि हमारा बदन तेरे इख़्तियारमें है तो हमारा दिल भी तेरे इख़्तियारमें होगा—यह नहीं तेरे इख़्तियारमें है। और तू इस बातको यकीनन जान, कि मियां सज्जाद तेरे इस जुल्मका बदला लेंगे, पै लेंगे।

शम०—(मुसकुराके) तेरा सज्जाद है कहां, तू जानता है?

अब्बास—कहां हैं?

शम०—जेलखानेमें। राजमहल, या कहां जो भागके छिपा था, सो सरकारने वहीं गिरफ्तार कराके कैद किया है।

अ०—उनकी रिहाईकी कोशिशें भी तो आखिर होती होंगी?

शम०—अब क्या उसके पास रुपये हैं, कि जिसकी वजहसे लोग उसकी तरफसे लड़ें? उस दफेको तो मैंने पहलेहीसे रफा कर रक्खा है।

अब्बास—गुलशन कहां है?

शमद—इससे तुझे क्या काम? अरे तू पहले अपनी तो खबर ले। तुझे औरोंकी क्या फिक्र है? बेफाइदा वक्त हमारा जाया न कर, मुझे जल्द बता कि जो मैंने अभी कहा, वह तुझे मंजूर है या नहीं?

अब्बास—नहीं मंजूर है। हिन्दुस्तानी बुजदिले तो होते हैं, मगर इहसान-फरामोश नहीं होते। अपने मुहसिनके वास्ते हर तरहकी तकलीफ गवारा करते हैं। जो सज्जाद हमारी मुसीबतमें काम आया था, उसीकी बहनको मैं बदनाम करूं? तूने क्या सबही को शमसेरबहादुर समझ रखा है?

शम०—क्यों रे बदजात, (अब्बासके सीनेपर लात रखके) तुझे लिखना मंजूर है या नहीं? कह जल्दी। देख, तूने इन्कार किया और मैंने मारही डाला।

भेस बदले फलीमाका प्रवेश और शमशेरबहादुरको
पीछेसे मारके गिराना है और
भाग जाना।

शम०—(डरसे) खुदावन्दा ! यह क्या, यह क्या ! (उठके) खैर, बता तू लिख देगा या नहीं ? अब भी कहता हूं, लिख दे, लिख दे, नहीं तो—

(किवाड़ीमें कोई धक्का देता है।)

शमशेर—कौन है ?

(फिर किवाड़ीमें कोई धक्का देता है।)

शमशेर—कौन है, जवाब क्यों नहीं देता ?

नेपथ्यसे—जी हम हैं, रहमत।

शमशेर—क्या चाहता है ?

नेपथ्यसे—हुजूर एक ठोक खत है।

शमशेर—बाहर दालानमें जाके रख दे।

नेपथ्यसे—जो लाइस है वह कहे है कि पढ़के जवाब तुरन्त दें नहीं तो अच्छा नहीं होगा।

शम०—ऐं, अच्छा नहीं होगा ! सो क्या ! खुदा खैर करे !

[गया।

अब्बास—अब मुझे कोई उम्मीद बाकी न रही। मियां सज्जाद खुद कैद हैं, उनकी दौलत भी इसीके हाथमें है, बाकी रहीं सुम्बुल और गुलशन सो इन दोनोंका भी पता नहीं है। (आह भरके) इनही दोनोंकी जियादे फिक्र है।

(चिट्ठी लिये शमशेरबहादुरका पुनः प्रवेश।)

शम०—इस खतको किसने लिखा ? अल्लाह कुछ भी समझ नहीं पड़ता। खोलके देखही क्यों न लूं। (चिट्ठीको दो एक पांती पढ़ते पढ़ते कांपना।) सब खट्टी हुआ ! सुना था कि डूबके मर गई ! अब तो मैं गया ! न जाऊं, तब भी नहीं बनता ! खुदावन्दा क्या करूं ?

[कांपता कांपता गया।

अब्बास—कांपता कांपता फिर गया क्यों? खुदाया! अब तो कुछ उम्मीद बंधती है। लेकिन कहां क्या होरहा है कुछ भी समझमें नहीं आता।

(हलीमाका प्रवेश।)

हलीमा—ताला बन्द करनेको भूल गया है। मैं तुम्हारी सिकरी खोले देती हूं। (सिकरी खोलनेको कोशिश।) (सर पर हाथ ठोकके) हायरे करम, यह कैसी सिकरी है! इसमें तो ताला लगा है। मगर तुम्हें कुछ खौफ नहीं मैं जैसे बने तुम्हें बचाऊंगी।

[जाना चाहती है।

अब्बास—एक बात जरा सुन लीजिये! गुलशनकी कोई खबर मिली है?

हलीमा—मिली है। उसका एक बाल भी बांका न होने पावेगा। डरो मत।

[गई।

(शमशेरबहादुरका फिर प्रवेश।)

शमशेर—तुझको यहां नहीं रहने दूंगा। चल भीतर चल।

अब्बास—हमारे हाथ पांव तो बंधे हैं, मैं क्योंकर जाऊं?

शमशेर—हाथ पांवके बंधे रहनेसे क्योंकर चलते हैं, तुझे नहीं मालूम? देख।

[लात मारता और लुढ़काता अब्बासको लेगया।

तीसरी झांकी।

बिहार, एक छोटासा मकान।

(एक स्त्री और एक लड़केका प्रवेश।)

लड़का—अम्मा, मुझको इस भेसमें बड़ी शर्म मालूम होरही है।

स्त्री—छी बेटी, शर्म कैसी? इतनी दूर आकर अब शर्मानेसे काम नहीं चलेगा। सिर्फ तुम्हारेही लिये न इतनी दूर आई हूं? अब देखो।—

लड़का—(शर्माके) अम्मा, अब जियादा हमें न शर्माओ। अब और कितनी दूर चलना पड़ेगा?

स्त्री—यहीं डेरा मिले तो मिले।

(हलीमाका प्रवेश।)

हलीमा—(खुश होके) येही तो हैं।

स्त्री—(हलीमाको इशारा करके) हम लोग कुछ दिन यहां रहना चाहते हैं, कोई मकान किरायेमें मिल सकता है? (फिर इशारा करती है।)

हलीमा—हां मकान क्यों नहीं मिलेगा? मगर किराया पेशगी चाहिये। क्योंकि मैं तुम लोगोंको पहचानती नहीं।

स्त्री—हां हां किराया पेशगीही ले लेना, मगर जरा मकान तो दिखलाओ। (एक किनारे हलीमासे) तुम्हें वह पहचानती नहीं। पहचानती तो न आती। कालीप्रसाद आये हैं?

हलीमा—आये हैं। आओ, मैं मकान दिखला दूं।

(सबके सब गये, और कुछ ठहरके कालीप्रसादका और उस स्त्रीका प्रवेश।)

काली०—(पर्देके बाहरसे) वह लड़का कौन है, हमें बतला दीजिये।

स्त्री—तुम्हें पीछे आपही मालूम होजायेगा।

काली०—मालूम होता है कि उस लड़केको जो है सो हमने कहीं देखा है। वह आपका कौन है?

स्त्री—हमारा कोई नहीं है। हमें योंही "अम्मा" "अम्मा" कहके पुकारे है। खैर कागज पत्तर सब लिख पढ़के तय्यार रखे हो?

काली०—सब तय्यार है।

स्त्री—सज्जाद?

काली०—जेलखानेमें।

स्त्री—कलकत्तेमें अपील हुई है?

काली०—जिस दिन आपका खत यहां पहुंचा, उसीके दूसरे दिन जो है सो अपील होगई। देसी अखबार जितने हैं, सब हमही लोगोंकी तरफ हैं। बहुतेरे बिहारी वकील भी जो हैं सो मुफ्तमें हमलोगोंकी तरफसे बहस करते हैं। वकील लोग तो कहते हैं कि कुछ नहीं होगा। बहुत होगा तो रुपया हजार एक जुरमाना होगा। मियां सज्जादने तो अपने हाथों अपने पांवमें कुल्हाड़ी मारी है। अपना कुसूर इकरार कर लेते तो कुछ नहीं होता। तब सो तो हुआ नहीं उलटके जो है से हाकिमको जवाब दिये कि —"जालिम सुफेद रूओंके जुल्मसे मजलूम हमवतनोंको बचानेके लिये मुझे अपनी जान भी कुर्बान करनी पड़े तो वह भी बहर-हाल मंजूर है।" यह सुनतेही तो हाकिम भूत होगया।

स्त्री—देखो, खबरदार सज्जादको न मालूम हो कि मैं उसकी रहाईके लिये पैरवी करती हूं।

का०—बहुत खूब।

स्त्री—शमशेर बहादुरको बुलवाया है?

का०—जी हां, आ चला।

स्त्री—देर होती है, फिर किसीको भेजो।

[कालीप्रसाद गये।

स्त्री—(गालपर हाथ रखके और कारती हुई) देखिये क्या होता है।

(शमशेरबहादुरका प्रवेश।)

शम०—(परदेके बाहरसे।) आ-प-ने मुझे क्यों—(कांपना।)

स्त्री—(गुस्से से) नमकहराम, दगाबाज, पाजी, क्यों बुलाया है, तुझको अभीतक नहीं मालूम हुआ है ?

शम०—आ-प-तो डूब—(कांपना।)

स्त्री—मैं डूबके मर गई, तू ने समझा था ?

कालीप्रसादका फिर प्रवेश।

स्त्री—दीवानजी, दस्तावेज कहां है ले आओ।

का०—जी साथ ही है।

स्त्री—(शमशेरबहादुरसे) उसपर दस्तखत करदे।

शम०—(डरके) क्या दस्तखत करूं ? उसमें क्या लिखा हैं ?

स्त्री—दीवानजी पढ़के सुना दो !

का०—इसमें लिखा है "मैं कि सय्यिद शमशेरबहादुर, वल्द सय्यिद फय्याजबहादुर, साकिन डिवीजन ओ परगने विहार जिले पटनेका हूँ। इकरार करता हूं कि बीबी महमूदा औजये सानी सय्यिद खैरातहुसैन मुतवफ्फा पिदरे सय्यिद सज्जादहुसैन साकिन डिविजन ओ परगने विहार जिला पटनाने अपनी कोई जायदाद मनकूला या गैरमनकूला वजरिए वसीयतनामेके मुझे अता नहीं की है। अदालतमें बीबी मौसूफाका दस्तखत किया हुआ जो वसीयतनामा पेश किया है, वह महज जाली और लिवासी है।"

शम०—सज्जादने तो आपको अपने मकानसे निकलवा दिया था फिर आप क्यों उसके लिये इतनी पैरवी कर रही हैं ?

महमूदा—सज्जादने हमें मकानसे नहीं निकलवाया था, मैं खुद चली गई थी। दीवानजी दूसरी बात भी पढ़के सुना दो।

का०—"बीबी महमूदा मजकूरे बाला पर जो शक किया गया

था वह बिलकुल दरोग और बेबुनियाद था। बीबी हलीमा जौजे बिरादरे कलां हकीकी मनमुकिरसे बीबी महमूदा मज्कूरे बालाके अज इब्तदाय हालते तिफ्ली अजहद दोस्ती थी। सन १२७८ फस्ली मुताबिक सन १८७१ ईसवी में बीबी हलीमा मज्कूरे बाला बड़ी बीमार थीं। इसी वजहसे बीबी महमूदा मज्कूरे बाला बलिहाज दोस्ती उन्हें देखनेके लिये चार दिन हमारे यहां आई गई। इसीसे शक मजकूरे बालाकी बुनियाद पड़ी है। सिवा इसके और कोई अमर नहीं है। उनके पाक जिस्मपर किसी गुनाहका साया भी नहीं पड़ा है।"

मह०—लो, जल्दी दस्तखत कर दो। नहीं करोगे तो प्यादों को बुलवाके बेइज्जत कराऊंगी। उस पर भी नहीं मानेगा तो थानेमें भिजवा दूंगी। हमारे रहते हमारे नामका जाल दस्तावेज बनवाया है।

शम०—(डरसे) जी, मैं आपकी रायसे खिलाफ नहीं हूँ जो हुक्म कीजियेगा जरूर बजा लाऊंगा।

मह०—खैर तो दस्तखत करदे।

शम०—(जीमें) अब चारा क्या है। (दस्तखत करता है) (प्रकाश्य) मगर सज्जाद हम पर नालिश करे तब?

मह०—वह नालिश नहीं करेगा, मैं समझा दूंगी। अच्छा तू अब रुखसत हो मेरे सामनेसे।

शम०—(जीमें) खैर मैं बदला ले लूँगा।

[गया।

मह०—कागजोंको अच्छी तरांसे रखना सज्जाद जब छूट आवे तो उसे देदेना।

कालीप्रसाद गये

(हलीमाका फिर प्रवेश।)

हली०—(घबराई हुई) बहन यह क्या किया? उसे जाने क्यों दिया?

मह०—क्यों क्यों।

हलीमा—अब्बास और गुलशनको कैद किये हुए है।

मह—अल्लाह, यह क्या आफत! तुमने तो हमसे इनका कुछ भी जिक्र न किया?

हलीमा—वक्त कहां मिला?

मह०—अब कौनसी तदबीर हो?

हलीमा—अब तदबीर क्या हमारा सिर होगी? तुम जल्दी थानेमें खबर भिजवाओ। मैं आगे बढ़ती हूं। आज वह जरूर खून करेगा, उसे मैं खूब जानती हूं।

मह०—अच्छा, बहन तुम आगे बढ़ो।

[दोनों गई।

चौथी झांकी।

शमशेरबहादुरका मकान।

(अब्बास सिकरीमें बंधा पड़ा है।)

अब्बास—एकबारगी जानसे मारही क्यों नहीं डालता? अब तो यह तकलीफ बरदाश्त नहीं होती।

(हाथमें किर्च लिये शमशेरबहादुरका प्रवेश।)

शम०—इस बेइज्जतीका बदला जरूर लेना चाहिये। सब दरवाजे तो बन्द करही दिये हैं। जो करना है, वह करके कहीं भाग जाऊंगा। रुपयेसे क्या नहीं होसकता? दोनों हाथोंसे रुपये लुटाऊंगा। आखिर नानासाहिब अबतक क्योंकर बचे हुए हैं? अब्बाससे) क्यों रे, तू गाना जानता है?

अब्बास—(अचम्भेमें आके) क्यों?

शम०—गाना हो तो गाले, गाता गाता बहिश्तकी राह ले। इस दुनियामें तेरा आखिरी दिन यही है।

अब्बास—मारना है तो जल्द मार भी डाल। मगर याद रखना कि इस कामका नतीजा भी तुझे हाथों हाथ खाह इसी दुनियामें या उस दुनियामें जरूर जरूर भुगतना पड़ेगा।

शम०—लव फिर ले। (मारना चाहता है।) ना, मरता ही है तो उसे भी देख ले।

(गया, और गुलशनको लेके फिर प्रवेश।)

गुल०—अब्बास यहीं हैं? (रोके) अब्बास, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। (शमशेरबहादुरसे) मुझे मुआफ़ कीजिये, मुझपर मिहरबानी कीजिये। लौंडीको छोड़ दीजिये—

शम०—(हंसके) तुम्हें नाजिनीं क्योंकर छोड़ूँ? समझाके कहा तो राजी न हुई तो अब जबरदस्तीसे तो राजी होओगी? (गुलशनका चूमा लिया चाहता है।)

गुल०—(रोके) या अल्लाह, कोई ऐसा नहीं है, जो मुझे बचाये? (गुलशनके धक्का देनेसे शमशेरबहादुरका गिरना।)

शम०—तब क्यों री हरामजादी? (गुलशनको पकड़ना चाहता है।)

अब्बास—(बहुत जोरसे चिल्लाके खुदा, इस पाक औरतको इस गुनहगार दोजखीसे बचा। (सिकड़ी तोड़नेकी कोशिश।)

(हलीमाका प्रवेश।)

हलीमा—(किर्च उठाके) वाः शुक्र है, खुदाका! (किर्चसे शमशेरबहादुरको मारती जाती है।) पूरब तरफ़वाली खिड़की बाहरसे खुलती है, यह भूल गया था?

(गुलशन और अब्बासका बेहोश होजाना, बहुत खूनके निकलनेसे शमशेरबहादुरका भी बेहोश होजाना।)

हलीमा—(हाथमें किर्च लिये थरथर कांपती हुई जोरसे हंसती

है।) हा: हा: हा:, क्या मजा हुआ? लोगो, एक मजा और देखो।
(अपनी छातीमें किर्च भोंकके गिरी और मर गई।)

(शमशेरबहादुरको होश होना और घावकी तकलीफसे कराहना।)

(दबरोजटसे रोती रोती नसीमनका प्रवेश।)

नसीमन—है है, यह क्या! (जोरसे रोती हुई) हमारा नसीब जल गया! इसीलिये न तुमने मुझे उस मकानमें चले जाने कहा था? (रोती है।)

शम०—बड़ी तकलीफ होरही है।—मुँहसे बात नहीं निकल सकती।—या अल्लाह, मैं तो अब मरा।

नसी०—(रोके) प्यारे, ऐसी बात मुँहसे न निकालो। तुम्हारे मुँहसे ऐसी बात सुनके हमारी छाती फटती है! तुम बच जाओगे जरूर बचोगे। या हजरत मखदूम, या टिकिया साईं, या पीर मुर्शिद! यह अबकी बच जावें तो मैं खुद तुम्हारे दरगाहोंमें जा जाके नाक रगड़ूंगी, और जो कुछ हमारे पास है सब चढ़ाऊंगी, इनको बचा दे, अल्लाह।

शम०—बेवकूफ—बेवकूफ नहीं देखती?—अब उम्मीद नहीं है। जैसा किया वैसा पाया।—दूसरोंको फंसाना चाहता था, मगर खुद फंस गया। ऐसा फंसा कि जानही गई। अब नहीं बचूंगा—अब नहीं।

नसी०—प्यारे, मैं तुम्हारे पाओं पड़ती हूं ऐसी मनहूस बात मुँहसे न निकालो। (अब्बासको देखकर जोरसे रोना) या खुदा यह क्या हुआ? (अब्बासका हाथ थामके) अरे बेटा अब्बास, इनको बचा दे, बचा दे रे, बचा दे।—हिलता डोलता क्यों नहीं, हाय मुझको क्या हुआ?

(अब्बास और गुलशनको सुध होना।)

शम०—मेरे—इजारबन्दमें—उस जञ्जीरकी—कुञ्जी बंधी है—खोल दो।

(नसीमन वैसाही करती है, और रोती जाती है।)

शम०—(तकलीफसे) मैं मरा,—मैं मरा। (अब्बाससे) बेटा अब्बास, मुझपर मिहरबानी करके सर्फ़ मुआफ कर। (गुलशनसे) बेटी, तू भी मुआफ़ कर, मैं तौबाह करता हूं। इस दुनिया में तो हमारी बुरी हालत रहीही, कहीं ऐसा न हो कि तुमलोगों की बद्दुआसे हमारी आकबत भी बिगड़े।

अब्बास—(दुःखित स्वरसे) लड़कपनसे मैं आपहीके यहां पला हूं, आप हमारे वालिदके बजाय हैं। हमारे पास मुआफ मांगना आपको लाजिम नहीं। जो मुआफ कर सकता है, जो रहीम है, जिसके सामने तौबाह करनेसे, जो आपके गुनाहोंको बख्श दे सकता है, उससे मुआफी मांगिये, उसके सामने तौबाह कीजिये।

नसी०—अरे बेटा अब्बास, तू भी वैसीही बात करता है रे? तो क्या अब सचमुच उम्मीद नहीं है, अब क्या कुछ भी उम्मीद नहीं है?

अब्बास—अम्मा, हम कुछ नहीं कह सकते। सब खुदाके हाथ है।

शम०—बेटा, तुम अपने आठों हजार रुपये फेर लोजो। गुलशनके लिये चार हजार रुपये कहे जाता हूं। बाकी सब तुम्हारी माके नामसे रहा।

नसी०—मुझे तुम्हारे रुपयोंकी जरूरत नहीं। मुझे तुम्हारी जरूरत है। मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी। मुझे साथ लिये चलो, मैं तुम्हारे बगैर नहीं रह सकूंगी।

शम०—बेटा, हमारी आकबतकी खबर रखना। हमारे नामसे खैरात नियाज दिया करना। (कष्टकी वृद्धि) (नसीमनसे) अब मैं रुखसत होता हूँ।—हाय, हाय, भरजिन्दगी मैं कभी तुमसे खुश होके न बोला। तुमसे बहुतही बुरे तौरसे पेश आता था।—बड़ा बुरा काम किया—

नसी०—मेरे खाविन्द, मैं उसीसे खुश थी। अब कौन मुझसे

उस तरह भी पेश आवेगा? देखो, मुझे छोड़ न जाओ, साथ लिये चलो।

शम०—अ—ब्ब—स—,सु—आ—फ—

(बायके झोंकमें हाथपांवोंका पटकाना, और जानका निकल जाना। नसीमनका जोरसे रोना, और अब्बास और गुलशनका समझाना, नसीमनका बेहोश होना, फिर होशमें आना, और रोते रोते कोहराम करना, और शमशेरबहादुरकी लाश पर गिरके मर जाना।)

अब्बास—(नसीमनकी नाड़ी और शरीरको देखके रोवासे स्वरसे) हाय अल्ला, तुम भी रुखसत होगईं? ऐसी पारसा औरत का हाल आज नादिर सुना जाता है। हरचन्द शौहर हमेशा बुरा ही बरतता आया, और तकलीफही देता आया, तौभी तुम्हारी मुहब्बत उनपर जरा भी न घटी। सती होनेका हाल जो सुनता था, सो आज आंखों देखा।

(दाइयोंका प्रवेश, और रोना।)

चलो, बाहर ले चलो।

[सबका प्रस्थान।

पांचवीं झांकी।

सज्जादका मकान।

सज्जाद, अब्बास और गुलशनका प्रवेश।

सज्जाद—(आह भरके) भाई अब्बास, सुम्बुलका कोई पता न लगा सके ? कोई पता नहीं ?

अब्बास—सारे हिन्दुस्तानमें आदमियोंको भेजा है। तमाम तारघरोंमें खबर भेजी है। शहर शहर, गांव गांव, थाने थाने, सरा, मसजिद, दरगाह, रेलवे स्टेशन—ऐसी कोई जगह नहीं जहां न ढुंढ़वाया हो। सिर्फ इसी कदर नहीं, छोटे बड़े सब अखबारोंमें—बिहारबन्धु, भारतमित्र, अवध-अखबार, बनारस-अखबार, कविवचनसुधा, जामे-जमशेद, हिन्दूपेट्रियट, इण्डियन मिरर, इङ्गलिशमैन, पायोनियर—और कितना बताऊं, सबही अखबारोंमें यह इश्तिहार छपवा दिया है कि जो कोई शख्स उनकी खबर लाके देगा, उसे २०००) इनआम दिया जायेगा। मगर कोई कोशिश कामयाब न हुई। (ठंडी सांसका लेना।)

गुलशन—(रोते रोते) आपा, हमलोगोंने कौन क़सूर किया था कि तुम छोड़के चली गई ? मैं तुमसे लड़ती थी, क्या इसीलिये तुम चली गई, आपा ? आपा, वह तो प्यारकी लड़ाई थी, इतना भी तुम समझ न सकीं ? भइयाने भी तो तुम्हें कुछ नहीं कहा ? जबसे तुम यहांसे चली गई हो तबसे भइया बराबर बीमार हैं। जरा इनपर तो रहम करतीं। तुम्हारे लिये भइयाने कैसी कैसी मुसीबतें झेली हैं, और आफतें उठाई हैं ? आपा, अब भी इनपर मिहरबानी करो।

सज्जाद—(अब्बाससे) "सुम्बुल—, सज्जाद बहुतही बीमार हैं जरा एकबार इन्हें देख जाओ।"—यह इश्तिहार जो दिलवाने को कहा था, सो दिया गया ?

अब्बास—जी हां, इस इश्तिहारको छपवाये तो कई एक दिन होचुके। कहां, उसने भी तो नहीं आई ?

सज्जाद—अब्बास, हमें मालूम होता है कि बुलबुल अब इस दुनियामें नहीं है। हमलोगोंकी कोशिश अब बिलकुल नाहक है।—अब्बास, बुलबुलको मैं जिस कदर प्यार करता था, मैं खुदही नहीं जानता था। हाय, अब हमारी आंख खुली। और देखो, मुझे ऐसा मालूम होता है कि बुलबुल भी मुझे वैसाही प्यार करती थी। तुमलोगोंने शायद न ख्याल किया हो, इधर वह हमारे नजदीक बहुत देरतक नहीं बैठती थी; तुझे "आप" "आप" कहती, मैं उसकी तरफ देखता तो शर्माके मुंह नीचा कर लेती। और अक्सर कहा करती कि हमें कुछ कहना है, लेकिन शर्मसे कोई बात खुल के कहती न थी।

अब्बास—अगर ऐसा होता तो वह चली क्यों जाती ?

सज्जाद—मैं नहीं कह सकता कि क्यों चली गई। मालूम होता है शर्मसे।—हाय, मैं क्या उस वक्त अन्धा था ! इतना देख सुनके भी नहीं समझ सकता था। मगर भाई, हो न हो, बुलबुल अब जिन्दा नहीं है। क्योंकि जिन्दा होती तो हमारी बीमारीका हाल सुनके जरूरही आती।

एक अखबार लिये एक नौकरका प्रवेश।

नौकर—डकहवा ई कागद देगया है।

[नौकर गया।

अब्बास—(अखबार थोड़ी दूरतक पढ़ लेनेके बाद एक जगह देखकर अचानकसे) है, यह क्या !

सज्जाद—क्या, क्या ?

अब्बास—नहीं, कुछ नहीं। एक लड़का कूएमें डूबके मर गया, वही पढ़ रहा हूं।

सज्जाद—नहीं, कुछ और बात है। तुम्हारा मुंह देखके मुझे शक होता है। मुझे दो, मैं देख लेता हूं।

अब्बास—नहीं, नहीं, यह आप क्या देखियेगा?

सज्जाद—आः, दो भी। (अब्बासके हाथसे अखबारका छीनके पढ़ना, और मूर्छित होके गिर जाना।)

अब्बास, गुलशन—हाय, हाय, क्या हुआ, यह क्या हुआ!

(मूर्छा दूर करनेका उद्योग।)

गुलशन—(रोके) ए भइया, ए भइया, हाय, हाय, जवाब क्यों नहीं देते? (रोना।)

अब्बास—कोई खौफकी बात नहीं है, कोई खौफकी बात नहीं है। (पङ्खा झलना और आंखपर पानी छिड़कना।)

(सज्जादका आंख खोलना और सुध होआना।)

सज्जाद—भाई, मैंने तो पहलेही कहा था कि सुम्बुल अब इस दुनियामें नहीं है। अगर होती तो जरूर हमारी बीमारीका हाल सुनके आती (रो रोके अखबार पढ़ना।) "कुमेको सुबहके वक्त आठ बजे सुम्बुल नाम एक नौजवान लड़कीकी लाश एक कूएमें मिली है। कातिलोंका अभीतक कोई पता नहीं लगा है। मजिस्ट्रेट साहबने लाश दफन करनेका हुक्म दे दिया।"

गुलशन—(रोके) हाय आपा, मुझे छोड़के कहां चली गई? आपा, छाती फटी जाती है। (रोना।)

सज्जाद—अब्बास, गुलशनको जरा उधर ले जाकर समझाओ बुझाओ। मुझसे यह नहीं देखा जाता।

[अब्बास गुलशनको लेगया।

सज्जाद—(रोरोके) हमारे लिये दुनिया सूनी होगई।—अब यहां रहना फजूल है।—अब मैं मुल्कोंकी सैर करूंगा।—उफ! खुशी इस मकान पर नहीं मिलनेकी। परदेसमें क्या सुम्बुलको भूल जाऊंगा! यह उम्मीद हमारी फजूल है। हाय, हाय, तब क्या करूं। हाय वह अक्लमन्द होशयार नेकमिजाज सुम्बुल कहां चली गई!—सुम्बुल, मैं तुझे प्यार करता था, अपनी जानसे भी जियादे प्यार करता था।—हाय सुम्बुल, कुछ दिन तो और

स०—हां, हां, तो फिर क्या उसका ? जो कहना हो सो जल्दी कहिये।

आ०—ले देखिये, फिर वही जल्दी।

स०—(ठण्डी सांस लेना और आंसू पोंछना।) हमको उसका सारा हाल मालूम होचुका है।

आ०—क्या मालूम हुआ है ?

स०—(वह अख़बार जिसे नौकरने लाके दिया था, उस आदमीके हाथमें देके) लीजिये, देख लीजिये। (आंसू पोंछता है।)

आ०—(पढ़के और ज़रा मुसकुराके) जनाब, यह ख़बर झूठी है। जब कोई ख़बर नहीं मिलती तब अख़बारवाले अक्सर झूठी ख़बरें भी छाप देते हैं।

स०—(घबराके) तो क्या साहब, यह ख़बर झूठी है ? आपको किस तरह मालूम हुआ ?

आ०—मुमकिन है कि झूठ भी न हो। क्योंकि जिसके बारेमें मैं कहता हूं, वह शायद कोई दूसरी सुम्बुल हो।

स०—ऐं साहब, आपने मेरी सुम्बुलको देखा है ? वह क्या अभी तक जिन्दा है ? वह कहां हैं ?

आ०—(उठके) जनाब, मैं रुख़सत होता हूं। मैं इतनी जल्दीमें नहीं कह सकता।

स०—(उसके हाथ थामके) साहब, ज़रा बैठ जाइये। आप जो मांगें वही मैं दूं। पहले इस सवालका जवाब दीजिये कि आपने क्या मेरी सुम्बुलको देखा है ?

आ०—अच्छा, पहले रुपये दीजिये। दो हजार रुपयेका जो आपने इश्तिहार दिलवाया था बिलफ़ेल ख़ैर उसी कदर दें।

स०—इस वक्त तो इतने रुपये नहीं होंगे। आपको क्या इसी वक्त ज़रूरत है ?

आ०—हुज़ूर, मुझे इसी वक्त ज़रूरत है।

स०—ख़ैर तो लीजिये।—रुपये तो इतने नहीं हैं, मगर मैं किसी तर्कीबसे पूरे किये देता हूं। (बक्स खोलकर) यह लीजिये, सोनेकी घड़ी और चेन। इन दोनोंके दाम ८००) रुपये हैं। यह लीजिये एक ५००) का नोट। यह २००) रुपयोंका एक नोट और लीजिये। और यह १३०) रुपयोंके खुदरे नोट हैं। सब मिलाके १६३०) रुपये हुए। यह लीजिये २००) नकद। १८३०) हुए। अब क्या दूं? अब तो यहां कुछ नहीं है। (सोचकर) अच्छा सब्र कीजिये (आलमारीमेंसे एक छोटासा बक्स निकालके) कालेज में जब पढ़ता था तो ये चार तमगे मिले थे। (आह भरके) इन्हें देते जरा अफसोस मालूम होता है।—उं हूं, जब बुल्बुलही नहीं तो फिर इन तमगोंको रखके क्या करूंगा! लीजिये इन चारों तमगोंको भी लीजिये। इन चारोंकी कीमत २००) रुपये हैं। अब तो २०००) रुपयेसे भी ऊपर होगये। अब बतलाइये, बुल्बुल के बारेमें आप क्या जानते हैं?—मगर जो आप कहेंगे, वह सच है या झूठ यह क्योंकर मुझे मालूम होगा?

आ०—अलबत्ते, जो मैं कहूंगा, उसे सच साबित भी कर दूंगा। अगर साबित न कर सका तो अपना रुपया फेर लीजियेगा, और क्या?

स०—ख़ैर तो कहिये।

आदमी—वह जिस दिन आपके यहांसे निकलीं, उस दिन आधीराततक बराबर फिरतही रहीं। आखिरश एक दो बजते बजते किसी शख्सके बागमें पहुँचीं। वहां जाकर क्या देखती हैं कि कई एक आदमी साथ बैठके शराब पीरहे हैं। उनके देखतेही बीबी बुल्बुलने चाहा कि वहांसे भाग जायें मगर उन मतवालोंने देख लिया था। गरज यह कि उन मतवालोंने उनका पीछा किया और उन्हें पकड़ लाये।

सज्जाद—उसके बाद, उसके बाद?

आ०—पकड़ लाकर उन्हें—उन लोगोंने बहुत बुरी बुरी बातें कहीं।

स०—(उठके) जनाब, होचुका, बस होचुका। अब आगे और मैं नहीं सुनना चाहता। उन मतवालोंका ठिकाना बताइये, मैं गुस्सेसे कांप रहा हूं।

आ०—पहले बातें तो सब सुन लीजिये। मतवालोंसे कुछ न बन पड़ा।

स०—(खुश होके) वह उनके हाथसे बच गई थीं ?

आदमी—जी हां, अपने गलेपर छुरी चलाके।

सज्जाद—(बैठके) किस तरह, कैसे—क्या कहा ?

आदमी—उन्होंने फिकरा देकर उन्हीं मतवालोंसे एक छुरी मंगवाई, और गले पर चला ली।

सज्जाद—खुद-कुशी की ? (आह भरके, और आंसू पोंछके) क्यों साहब, फिर अभी आपने क्योंकर कहा था कि वह मरी नहीं हैं ?

आद०—मआज अल्लाह, मैंने कब कहा साहब कि वह मरी नहीं हैं ?

सज्जा०—आपके तर्ज गुफ्तगूसे आपका यही मतलब मालूम होता था।

आद०—इसमें आपका इख्तियार है जैसा जी चाहे "मालूम" कर लीजिये। आप आंखें बन्द करके "मालूम" कीजिये कि सुम्बुल आपके सामने खड़ी हैं, तो क्या कोई आपका हाथ रोकेगा ? खैर साहब, सुम्बुल आपकी कौन होती है ? एक अदना औरतके लिये इतना खर्च और इतनी खोज खबर ! अल्लाहकी पनाह !

स०—(गुस्सा होके) इससे आपको क्या काम ? आप जिस बातके कहनेको आये हैं वही कहिये।

आद०—उन्होंने अपने गलेपर छुरी चला ली।

स०—सुम्बुल इस दुनियासे रुखसत होगई, तो खैर अब उसका हाल सुनके क्या होगा ? (दोनों हाथोंसे मुँह ढांक लेना।)

आद०—लीजिये, आपको फिर यह किसने कहा कि बुल्बुल इस दुनियासे रुखसत होगई ?

सज्जा०—(उठके उस आदमीके दोनों हाथ थामके) जनाब मैं आपके पांओं पड़ता हूं, क्या माजरा है, सच सच बतला दीजिये। मेरे इस सवालका जवाब एकबारगी दीजिये कि वह जीती है या मर गई।

आद०—लीजिये, अब मैं रुखसत होता हूं। मुझसे कोई बात एकबारगी नहीं कही जासकती। मुझे इस तरह बोलनेका मुहावरा नहीं है।

सज्जा०—खैर, जैसा आपको मुहावरा हो वैसाही कहिये। वल्लाह, अब मैं एक लफ्ज भी मुँहसे न निकालूँगा।

आद०—जबकि उन्होंने अपने गलेपर छुरी चला ली, तब उन लतवालोंने उन्हें धर पकड़के एक थानेपर फेकवा दिया। दूसरे रोज खूब तूरके तड़के उसी तरफसे एक बुढ़िया चली जाती थी। उस बुढ़ियाने जो उन्हें बहुत देरतक अच्छी तरह देखा भाला तो मालूम किया कि यह निरी लाशही नहीं है, इसमें अभीतक जान बाकी है। गरज वह बुढ़िया उसे घर लेजाके बहुत हिफाजत और खिदमतसे उसे होशमें लाई। गलेमें जख्म जरा गहरा था, बहुत खूनके निकल जानेसे बेहोशी इतनी देरतक रही।

सज्जा०—भई वल्लह, तुमने वह खुश-खबरी सुनाई हैं कि इस वक्त तुम्हें जो दूं वह थोड़ा है!

आद०—जरा अखीरतक पहले आप सुन लेवें तब मार खाके अगर निकाल न दिया जाऊं तो अपनेको बड़ा खुश-नसीब समझूं। उस बुढ़ियाके अफजल नाम एक खूबसूरत जवान बेटा है। वह आपकी बुल्बुलको देखकर पागल होगया। उमर उसकी कोई २२, २३ एककी होगी। एक रोज अपनी मासे कहने लगा कि "अम्मा, अगर तुम उस लड़कीसे मेरा ब्याह न कर दोगी तो कसम

खुदाकी सैं गलेमें फांसी लगाके मर जाऊंगा। गरज चार नाचार अफजल और अफजलकी माकी जबरदस्तीसे सुम्बुलने अफजलसे ब्याह कर लेना कबूल किया। और हकीकत भी यों है कि जिसने जान बचाई, भला उसकी बात क्योंकर टाली जावे।

स०—तो उससे उनको ब्याह कर लेना मंजूर हुआ?

आ०—नहीं तो क्या मैं आपसे झूठ कह रहा हूं? मुझको भी आपने अखबार समझ लिया, क्यों?

स०—(ठण्डी सांस लेके) ब्याह कब हुआ?

आ०—अभीतक तो नहीं हुआ है।

स०—(खड़े होके) अभीतक नहीं हुआ है? देखो, मैं तुम्हें १०००० रुपये दूंगा, हमारे पास जो कुछ है, मैं सबका सब तुम्हें दे दूंगा, अगर तुम मुझे उनके पास ले चलो, या यह बतादो कि वह कहां हैं?

आ०—(सर हिलाके) यह हमारे इख्तियारसे बाहर है।

स०—(बैठके अफसोसके साथ) क्यों, क्यों?

आ०—लीजिये, पढ़के देख लीजिये। (हाथमें खतका देना।)

स०—अच्छा, यह तो मेरेही नामका खत है, और देखता हूं हर्फ भी उसीके हाथका है। (खतका जल्दी खोलना और पढ़ना।)

"इस खतके लेजानेवालेसे हमारा सारा हाल मालूम कीजियेगा। कुछ खयाल मत कीजियेगा। गुजश्ताके लिये अफसोस करना फ़ुजूल है। एक हफ्तेके अन्दर ब्याह होगा। आज मैं कश्ती पर सवार होके दूसरे गांवको जाती हूँ। किस गांवमें—इसकी खबर इस आदमीको नहीं है। कुसूर मुआफ कीजिये, और जियादे क्या लिखूं?

हमेशेकी कमबख्त

सुम्बुल।"

(आंसू बहाता हुआ) खत नहीं पढ़ता तो अच्छा होता। सुम्बुल तू बड़ी बेरहम है। (नीचे मुँह किये रोना।)

आद०—जनाब, तो मैं आदाब अर्ज करता हूं। देखिये मुझ पर खफा न हूजिये। खबर तो बेशक खराब है, मगर क्या करूं, कहना जरूर था। अगर यह मैं पहलेसे जानता होता कि खतके पढ़नेसे आप इतने उदास होजायेंगे तो वल्लाह खत न देता। खैर तो उ—न रु—प—यों को लेलूं? यों कहिये तो न लूं। आपको गमगीन देखके मेरी आंखें भी भरी आती हैं। मगर बहुत दूरसे चला आता हूं, राहखर्च भी बहुत हुआ है, अगर कुछ मिहरबानी कीजिये तो—

स०—तो इसमें आपका कुसूर क्या है? आप रुपये लेजाइये, सबही लेजाइये। जितनेके लिये इश्तिहार दिलवाया है, उतना तो जरूरही देना पड़ेगा।

आ०—यों आपकी खुशी हो तो उन तमगोंको रख लीजिये, क्योंकि उनके अलग करनेमें आपको जरा अफसोस हुआ था।

स०—(आंख बन्द करके) जी हां, अफसोस तो हुआ था मगर अब नहीं है। (आह भरके) सुम्बुल जीती है, हमारे लिये यही खुश-खबरी है। इस खुश-खबरीके लिये २००० रुपये कुछ बहुत नहीं हैं। अगर उनका आप पता बता दें तो वल्लाह कसम कलामुल्लाहकी इसका चौगुना इनआम दे सकता हूँ।

आ०—मआज अल्लाह मिन्हा, एक औरतका इतना दाम! आप अमीर हैं; आपको सब छजता है। अच्छा साहब, सुम्बुलसे भी जियादा खूबसूरत और अक्लमन्द लड़की जो ला दूँ तो क्या आप ८००० देंगे? क्यों नहीं देंगे, आपको तो और अच्छाई है; पुरानी चीजके बदले नई चीज मिलती है।

सज्जाद—(गुस्से से) लालची, गुनहगार, तू अपनासा सबको समझता है? सारे जहानकी सब औरतोंको जमा कर तब भी सुम्बुलकी बराबरी कोई नहीं कर सकेगी। (चित्तको स्थिर करके)

जाओ, रुपये ले जाओ। देखो मुझे गुस्सा न दिलाओ। (जीमें) इतना खफा होना लाजिम न था। उसकी आंखें डबडबा आईं। (आदमीका हाथ थामके) भई देखो कुछ खयाल न करना। गुस्से में बहुत कुछ भला बुरा मुंहसे निकल गया है। मैं सुम्बुलको कितना चाहता था, और अबभी कितना चाहता हूं, वह तुम नहीं समझ सकते हो। (आंसूका पोंछना।)

आदमी—(आंसू पोंछके) जी, मैं तो एक गरीब आदमी हूं, जो जीमें आवे, सो कह लीजिये। मैं क्या कहूंगा। तो खैर अब जाता हूं। (जाना चाहता है) लाहौलवलाकूवत, अच्छी याद आ गई। उन्होंने एक चिट्ठी और दी है देखिये तो। (चिट्ठीका देना।)

स०—एक चिट्ठी और! (आह भरके) नहीं, अब इसे नहीं पढूंगा। इतनी हिम्मत नहीं होती। इसमें न मालूम कौनसी और बुरी खबर है।

आदमी—"हाथ कङ्गनको आरसी क्या?" पढ़के देखही लीजिये।

सज्जाद—खै—र (चिट्ठी पढ़ता है।)

"प्यारे सज्जाद, मैं तुम्हारी हूं। तुम्हारे सिवा और किसीको नहीं जानती। मैं अब जल्दीही जाऊंगी। अब कुछ पर्वा नहीं। अब्बास और गुलशन कैसे हैं?"

तुम्हारी सुम्बुल।

(मुँह नीचा करके) हमारा सर घूम रहा है—मुझे कुछ भी समझ नहीं पड़ता। मैं जागता हूं, या सोता हूं।

आ०—(आवाज बदलके) जनाब, तो मैं अब रुखसत होता हूं। आपने तो मुझे निकालही दिया था।

सज्जा०—(आदमीके मुँहकी तरफ एकबार देखके) है है मैं क्या खब्त होगया हूं? हैं, यह क्या माजरा है! हमने अभी सुम्बुलकी आवाज कहां सुनी?

(आदमीका भेस बदलना, और बुल्बुल होजाना।)

बुल्बुल—(मुसकुराके) जनाब, तो मैं अब जाती हूं।

सज्जाद—हैं, फिर वही आवाज! (मुँह उठाके) यह क्या? (बुल्बुलको दोनों बाजुओंसे लपटाके) जादूगरनी, बेरहम, बेदर्द! (रोता है।)

बुल्बुल—(जोरसे रोके) सज्जाद, प्यारे सज्जाद, मैं तुम्हारीही हूँ, प्यारे।

सज्जाद—फिर उस वक्तसे इस तरह उठा बिठा क्यों रही थीं, बुल्बुल?

बुल्बुल—लो, मैंने किस वक्त उठाया बिठाया?

सज्जा०—क्यों उस वक्तसे यह क्या होरहा था? कभी उम्मीद दे देके बहिश्त तक चढ़ा देती, और कभी मायूस करके दोजखमें पटक देती और फिर कभी गुस्सेसे अन्धा बना देती। (बुल्बुलका हाथ पकड़के) बुल्बुल, नावाकफियतमें मैं खफा हुआ था, तुम्हें क्या उसका रंज है?

बुल्बुल—(हंसके) हुँ-उ, खूब।

सज्जाद—तब रोई थी क्यों?

बु०—तुम हमें इतना प्यार करते हो यह जान करके।

स०—उसके बाद फिर तुमने मुझे क्यों इतना सताया? जाओ तुमसे मैं नहीं बोलूंगा।

बु०—(हंसती हुई खड़ी होके) न बोलोगे, न बोलो, मेरी बलासे। जाती हूं, उसी अफजलसे व्याह कर लेती हूं।

स०—(बुल्बुलको पास बिठाके, हंसता हुआ) सुबहानअल्लाह बातें बनाना तो खूब सीख आई हो? खैर यह तो बताओ कि तुमने यह जो बन्दिश बांधी थी, उसमें कौन कौन बातें सच थी, और कौन कौन झूठ?

बुल्बुल—वह बुढ़िया हमें उठाके ले आई, और उसने बड़ी खबरदारीसे हमारी हिफाजत की, इतना तो सच है, और उसके

अफजल नाम न कोई लड़का है, और (शर्माके) न कभी उसने मुझसे शादी करनी चाही।

स०—(प्यारसे) तुम्हारे लिये कैसी कैसी तकलीफें उठाईं, तुम्हें कितना ढुँढ़वाया, और आप भी ढूंढ़ा, पर तुम न मिलीं। सुम्बुल, तुम कहां थीं? तुम क्यों नहीं आती थीं?

सुम्बु०—(रोके) सज्जाद, बेवकूफीकी वजहसे कुसूर हुआ, मुआफ करो। तुम्हें ऐसी तकलीफें उठानी पड़ी थीं, मुझे मुतलक मालूम न था। उसी बुढ़ियाके मकानमें मैं थी कि हकीमने जिस कागजसे दवाकी पुड़िया बांधके भेजी थी वह अखबारका एक टुकड़ा था। इत्तिफाकन उसमें तुम्हारा इश्तिहार मैंने देखा। उस इश्तिहारको देखके मुझसे न रहा गया। उसी वक्तकी उठी उठी बराबर चली आती हूं।

सज्जा०—फिर मर्दके भेसमें क्यों आई?

सुम्बुल—उसी बुढ़ियाकी सलाहसे।—और कुछ अपनी राय भी ऐसीही हुई।

सज्जा०—तो फिर यहां आके यह ढकोसला क्यों फैलाया?

सुम्बु०—सिर्फ तुम्हारे दिलका इम्तिहान लेनेके लिये, अगर तुम्हारे दिलको किसी और तरहका पाती तो लौट जाती।

सज्जा०—खैर तो अब इम्तिहान लेलिया न? या फिर भी कभी भाग जाओगी?

सुम्बु०—देखना, आजही भागती हूं।—भेस बदलके आनेकी यह भी एक वजह थी कि मैंने सोचा कि खुदा नखास्ते अगर तुम सचमुच बीमार हो, तो हमारे एकबारगी आजानेकी खुश-खबरी सुनके मुमकिन है कि बीमारी बढ़ जावे। (मुसकुराके) खैर तो अब इस बातको जाने दो, यह बताओ कि खुश-खबरीके सुनानेसे चौगुना इनआम देंगे, जो तुमने कहा था सो अब क्या देते हो, दो।

सज्जाद—(प्यारसे सुम्बुलका हाथ पकड़के) सुम्बुल, खुश-खबरीके सुनानेके लिये मैंने चौगुना देना मंजूर किया था न कि

तुम्हें पानेके लिये। सुम्बुल, तुम तो हमारीही हो, फिर अपनी चीज भी कोई कीमत देके खरीदता है ?

सुम्बुल—(नेपथ्यकी तरफ देखके) गुलशन आती है, तुम जरा चुपचाप बैठे रहो, देखें क्या करती हैं ! (सुम्बुलका एक तरफ बैठजाना।)

गुलशन—भइया, दीवानजीसे कहला भेजा है कि आपा जीती हैं और उनका हाल सुनानेके लिये तुम्हारे पास एक आदमी भी आया है। उस आदमीने क्या क्या कहा, भइया ?

सज्जाद—बहुत बुरा हाल है। यह औरत भी वहींसे आई है। उसीसे सब पूछ लो।

गुल०—(सुम्बुलके पास जाके) क्या बी, आपाकी क्या खबर—(आधी जीभ मुँहके बाहर और आधी अन्दर करके तअज्जुबसे) हैं, यह क्या ? यही आपा हैं। आपा, मुझे पकड़ो, मुझे पकड़ो, हमारा सर घूम रहा है। (सुम्बुलका पास आना, और गुलशनका उसके गलेमें लपट जाना) तुम इतने दिनोंतक कहां थीं, आपा ? हाय, हाय, हमलोग रोते रोते अन्धे न होगये यही तअज्जुब समझो। मैं तेरी छोटी बहन हूं, मुझे छोड़ते तुम्हें जरा मया न आई ? (रोना।)

सुम्बुल—(गुलशनका हाथ पकड़के) बहन, अब जियादे न शर्माओ। जो हुआ सो हुआ। कसम अल्लाहकी, अब ऐसा हरगिज न करूंगी।

गुलशन—ऐसा करोगी तो अब करने कौन देता है ? अब मैं तुम्हें अपनी आंखोंमें रखूंगी। देखो मैं तुम्हें जञ्जीरसे बांधके रखूंगी।

सुम्बुल—(सज्जादकी तरफ एकबार देखके अस्फुट स्वरसे) अब तुम्हारे बांधनेकी जरूरत नहीं। जञ्जीर तो पैरोंमें पड़ चुकी।

गुलशन—(खुश होके) वल्लाह, सच कहो। (फिर सुम्बुलके बदनसे लपटना।) जाऊं सबको खुश-खबरी सुना आऊं।

सुम्बुल—(मुसकुराके) सबको, यानी अब्बासको ।

सज्जाद—तुम्हें क्योंकर मालूम हुआ ?

सुम्बुल—मुझे मालूम है ।

[अब्बासके साथ गुलशनका प्रवेश ।]

अब्बास—आदाब अर्ज है, भाभी साहबा, फिदवीको पहचानती हैं ? (झुकाके सलाम करना ।)

सुम्बुल—(अब्बासके पास जाके, और उसका हाथ थामके) भाई अब्बास, तुम्हारे पांव पड़ती हूं, मुझे अब जियादा न शर्माओ । अपने कियेपर मुझे खुद इतनी शर्म है कि भर आंख किसीको देखती तक नहीं ।

अब्बास—देखो, नाहक तुमने खुद भी तकलीफ उठाई होगी, और हमलोगोंको भी तकलीफ दी । (तअज्जुबसे) जो एक बात अभी सुनी वह कब होगी ?

[सुम्बुलने लाजसे सिर नीचा कर लिया ।)

सज्जाद—(मुसकुराके) उस बारेमें हम तुम दोनों मिलके आज सलाह करेंगे ।

गुलशन—ऐ आपा, तुमसे एक बात पूछनी है, यानी तुम्हें तो मैं 'आपा' 'आपा' कहती हूँ, और सब—

सुम्बुल—अच्छा ठैरो, देखो, अभी मैं तुम्हारा मुँह बन्द करती हूं । (सज्जादसे एक तरफ कानमें सलाह करना ।)

सज्जाद—(खुश होके) अच्छा अच्छा । (अब्बास और गुलशनका हाथ मिलाके) भाई अब्बास, गुलशनको मैंने तुम्हारे सुपुर्द किया । देखो, आप भी खुश रहना, और इसे भी खुश रखना ।

सुम्बुल—(मुसकुराके) अच्छा, गुलशन, अब सच तो कहो कि तुम्हारे मन लायक मियां मिला या नहीं ?—वाह वाह चुप क्यों रह गई, जवाब क्यों नहीं देतीं ?

अब्बास—आप लोग देखें, मैं एक तमाशा दिखलाता हूं ।

[अब्बासका दो एक कुर्सियां और एक मेज लिवा लाना ।]

अब्बास—(एक कुर्सीपर खड़े होके) मैं एक जवाब-मजमून पढ़ता हूं, आपलोग सुनें। (पढ़ना) "बाजे बेवकूफ समझते हैं कि खालिस इश्क गोया खानये-खुशी है, बल्कि जीनये-मजहब।" "इश्क इन्सानकी इन्सानियतको गायब कर देता है, खुदाने जिन हवासोंको इन्सानके दिलमें मुल्ककी भलाईके लिये पैदा किया है, उन्हें और........हुब्बे-वतनको तो एक बारगी इन्सानके दिलसे नेस्तोनाबूदही कर छोड़ता है।..............जियादे और क्या कहें, इन्सान जिसे खुदाने अशरफुल-मखलूकात पैदा किया है........" (सज्जाद किताब छीन लेता है।) खैर ले लिया तो वलासे, मुझे सब अरजबां है। "उसे यह इश्क हैवानसे भी बदतर बना छोड़ता है। जिस इश्कके ऐसे बुरे बुरे नतीजे हैं वह इश्क क्या मैं आपही लोगोंसे सवाल करता हूँ क्या कभी खानये-खुशी या जीनये-मजहब हो सकता है?" (कुर्सीपरसे उतरना।) मैंने कैसा अच्छा लेक्चर दिया, पर किसीने जरा ताली तक न बजाई?

सुम्बुल—अब्बास, यह कौनसी किताब है, भाई?

अब्बास—किताब नहीं है, एक लेक्चर है।

सुम्बुल—किसका लेक्चर है, भाई?

अब्बास—(सज्जादको उंगलीसे दिखाके) उन्हींसे पूछो, किसका लेक्चर है।

सज्जाद—(शर्माके) वह हमाराही लेक्चर है। जब लड़के शुरू कालेजसे निकलते हैं तो इस तरहकी बेवकूफियां अक्सर किया करते हैं। जब दुनियासे काम पड़ता है, तो मजा मालूम होता है।

सुम्बुल—तुम्हारी अब क्या राय है।

सज्जाद—अब जैसी राय है उसका सबूत तुम आप बैठी हो।

समाप्त।